अघोरानंद और जटाधारी वैशाली

अनिल शेखर "अमस"

पूर्वपीठिका

॥ श्री सदगुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥

सभी पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन ....
तंत्र साधनाएं और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है,उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ .....
यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी .....
मेरी इस कथा का नायक ,मैं , यानि "अघोरानंद", एक गृहस्थ है । जो शासकीय सेवा में था और छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग नामक शहर में रहता था । मेरी पत्नी का युवावस्था में ही देहांत हो गया । उसके देहांत के बाद मैं बेहद अकेला पड़ गया । कुछ समय बाद मेरे जीवन में अजीब अजीब सी घटनाएं घटी । मेरे गुरु ने मुझे अघोर दीक्षा प्रदान की और मुझे अघोरानंद नाम दिया । जिसके बाद मेरा साधनात्मक जीवन प्रारंभ हुआ । साधनात्मक जीवन में मुझे अलग-अलग प्रकार के अनुभव मिले । जिसमें कई बातें ऐसी हैं ....जो नहीं लिखी जा सकती ! और कई बातें ऐसी हैं ..... जो अविश्वसनीय है । बहुत सारी बातें ऐसी हैं.... जो बेहद

रोमांचक हैं ! जिसे पढ़ने में आपको आनंद भी आएगा । ऐसी ही कुछ घटनाओं को गुरु के आशीर्वाद से ! भगवती महानील सरस्वती की कृपा से ! शब्द श्रंखला में बांधने का प्रयास किया है जो आपको पसंद आएगा ।

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है , इसलिए इसके किसी भाग का अनुकरण करने की कोशिश न करें क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

साधनाओं का क्षेत्र गुरु गम्य माना गया है इसलिए इस क्षेत्र में कुशल गुरु के मार्गदर्शन में ही उतरें , अन्यथा आपको नुक्सान हो सकता है ।

अंत में .....यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गयी एक रचना है ....

उसका आनंद लें ...

अनिल शेखर “अमस”

anilshekhar.amas@gmail.com

अघोरानंद और जटाधारी वैशाली

मेरी अन्य कथाओं की तरह ही इसे भी एक काल्पनिक कथा के रूप में आप पढ़ें तथा इसका आनंद लें ।

यह कहानी बाबा भोलेनाथ के एक भक्त की है । जो मैं आपके सामने कथा के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूं ।

आइए आपको कथानक की ओर लिए चलता हूं....

यह छत्तीसगढ़ में दुर्ग जिले के एक गांव की कहानी है ।

गांव का नाम है विशालपुर ।

गांव में एक मराठी परिवार रहता है। वामन राव का, जिसके पास अपनी थोड़ी सी जमीन है । जिस पर खेती करके वह अपना परिवार चला रहा है । छत्तीसगढ़ में उस समय अधिकांश खेती मानसून की वर्षा पर निर्भर करती थी । नहरों की व्यवस्था इतनी अच्छी नहीं थी कि छोटे छोटे किसान भी दो फसल का लाभ ले सके । इसलिए बड़ी मुश्किल से ले देकर वामन राव का गुजारा हो रहा था । वामन राव एक सीधा साधा और सज्जन किस्म का आदमी था । गांव में रहकर खेती करने के बाद बाकी समय में शहर जाकर मजदूरी भी कर लिया करता था । उसके यहां एक बेटी ने जन्म लिया !

पत्नी माधवी ने उसका नाम रखा वैशाली....
वैशाली बचपन से ही भगवान शिव की भक्त थी ।

वैशाली बचपन से ही पढ़ने लिखने में बहुत तेज थी ।
प्राइमरी स्कूल के अध्यापक उसकी प्रतिभा को
देखकर हमेशा वामन राव को उसे आगे पढ़ाने के लिए
प्रोत्साहित करते रहते !
सरकारी स्कूलों के बारे में हमेशा गलत कहा जाता है,
लेकिन मेरा व्यक्तिगत अनुभव यह है कि सरकारी स्कूल
के अध्यापकों में से भी एक बड़ी संख्या ऐसे अध्यापकों
की है जो अपने बच्चों को अच्छे मुकाम पर पहुंचते हुए
देखना चाहते हैं । उनके सुखद भविष्य की कामना करते
हुए उनको बेहतर रास्ता दिखाने की कोशिश जरूर करते
हैं । विशेष रूप से छोटे गांव के स्कूलों में अध्यापकों का
योगदान बेहद सराहनीय रहता है ।
विशालपुर के स्कूल के शिक्षक भी वैसे ही थे । वे बार-
बार वामन राव को वैशाली को आगे पढ़ाने के लिए कह
रहे थे । उनकी बातें सुनकर वामन राव के मन में भी
वैशाली को आगे पढ़ाने का विचार जोर पकड़ता गया ।

हाई स्कूल के बाद आगे की पढ़ाई के लिए गांव में किसी प्रकार की व्यवस्था नहीं थी । ऐसी स्थिति में वामन राव ने रायपुर में रहने वाली अपनी बहन पंकजा के पास बिटिया को भेजने का मन बनाया । वैशाली मां-बाप की इकलौती और लाड़ली बेटी थी ।
इसलिए उसे जाने की इच्छा नहीं थी !
मां-बाप को भेजने की इच्छा नहीं थी !!
लेकिन आगे पढ़ने के लिए जाना जरूरी था ।
काफी जद्दोजहद के बाद यह तय हुआ कि कॉलेज की पढ़ाई करने के लिए वैशाली पंकजा के पास जाएगी ।
पंकजा के पति का नाम था गोपीनाथ ।
पंकजा का एक ही बेटा था माधवराव । माधवराव वैशाली से 4 साल बड़ा था । गोपीनाथ रेलवे में काम करता था और काउंटर क्लर्क था । टिकट दलालों का घर में आना जाना लगा रहता था ।
आप लोग भी जानते होंगे कि रेलवे में टिकट रिजर्वेशन के काम में गोरखधंधा चलता था । रेलवे टिकट के रिजर्वेशन के लिए यात्री द्वारा काउंटर में फार्म भर कर दिया जाता है । जिसके आधार पर रेलवे टिकट बंता है ।

दलाल अपने भरे हुए फार्म गोपीनाथ को घर में दे दिया करते थे और गोपीनाथ उनका रिजर्वेशन कराकर टिकट घर ले आता था । जिसे लेने के लिए अक्सर वे शाम को घर पर आते थे । साथ में खाने पीने की व्यवस्था भी लाते थे ।

गोपीनाथ इसका मजा ले रहा था ....
पंकजा को भी आपत्ति नहीं थी , क्योंकि भरपूर पैसा था .... किसी प्रकार की कोई कमी नहीं थी ।
हां !
लड़के को लेकर उसे थोड़ी चिंता अवश्य थी । बारहवीं पास करने के बाद माधवराव लफंगई में अपना ज्यादा समय बिताता था ।
घर में काले पैसे की कमी नहीं थी !
इकलौता लड़का था !
जब भी अवैध रूप से पैसे का आगमन चालू होता है तो परिवार के अंदर परिवार के सदस्यों का स्वाभाविक रूप से इस प्रकार की गतिविधियों में शामिल होना चालू हो जाता है ।

इसे अलक्ष्मी कहा जाता है जो धीरे धीरे उस खानदान को समाप्त कर देती है ,,,,

किसी प्रकार की नशे की लत !
कोई असाध्य बीमारी !
बार बार एक्सीडेंट !
सदस्यों की अकाल मृत्यु ....
जैसी घटनाओं के द्वारा धीरे धीरे वह परिवार विनाश की ओर बढ़ता जाता है .....
ज्यादा से ज्यादा तीन पीढ़ी .... उसके बाद ....

गोपीनाथ के पास जो भी पैसा आता था इसका एक बड़ा हिस्सा पंकजा सोना खरीद कर रखती थी । बैंक में रखना खतरे से खाली नहीं था !
मकान खरीदो या जमीन वह दिख जाती है !
दिख जाये तो सरकारी नौकरी पर खतरा.....
इसलिए सोना खरीदना गोपीनाथ भी ज्यादा सेफ मानता था ।
इस प्रकार से उनकी दुनिया चल रही थी ।

वामन राव को पंकजा ने कई बार मदद की पेशकश की लेकिन उसने मना कर दिया । हाँ वह कभी कभी जब शहर आता तो धान या अन्य उपज छोड़ जाता । जिसके बदले मे पंकजा से वह पैसे भी नहीं लेता था । इसलिए पंकजा ने वैशाली को अपने पास रखने के लिए तुरंत सहमति दे दी ।

बारहवीं पास करने के बाद वैशाली अपनी बुआ के पास चली गयी ....
उस समय उसकी उम्र लगभग 18 वर्ष की थी । पंकजा ने उसका कॉलेज में एडमिशन करा लिया ।
वैशाली के आने से पंकजा को भी काफी मदद हो गई । वैशाली घर के कामकाज में दक्ष थी । वह अपनी तरफ से ज्यादा से ज्यादा काम पूरा करके कॉलेज जाने की कोशिश करती थी ।

सब अच्छी तरह से चल रहा था । वैशाली को गांव से शहर में एडजस्ट होने में थोड़ी सी दिक्कत हुई लेकिन धीरे-धीरे सब ठीक होता चला गया । पढ़ाई में अच्छी थी ! इसलिए कॉलेज के अध्यापक भी उसका विशेष ध्यान रखते ।

उसे भाषण देने और वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेने का भी शौक था । कॉलेज में आने के बाद उसे इस प्रकार के अनेक अवसर मिले । जिसके चलते वह कॉलेज के विद्यार्थियों के बीच काफी लोकप्रिय हो गई ।

उम्र का तकाजा और कॉलेज की परिस्थितियां ऐसी होती है कि आपस में एक दूसरे से प्रेम का इजहार , लव लेटर का आदान-प्रदान आदि हुआ करते थे । वैशाली इन सब से दूरी बनाकर रखने की भरपूर कोशिश करती थी । काफी लड़के उसे अप्रोच करने की कोशिश करते लेकिन उसने अपनी इमेज ऐसी बना कर रखी थी कि आमतौर पर कोई उससे हल्की बात करने से डरता था । खासतौर से अध्यापकों से जो निकटता थी इसके चलते अन्य विद्यार्थी उसके साथ गलत व्यवहार करने से भी घबराते थे ।

कुल मिलाकर सब कुछ सामान्य चल रहा था । समय मिल जाता था तो थोड़ा बहुत भगवान शिव के पास पंचाक्षरी मंत्र "ओम नमः शिवाय" का जाप भी वह कर लिया करती थी । अपने शंकर भगवान की फोटो को

वह गांव से लेकर आई थी जो उसके बचपन के साथी थे । दिन भर हुई घटनाओं और बातों की जानकारी वह उनके साथ शेयर किया करती थी ।

इष्ट के साथ आत्मीयता के अनेक स्वरूप है उसमें से एक यह भी है ।

प्रसंग है कि भक्त शिरोमणि मीराबाई जब छोटी थी तब उसने एक विवाह दिखा और बाल सुलभ चंचलता से पूछ लिया - मेरा वर कौन है ?

मां ने कहा - बड़ी हो जाएगी तो ढूंढ देंगे ।

बच्ची बाल सुलभ जिद पर अड़ गई - मुझे मेरा वर अभी चाहिए ।
मां ने समझाने की काफी कोशिश की लेकिन बच्ची नहीं मानी !
आखिर में उसे मनाने के लिए मां ने कृष्ण भगवान की मूर्ति उनके हाथ में दे दी और कहा - यही है तेरा वर !
मीराबाई मान गई !

भगवान कृष्ण को अपना पति मान लिया और धीरे-धीरे उसमें इतनी रम गई कि सारी दुनिया भूल गई !
बाकी कहानी आप लोग जानते हैं ....
इसलिए उसके विस्तार पर नहीं जाऊंगा !

अंत समय में मीरा कृष्ण मे इतनी लीन हो गई कि स्वयं कृष्ण भगवान की मूर्ति के अंदर ही समा गई ।

इस प्रकार की भक्ति में भगवान को भक्त एक मानव रूप में ही देखना चालू कर लेता है । उसके साथ अपना एक आत्मीय संबंध बना लेता है ।

भगवान तो भाव के भूखे हैं !

जैसे-जैसे भाव की तीव्रता बढ़ती जाती है भक्तों को भगवान के अस्तित्व का आभास भी होने लगता है !

कुछ ऐसी ही भक्ति वैशाली भी करती थी ....

भगवान शिव उसके बेस्ट फ्रेंड थे ।
बचपन से ही अपनी हर बात वह उनके साथ शेयर किया करती ।

उसे ऐसा लगता था कि भगवान उसकी बात को बराबर सुनते हैं ।

यह प्रक्रम अब भी चालू था !

कॉलेज से आने के बाद वहां घटी घटनाओं के बारे में वह ज़रुर उन्हे बताती ।

सब कुछ बढ़िया चल रहा था । पढ़ाई और एग्जाम की तैयारी दोनों बहुत अच्छी तरह से चल रही थी ।

माधवराव और वैशाली का कमरा अगल-बगल था ।

कभी कभार दोनों बोलचाल लिया करते थे ।

उसकी आदतों को देखते हुए वैशाली कम से कम बातचीत करने की कोशिश करती थी ।

धीरे धीरे लगभग 2 साल बीत गए ।

अब वैशाली फाइनल ईयर में आ चुकी थी । उसके साथ साथ वह पीएससी की तैयारी कर रही थी ।

कॉलेज का समय 9 से 4 तक का था और उसके बाद शाम को 6 से 7 पीएससी की कोचिंग के लिए जाती थी ।

कोचिंग की क्लास लगभग 2 किलोमीटर दूर थी , आने जाने के लिए साईकिल का उपयोग करती । उस दिन जब वह घर वापस लौटी तो 8:30 हो चुके थे । खाना खाकर वह अपने कमरे में आ गई ।

नीचे दलाल और गोपीनाथ जी की महफिल चल रही थी ।
पंकजा भी कभी-कभार एकाध पेग ले लिया करती थी ।
उस दिन भी वैसा ही हुआ ।
लगभग 10 बजे तक महफ़िल खत्म हो चुकी थी ।
पंकजा और गोपीनाथ दोनों नशे की हालत में थे ।
वैशाली अपने कमरे में थी !
वह कोशिश करती कि जब तक दलाल घर पर मौजूद है, तब तक नीचे की मंजिल पर न जाये ! उनसे सामना ना होना पड़े !
वह उसे बेहद अजीब नजरों से घूरा करते !
जैसे आंखों से ही सब कुछ कर लेना चाहते हैं ।

पुरुष की मानसिकता बड़ी अजीब होती है । वह हर स्त्री को एक शरीर की तरह ही देखता है । पुरुष की

शारीरिक क्षमता इस प्रकार की है कि वह अपने पूर्ण यौवन वाले समय में भी एक दिन मे ज्यादा से ज्यादा तीन या चार बार ही संबंध बना सकता है ।
लेकिन दिन भर में अगर उसे सौ स्त्रियां दिख जाए तो भी उनमें से हर किसी को वह उसी नजर से देखता है ।
दिलचस्प बात यह है कि इसमें 16 से लेकर 60 वर्ष तक के पुरुष शामिल हैं और उनमें से अधिकांश की नजर भी ऐसी ही होती है ।
यह शायद मेन्यूफ़ेक्चरिंग डिफ़ेक्ट है .....
खैर ....
इससे बचने के लिए वैशाली अपने कमरे में ही रहा करती थी .....
नशे का खुमार बढ़ा और उसके बाद गोपीनाथ की वासना भी प्रबल हो गई । पंकजा भी नशे में थी ।
नशा जब चढ़ जाता है तो वह सबसे पहले विवेक को नष्ट करता है । सही गलत की पहचान को समाप्त करता है । दोनों बेडरूम तक तो पहुंच गए लेकिन दरवाजा बंद करना भूल गए और सहवास में लिप्त हो गए ।

माधवराव अपने दोस्तों के साथ महफिल सजा कर वापस लौटा । इंटरलॉक की एक चाबी उसके पास भी हुआ करती । इसलिए वह आराम से ताला खोलकर अंदर दाखिल हो गया ।

महफिल के निशान मौजूद थे और ड्राइंग रूम में शराब की बोतल खुली हुई रखी थी । वासना के ज्वार में गोपीनाथ उसे हटाना भूल गए थे ।

माधवराव ने इधर उधर देखा कोई दिखाई नहीं दिया । झटपट एक लार्ज पेग बनाया और उसे अंदर कर लिया ...

तभी उसे सिसकारियों की आवाज सुनाई दी ...
वह मामला समझ गया और ऊपर जाने के लिए सीढ़ियों की तरफ बढ़ा।
बेड रूम रास्ते में पडता था ।
दरवाजा पूरी तरह से खुला हुआ था और अंदर पंकजा और गोपीनाथ का कार्यक्रम चल रहा था ।

माधवराव युवा था !

ऊपर से नशा !

वह भी सामान्य से ज्यादा !

उस दृश्य ने उसके अंदर तूफान पैदा कर दिया ।

वह अपने कमरे में पहुंचकर अपने बिस्तर पर लेट गया ।

नींद आंखों से कोसों दूर थी ।

बिस्तर पर करवटें बदलता वह लेटा था ....

मन के अंदर वासना हिलोरे ले रही थी ।

रात के लगभग 11 बजे थे !

तभी .....

बाथरूम से पानी गिरने की आवाज आई ।

रोज की तरह वैशाली सोने से पहले नहा रही थी ।

माधवराव के मन में कभी भी वैशाली के प्रति इस प्रकार का भाव नहीं आया था लेकिन आज की बात कुछ और थी ।

काफी देर तक वह अपने आप को रोकता रहा लेकिन फिर उठकर वैशाली के कमरे की तरफ बढ़ा ।

रात के 11 बज गए थे इसलिए वैशाली निश्चिंत थी कि सब सो गए होंगे ।

उसे पता नहीं था कि उसके साथ क्या होने वाला है ।
नहाने के बाद तोलिया लपेटकर वह बाहर निकल आई ....

वह भौचक्की रह गयी .....
कमरे में माधवराव खड़ा हुआ था ।
वैशाली को इस रूप में देखकर माधवराव से रहा नहीं गया .....
उसने एक झटके में तौलिये को निकालकर फेंका और उसके बाद उसने वैशाली को जी भर के भोगा ।

फिर वह अपने कमरे में चला गया ॥
वैशाली अपने बिस्तर पर पड़ी पड़ी अपनी किस्मत को रोती रही....
लेकिन....
जो होना था वह तो हो चुका था ।
अगले दिन ...
वैशाली दिनभर गुमसुम रही !
उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कहें ?
और क्या करें ?

माधवराव ने जो करना था वह तो कर लिया लेकिन उसके बाद डर के मारे वह भी सुबह से देर रात तक गायब रहा ।

दो-तीन दिन गुजर गए ....
वैशाली ने संकोच वश पंकजा से कुछ नहीं कहा ।

माधवराव को भी यह बात समझ में आ गई इससे उसका हौसला और बढ़ गया ।

अब जब भी उसे मौका मिलता ! वह वैशाली को पकड़ लेता । वैशाली के पास बताने के लिए कोई भी नहीं था । वह दिन रात चिंता मे घुलने लगी ।

इस चक्कर में उसके सेमेस्टर में नंबर भी काफी कम आए ।
अध्यापकों को भी समझ में नहीं आया कि इसे क्या हो गया है । उन्होंने भी उसे काफी समझाइश दी लेकिन वह अपना दर्द किसी को नहीं बता पाई ।

आखिरकार उसने भगवान शिव के सामने गुहार लगाई ।
दिसंबर का महीना चल रहा था ।

चार महीने के बाद परीक्षाएं चालू होने वाली थी ।
दिसंबर आखिरी होते होते अचानक वैशाली के सिर में जटाएं बनने लगी ।
आप लोगों ने भी कई साधुओं के सिर पर इस प्रकार की जटाएं देखी होंगी ।
बाल इसमें आपस में चिपक कर मोटे मोटे रस्सों की तरह हो जाते हैं !
इन्हें जटाएं कहते हैं ।

महाराष्ट्र में जिस समाज से पंकजा और वामन राव संबंध रखते थे वहां पर इसे भगवान का आशीर्वाद माना जाता था ।
जिसके सिर पर जटा आ जाती ! उसे भगवान शिव को समर्पित मान लिया जाता था । उसे सम्मान तथा श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता था । उसका अपमान भगवान शिव का अपमान होता है । इससे भगवान शिव का श्राप लगता है ! ऐसी मान्यता है ।

पंकजा ने जब वैशाली के सिर पर जटाएं देखी तो उसने पंकजा को रोज धूपबत्ती दिखाना चालू कर दिया ।

इस कार्य में गोपीनाथ और माधवराव को भी शामिल होना पड़ता था । भगवान के नाम पर सभी डरते हैं ! इसलिए अब माधवराव ने भी वैशाली को हाथ लगाना बंद कर दिया ।
एक प्रकार से महादेव ने अपने भक्त को बचाने की व्यवस्था कर दी ! ऐसा हम सोच सकते हैं ।
इस सब से वैशाली बहुत ज्यादा प्रभावित हुई और भगवान शिव के प्रति उसकी आस्था भी दुगनी हो गई । उन्होंने एक ऐसे संकट से उसे बचा लिया था , जिसके विषय में वह किसी को कुछ भी नहीं बता पा रही थी । बुआ के एहसान और परिवार का मामला होने की वजह से अपने सीने पर बोझ ले कर चल रही थी ।

जब परिस्थितियां सामान्य हो गई तो वैशाली ने भगवान शिव की आराधना भी पूरे जोरों से प्रारंभ कर दी और साथ ही अपनी पढ़ाई भी दोगुने जोश से करने लगी । अब उसका विचार था कि किसी भी तरह से परीक्षा देकर गांव लौट जाना है । ताकि इन सब से पिंड छूटे.....

तीन महीने उसने ताबड़तोड़ मेहनत की और परीक्षा देकर गांव लौट गई ।
इस बीच उसकी पीएससी की परीक्षाएं भी थी वह भी उसने पूरी तैयारी के साथ दी ।

गांव में लौटने के बाद गांव वालों ने भी उसका सम्मान करना प्रारंभ कर दिया । गाँव मे भी सिर पर जटा आने का मतलब भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त होना माना जाता था । वैशाली को यह सब बहुत सुखद नहीं लगता था लेकिन उसके पास कोई ऑप्शन नहीं था । अब घर में भी माता-पिता उसे धूपबत्ती दिखाया करते थे । सभी लोग उससे काफी सम्मान से बात करते ।

परीक्षा का रिजल्ट आया ....
वह यूनिवर्सिटी में चौथे नंबर पर आई ।
यह सभी के लिए बेहद खुशी की बात थी ।

उससे भी ज्यादा खुशी तब हुई जब पीएससी का रिजल्ट आया और वैशाली का सिलेक्शन महिला एवं बाल विकास अधिकारी के पद पर हो गया .....

सिर की जटाओं की वजह से उसकी गिनती आम लोगों में नहीं होती थी ।
सभी लोग उसे एक अलग ही निगाह से देखते थे ।

जब सारे लोग आपको किसी दूसरे प्रकार का प्राणी मानकर देखने लगे तो अजीब लगने लगता है ।

वैशाली के पास कोई दूसरा मार्ग भी नहीं था क्योंकि सिर की जटाएं वैसी की वैसी बनी हुई थी ।

उसकी भगवान शिव के प्रति श्रद्धा में दिनोंदिन बढ़ोतरी होती जा रही थी ।
वह कई घंटे भगवान शिव की पूजा आराधना में लगी रहती और बाकी समय अपने कार्यालयीन कार्य करती .....
भगवान शिव सदैव ध्यान मुद्रा में रहते हैं, चिंतन में लीन पाये जाते हैं और कुछ नया खोजने सुजन करने के लिए तत्पर रहते हैं । आप उन्हें आध्यात्मिक जगत का वैज्ञानिक कह सकते हैं ।

आप सोचेंगे कि वे वैज्ञानिक कैसे हैं ?

कुछ बातें आपके सामने रखता हूं....

भगवान शिव के डमरु निनाद से शब्दों की उत्पत्ति मानी जाती है ।
मौन में बहुत ज्यादा अभिव्यक्ति की संभावनाएं नहीं होती । हम आपस में एक दूसरे से बात कर पाते हैं या अपनी भावनाएं अभिव्यक्त कर पाते हैं तो उसके पीछे सबसे बड़ा कारण है भाषा !

भाषा का मूल होता है शब्द !!
शब्द का मूल होता है अक्षर !!!
यानी कि क, ख, ग .....

शब्दों की उत्पत्ति या और शुद्ध रूप से कहें तो अक्षरों की उत्पत्ति भगवान शिव के द्वारा ही की गई है । इसलिए यह कहा जा सकता है कि मानव जाति या इस सृष्टि में जो भी वैज्ञानिक विकास हुआ है उसके पीछे का मूल कारण भगवान शिव है.....

उन के अभाव में शब्द नहीं होते ....
शब्द के अभाव में अभिव्यक्ति नहीं होती.....

अभिव्यक्ति के अभाव में ज्ञान का प्रसार नहीं हो पाता .....

इस संबंध में कहा गया है कि.....

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
उद्धर्त्तुकामो सनकादिसिद्धानेतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्॥

अर्थात:-

नृत्य (ताण्डव) के अवसान (समाप्ति) पर नटराज (भगवान शिव) ने अपने शिष्यों अर्थात सनकादि ऋषियों की सिद्धि और कामना पूर्ति के निमित्त नवपञ्च (चौदह) बार डमरु बजाया।
इसमे से हर डमरु निनाद के साथ एक शिव सूत्र प्रकट हुआ ।
इस प्रकार से 14 बार डमरु निनाद के परिणाम स्वरूप चौदह शिवसूत्रों का ये जाल प्रकट हुआ । यह वर्णमाला प्रकट हुयी।

डमरु के चौदह बार बजाने से चौदह सूत्रों के रूप में ध्वनियाँ निकली, इन्हीं ध्वनियों से व्याकरण का प्रकाट्य हुआ।

इसलिये व्याकरण सूत्रों के आदि-प्रवर्तक भगवान नटराज को माना जाता है।

महर्षि पाणिनि को संस्कृत का व्याकरण तैयार करने का श्रेय दिया जाता है । महर्षि पाणिनि ने इन सूत्रों को देवाधिदेव भगवान शिव के आशीर्वाद से प्राप्त किया जो कि पाणिनीय संस्कृत व्याकरण का आधार बना।

भगवान शिव के द्वारा सृजित इन माहेश्वर सूत्रों की कुल संख्या 14 है जो निम्नलिखित हैं:

जो इस प्रकार है

१. अ इ उ ण्।
२. ऋ ऌ क्।
३. ए ओ ङ्।
४. ऐ औ च्।
५. ह य व र ट्।

६. ल ण्

७. ञ म ङ ण न म्।

८. झ भ ञ्।

९. घ ढ ध ष्।

१०. ज ब ग ड द श्।

११. ख फ छ ठ थ च ट त व्।

१२. क प य्।

१३. श ष स र्।

१४. ह ल्।

सभी भाषाओं का अध्ययन करें तो संस्कृत भाषा के व्याकरण में जितनी सूक्ष्मता और वर्ण विन्यास का सौंदर्य है वह किसी अन्य भाषा में नहीं है । हमारे पास पाँच पाँच व्यंजन के सेट हैं...

जैसे ॥ क ख ग घ ङ ॥

इनमें से हर सेट की बोलने की शैली मिलती-जुलती है । इसमें भी विचित्र बात यह है कि आपके जीभ की पोजीशन ऐसे हर सेट में लगभग एक समान होती है । यानी या तो जीभ दांतो से टच हो रही होगी या तालु

से टच हो रही होगी । आप दंग रह जाएंगे कि कितने वैज्ञानिक तरीके से इन अक्षरों को या व्यंजनों को एक सेट में बांटा गया है ....

यह अपने आप में स्पष्ट करता है कि भगवान शिव कितने बड़े वैज्ञानिक हैं ....

भगवान शिव को हमारे त्रिनेत्र में स्थित माना जाता है । त्रिनेत्र की जो स्थिति है उसके ठीक पीछे मस्तिष्क का एक हिस्सा है । हमारा मस्तिष्क दो हिस्सों में बटा हुआ है और उन दोनों हिस्सों के आपसी समन्वय का कार्य त्रिनेत्र के पीछे स्थित यही हिस्सा करता है ।

उस जगह के अधिष्ठाता है भगवान शिव .....

अर्थात अगर आपको अपने मस्तिष्क का पूर्ण उपयोग करना है या अपने मस्तिष्क की क्षमता को विकसित करना है तो आपको शिव साधना करनी चाहिए ..... अस्तु ....

वैशाली की शिव साधना अपने क्रम में चल रही थी ...

उसे अपने मस्तक के तीसरी नेत्र वाली जगह पर कभी-कभी स्पंदन जैसा आभास होता ....

कभी-कभी रीढ़ की हड्डियों में सिहरन की अनुभूति होती है ...
कभी-कभी बैठे-बैठे वह शून्य की अवस्था में चली जाती ....

मंत्र जाप करते करते उसका शरीर कभी-कभी बेहद गर्म हो जाता है ऐसा लगता जैसे बुखार हो गया है ...

एक दिन रात को वह सो रही थी ....
जब हम सोते हैं तो सपने आते हैं !
सपनों में कई बार वह चीजें दिखाई देती है जिसके बारे में हम सोच कर सोते हैं या जो हमारे अवचेतन मन में होता है ।

माधवराव वाले प्रसंग को लगभग 4-5 साल बीत चुके थे लेकिन उसकी टीस वैशाली के हृदय में अब भी कभी-कभी उठ जाती थी ....

उस रात भी वह उस घटना को याद करके काफी देर तक रोती रही और रोते रोते सो गई ।

जब कोई स्त्री अपनी सहमति से किसी पुरुष के साथ संबंध बनाती है तो वह अपने आप को पूरी तरह से सौंप देती है, तन मन दोनों .....

जब पुरुष उसे जबर्दस्ती प्राप्त करता है तो वह उसके शरीर को तो हासिल कर लेता है, लेकिन उसका मन उस क्रिया के लिए सहमत नहीं होता । जिसकी टीस स्त्री के मन में हमेशा बनी रहती है.....

माधवराव वाले प्रकरण को काफी साल गुजर चुके थे । आज भी जब वैशाली बैठकर उस घटना को याद करती थी तो उसकी आत्मा तक तड़प जाती थी ।

कोई विषाद या पीड़ा जब हमारे हृदय में बहुत गहरे चोट कर जाती है तो उसके प्रभाव से हमारे अंदर की कुंडलिनी शक्ति अचानक से जागृत हो जाती है....

यह जागरण कुछ क्षणों का ही रहता है...

ऐसे क्षणों में निकली हुई आह या श्राप दोनों फलीभूत होते हैं.....

वैशाली की जैसे ही नींद लगी ....
उसे स्वप्न में वे सारी घटनाएं किसी चलचित्र की तरह सामने दिखने लगी .....
शराब के नशे में माधवराव का उसके अस्तित्व पर हाथ डालना.....
उसके बाद समय समय का हुआ बलात्कार ...
उससे तृप्त होकर निर्वस्त्र पड़ा हुआ माधवराव और सिसकती हुई वह स्वयम....
दोनों उसके मानस पटल मे सामने दिखाई दे रहे थे ।
अचानक उसे ऐसा लगा जैसे शरीर में कोई विद्युत की लहर सी दौड़ गई हो !
सपने में पड़ी हुई उसकी निर्वस्त्र आकृति उछल कर खड़ी हो गयी .....
यह सब स्वप्न मे चल रहा था ....

उसकी आकृति काली माता की आकृति की तरह उग्र होती चली गई .....

काली काली देह .....

लपलपाती हुई जीभ ....

क्रोध से भरी हुई लाल लाल रक्तिम आँखें ....

अचानक उसने अपना दाहिना पैर इतनी जोर से
माधवराव के सीने पर मारा कि वह पलंग जिस पर वह
लेटा था ....

वह भी टूट गया...

और वह जमीन पर जा गिरा !

इसके साथ वह आकृति भी लुप्त हो गई .....

वैशाली हड़बड़ा कर उठ बैठी !
उसे भय भी लगा और प्रसन्नता भी हुई !
मन की गहराई मे माधवराव को ऐसी ही सजा देने की
उसकी प्रबल इच्छा जरूर थी ....

उसका पूरा शरीर पसीने से नहा गया था ।
काफी प्रयास करने के बाद लगभग एक घंटे के बाद उसे
फिर नींद आई ।

सुबह देर तक वह सोती रही ।

लगभग 8 बजे उसकी नींद खुली । रात का सपना अभी भी याद था । सर को झटक कर उन विचारों को अपने से दूर करने की कोशिश करती वह उठ गयी ।
उसने देखा मोबाइल में 4-5 मिसकॉल पड़े हुए थे । यह रोज का चक्कर था ...

वह पहले ही लेट हो चुकी थी ...
इसलिए उसने सबसे पहले नहा धोकर तैयार होना जरूरी समझा और फ्रेश होने चली गई !

ऑफिस पहुंचने के बाद पता चला मंत्री महोदय का विजिट है ।
करीब एक डेढ़ घंटे आपाधापी मची रही ।
उसके बाद जब फ्री हुई तब उसने मोबाइल चेक किया ....
सारे मां के मिस कॉल थे !
इतने मिस काल तो वह कभी नहीं करती.....
उसने वापस फोन लगाया !

खबर सुनकर वह सन्न रह गई !
उसे समझ में नहीं आया कि खुश हो या दुखी हो !!

रात माधवराव को हार्ट अटैक आया था ।
अटैक आने के बाद, वह न जाने कैसे बिस्तर से नीचे गिर गया । आवाज सुनकर जब पंकजा ऊपर पहुंची तो बिस्तर से गिर जाने से उसके सर पर गहरी चोट लग गई थी और वह बेहोश हो गया । उसे हॉस्पिटलाइज किया गया था और वह एम्स के आई सी यू में भर्ती था।

किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि अच्छे खासे स्वस्थ 25-26 साल के युवक को हार्टअटैक कैसे आ गया ?
उसे बीपी आदि की बीमारी भी नहीं थी और ना ही किसी प्रकार के सीने में दर्द की शिकायत उसने कभी बताई ।
अस्पताल में भर्ती होने के बाद जब उसके बीपी की जांच की गई सब अभी नार्मल पाया गया ।

डॉक्टर भी हैरान थे !
यह किस प्रकार से हो गया ...
सावधानी वश उसे आईसीयू में रखा गया था .....

वैशाली की पोस्टिंग उस समय राजनांदगांव में थी जो लगभग 70 किलोमीटर दूर था । उसने अपने ड्राइवर को गाड़ी निकालने के लिए कहा और सीधे गांव पहुंच गई ।

माँ और पिताजी को लेकर वह रायपुर पहुंची तो शाम के 4 बज चुके थे । तब तक वह आईसीयू से निकलकर जनरल वार्ड में आ चुका था । दवाओं के प्रभाव से अभी भी बेहोशी मे था ।

सरकारी अधिकारी होने का अपना रुतबा होता है और सरकारी संस्थानों मे उसकी अलग प्राथमिकता भी !

उसने सब लाइन अप किया और लगभग 1 घंटे में माधवराव को स्पेशल वार्ड में शिफ्ट कर दिया गया ।

पंकजा तथा गोपीनाथ को भी वैशाली के आने से काफी राहत महसूस हुई । वैशाली ने चारों को घर भेज दिया ताकि भोजन आदि करके वे वापस लौट सकें ।

रात लगभग आठ बजे माधवराव को होश आया ।
वैशाली मोबाइल देखती हुई कुर्सी पर बैठी थी .....
उसे देखते ही माधवराव की आंखें डर से फट गई....
आँखों से आँसू बहने लगे .....
उसके गले से अजीब सी आवाज निकलने लगी....
जैसे कोई गला दबा रहा हो ।
आवाज सुनकर वैशाली का ध्यान उसकी तरफ गया ।
वैशाली को अपनी तरफ देखता पाकर बड़ी मुश्किल से
माधवराव ने अपने दोनों हाथ जोड़े .....

जैसे माफी मांग रहा हो .....

उसकी आंखों में भय के निशान स्पष्ट दिखाई दे रहे थे !
ऐसा लग रहा था जैसे उसने किसी खतरनाक चीज को
देख लिया हो और डर के मारे माफी मांग रहा हो ।

जब तक वैशाली ने नर्स को आवाज दी और वह दवा
लेकर आई तब तक माधवराव फिर से बेहोश हो चुका
था ।

साढे आठ बजे तक सब वापस लौट आए और फिर वैशाली के मां बाबूजी वहीं रुक गए ।

वैशाली वापस आ गई क्योंकि उसे अगले दिन फिर ऑफिस भी जाना था । अगले दिन आकर मिलने का वादा करके वैशाली निकल पड़ी ।

उसे समझ नहीं आ रहा था कि माधवराव उसे देखकर क्यों डर रहा था ?

कल रात के सपने का इस घटना से क्या संबंध है ?

घर पहुंचते-पहुंचते ग्यारह बज चुके थे । यही सब सवाल उसके मानस पटल पर घूम रहे थे । उन्हीं के बारे में सोचते सोचते वह बिस्तर पर लेट गई ।

रात बारह साढ़े बारह के आसपास उसे नींद आ गई ....
रात को फिर सपना आया .....
इस बार माधवराव वैसे ही अस्पताल के बिस्तर पर पड़ा हुआ दिखाई दिया ....
वह उसी प्रकार कुर्सी पर बैठी हुई थी ....

अचानक उसने स्वयं को फिर से उसी प्रकार उग्र रूप में बदलते हुए देखा !

उसे देख माधवराव डर से काँपने लगा ....

अजीब सी आवाजें निकालने लगा .....

उसकी आँखें डर के मारे फटी जा रही थीं और कुछ क्षणों मे वह बेहोश हो गया ...

उस उग्र आकृति ने आगे बढ़कर माधवराव का गला दबा दिया !

वैशाली की समझ में आ गया कि यह माधवराव का अंत है । उसकी हरकत की वजह से वह स्वयं भी यही चाहती थी, लेकिन उसके मन में मां और बुआ का ख्याल आ गया ....

वह जोर से चीखी - छोड़ दो मां ! छोड़ दो !!

और हड़बड़ा कर उठ बैठी .....

पूरा शरीर से पसीने से तरबतर था !

गला प्यास से सूख रहा था ।

काफी देर बाद वह संयत हो पाई .....

उस रात भी उसे काफी देर से नींद आई ।

अगले दिन सुबह उसने फोन लगाकर माधवराव का हालचाल जानने की कोशिश की, लेकिन फोन नहीं लगा । उसे अनहोनी का अंदेशा होने लगा .....

दस बजे के आसपास वह ऑफिस पहुंच गई । ऑफिस पहुंचते ही मां का फोन आया । उन्होंने रोते-रोते बताया कि माधवराव को पैरालिसिस अटैक आया है और उसका बायां हिस्सा लकवा ग्रस्त हो गया है ।

महंगी से महंगी दवाइयों की कमी न होने के बावज़ूद माधवराव आज भी पूरी तरह ठीक नहीं हो पाया ...
एक तरफ का हिस्सा आज भी वैसा ही है .....
यह था भोलेनाथ का न्याय .....
इस घटना के बाद वैशाली का अपने भोलेनाथ पर विश्वास और गहरा होता चला गया ....

इधर पशुपतिनाथ जाकर वापस आने के बाद जटाशंकर की साधना भी प्रारंभ हो गई ।
वह नियमित रूप से ओम नमः शिवाय का जाप तो करता ही था तो शुरुआत वहां से की गई ....

भगवान भोलेनाथ का सबसे सरल पंचाक्षरी मंत्र है
"ओम नमः शिवाय" !
भगवान शिव को आदि गुरु भी कहा गया है इस लिए
उनके इस मंत्र का जाप कोई भी कर सकता है !

चलते फिरते कर सकता है !
जैसी इच्छा हो वैसे कर सकता है !

इस मंत्र के जाप से भगवान शिव की कृपा प्राप्त होती
है ।
उनके शिष्यों में देवर्षि नारद से लेकर सप्तर्षियों का
मंडल है ....
तो भगवान कृष्ण से लेकर अर्जुन तक सब उनके शिष्य
हैं .....
भस्मासुर जैसा उल्टी बुद्धि वाला व्यक्ति भी उनका
शिष्य है.....
तो रावण जैसा प्रकांड विद्वान राक्षस भी उनका शिष्य है
।

उनके गणों की बात की जाए तो ....
गण वह होता है जो अपने अधिपति को प्रिय हो ।

उनके गणों में भूत प्रेत पिशाच से लेकर सभी योनियों के लोग मौजूद है अर्थात वह सबको निरपेक्ष भाव से देखते हैं ।

उनके लिए हर एक व्यक्ति चाहे किसी भी योनि मे हो ....

वह पुरुष हो !

स्त्री हो !!

बच्चा हो !!!

बूढ़ा हो !!!!

एक समान है ।

जिनको गुरु की प्राप्ति नहीं हो पा रही है वह भी भगवान शिव को गुरु मानकर इस मंत्र का जाप कर ले और फिर साधना कर सकते हैं ।

जटाशंकर रोज 108 माला मंत्र जाप करता था और सात्विक भोजन ग्रहण करते हुए कुल मिलाकर ग्यारह लाख मंत्र जाप उसे पूरा करना था । इसमे उसे लगभग 4 माह का समय लगा ।

जैसा कि आप लोगों को याद होगा जटाशंकर मेरा बचपन का ! लंगोटिया ! दोस्त है । हम दोनों साथ में स्कूल में पढ़े थे ।

आर्थिक रूप से वह एक बहुत ही सक्षम परिवार में पैदा हुआ । उसके पुश्तैनी व्यापार कई क्षेत्रों में फैले हुए हैं । जिसमें राइस मिल से लेकर ईट भट्टा तक ! धान की खेती से लेकर सब्जी की खेती और मछली पालन तक सब कुछ चलता रहता है । धन धान्य की किसी प्रकार की कोई कमी उसके जीवन में नहीं है !

राजनीति से लेकर समाज तक हर जगह उसकी अपनी एक पहचान है !

सबसे बड़ी बात यह कि इतने मालदार परिवार से होने के बावजूद किसी प्रकार का इधर-उधर वाला संबंध किसी से भी नहीं है.....

मस्त मौला आदमी है !

शिव भक्त है !!

और शादी के नाम से दूर भागता है ।

कई बड़े-बड़े परिवार के लोगों ने अपनी बेटियां उन्हें देने के लिए प्रयास किए लेकिन जटाशंकर टस से मस नहीं हुआ ।
मेरे पास भी कुछ लोग रिश्ते की बात लेकर आए थे, यह कहकर कि मैं जटाशंकर को मनाने की कोशिश करूँ !

मैं जानता था कि वह मानने वाला नहीं है फिर भी मैंने अपनी तरफ से प्रयास जरूर किया !

लेकिन जटाशंकर नहीं माना !

अभी भी यानि 30 साल की उम्र में भी वह अविवाहित था ।
यह है जटाशंकर का परिचय ....

नेपाल से आने के बाद जटाशंकर साधनाओं की ओर आकर्षित हुआ था और चार महीने की साधना में उसे बेहद चमत्कारिक अनुभव हुए ।
वह शिवभक्त तो पहले से ही था और भगवान भोलेनाथ अपने भक्तों को अपनी उपस्थिति का एहसास बड़ी सरलता से करा देते हैं । भक्त जितना सरल होता है

प्रभु की कृपा उतनी ही सहजता से उसे प्राप्त हो जाती है ।

एक महीने के मंत्र जाप के बाद ही उसके दोनों भौहों के बीच वाले हिस्से में स्पंदन चालू हो गया । साथ ही उसकी नाभि वाले हिस्से में गर्मी का एहसास भी होता था । धीरे-धीरे उसकी रीढ़ की हड्डियों में भी स्पंदन प्रारंभ होने लगा.....

दो महीने का मंत्र जाप होते होते उसे ध्यान लगने लगा । मंत्र जाप करते करते वह मंत्र जाप करना भूल जाता और दस दस पन्द्रह पन्द्रह मिनट उसी प्रकार शांत अवस्था में बैठा रहता.....

जटाशंकर का 4 महीने का मंत्र जाप पूरा हो चुका था । साधनाओं में विशेष मुहूर्त और दिन का महत्व होता है । जैसे हम भगवान शिव की पूजा सोमवार के दिन करते हैं ।

हनुमानजी की पूजा मंगलवार के दिन करते हैं ।

उसी प्रकार से हर साधना में विशेष मुहूर्त का उपयोग करने से सकारात्मक परिणाम जल्दी मिलते हैं ।

इसके लिए आप पंचांग का उपयोग भी कर सकते हैं क्योंकि उसमें हर दिन के अच्छे मुहूर्त दिए रहते हैं ।

ग्रहण काल का भी अपना एक विशेष महत्व होता है ....

सूर्य ग्रहण पड़ने वाला था ।
सूर्यग्रहण साधको के लिए एक अत्यंत विशिष्ट मुहूर्त माना जाता है ।
विशेष रूप से तारा साधना के लिए सूर्य ग्रहण को अत्यंत श्रेष्ठ माना जाता है ।

इसके अलावा भी विभिन्न प्रकार के मंत्र सूर्य ग्रहण काल में जागृत और सिद्ध किए जा सकते हैं ।

साबर मंत्रों को भी ग्रहण काल में 108 बार जपने से वे जागृत हो जाते हैं ।
जिन मंत्रों की आपने पहले साधना की हुई हो उन मंत्रों को 11 बार या 21 बार, सूर्य ग्रहण के समय जप लेने से उनकी शक्ति और बढ़ जाती है ....

साधनाओं में सफलता मिलने के लिए एक महत्वपूर्ण बात यह है कि हमने अपने इस जीवन में और पूर्व जन्म में जो भी पाप और दोष इकट्ठा कर रखे हैं ....
उन सभी को विसर्जित किया जाए....
उनका निवारण किया जाये ।

इसे अगर मैं सामान्य भाषा में बताने की कोशिश करू तो इसे आप एक प्रकार की उधारी समझ लीजिए ।

मान लीजिए कि आप के ऊपर ₹5000 की उधारी है , जिसे आप को चुकाना है । जिसे पैसा देना है उसने आपको काम दे दिया , इस शर्त पर की आप पहले उधार चुकाएंगे ।

अब अगर आप रोज ₹100 कमाते हैं ,जिसमें से ₹50 आपका खुद का रोज का खर्च है तो 100 दिन तक आपका जो भी कमाया हुआ पैसा है, ₹5000 ! वह तो उधारी चुकाने में ही चला जाएगा ।

आपके पास अपना एक भी रुपया नहीं होगा ।

जब 101 वें दिन आप ₹100 कमाएंगे तब आपके पास ₹50 दिखेगा ।
मान लीजिए उसके बाद आपने 50 दिन और कमाए तो आपके पास ढाई हजार रुपए आ जाएंगे । 100 दिन कमाए तो ₹5000 आ जाएंगे .....

आपने शुरू के 50 दिन मेहनत की और आपका पैसा चला गया , क्योंकि आपको तो उधारी चुकानी थी । इससे परेशान होकर आपने मेहनत करना छोड़ दिया ! तो ! यह मान कर चलिए कि आप जिंदगी भर इस मलाल के साथ जिएंगे कि मेहनत करने से पैसे नहीं मिलते .....

ठीक यही साधना के क्षेत्र में भी होता है !

शुरू में किए जाने वाले मंत्र जाप आपके द्वारा इकट्ठा किए गए विभिन्न प्रकार के दोषों के शमन में चले जाते हैं ! उसके बाद आपको अनुकूलता मिलनी चालू होती है ....

कई साधक महीना दो महीना या चार महीना मंत्र जाप करके कुछ नहीं हुआ ... करके छोड़ देते हैं । और खाली हाथ रह जाते हैं ....

जो साधक लगातार लगे रहते हैं .... उनको समय के साथ लाभ मिलना प्रारम्भ हो जाता है !
यह तब होता है जब सभी प्रकार के दोषों का और पापों का शमन हो जाता है ।

इस प्रकार के दोष निवारण के लिए दो तरीके हैं ।

पहला तो यह कि आप लगातार साधनाओं और मंत्र जाप के माध्यम से पाप और दोष का निवारण करें ।

दूसरा सूर्यग्रहण के अवसर में विशेष पूजा अर्चना के द्वारा दोषों का शमन कर सकते हैं ।

नदी का तट इस प्रकार के अनुष्ठानों के लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया है ।
सूर्यग्रहण के अवसर पर सभी साधक इस प्रकार के अनुष्ठान संपन्न करते हैं या फिर उनके गुरु उनके लिए

इस प्रकार के अनुष्ठान संपन्न कराते हैं, ताकि वे साधना क्षेत्र में आगे बढ़ सके ।

डोम बाबा ने मुझे जटाशंकर को राजिम ले जाकर शाप विमोचन प्रयोग कराने के लिए निर्देश दिया था ।
डोम बाबा ने मुझे भी इस प्रकार का प्रयोग शिवनाथ नदी के तट पर संपन्न करवाया था और उसकी पूरी विधि भी मुझे बताई थी ।
इस प्रकार के प्रयोग में कुछ विशेष सामग्रियों और यंत्रों का प्रयोग किया जाता है, जो थोड़ी महंगी आती है !
जटाशंकर के मामले में पैसे की कोई दिक्कत नहीं थी ।
मैंने सारी सामग्री की लिस्ट उसे सौंप दी जो लगभग दो ढाई हजार का रहा होगा !
पूरा सामान लेकर हम लोग राजिम की ओर चल पड़े....
हम दो ही थे मैं और जटाशंकर !

राजिम को छत्तीसगढ़ मे प्रयाग राज जैसा एक संगम स्थल माना गया है। यहाँ पर कई प्राचीन मंदिर मौजूद हैं ....

यहाँ तीन नदियों पैरी नदी, सोंढुर नदी और महानदी का संगम है । इसीलिये इस संगम में अस्थि विसर्जन तथा संगम किनारे पिंडदान, श्राद्ध एवं तपंण किया जाता है ।

पिण्डदान के पश्चात् राजीव लोचन के दर्शन करने के बाद ही लोग वापस लौटते हैं।

भगवान शिव को समर्पित ""कुलेश्वर महादेव'' मंदिर त्रिवेणी के बीच में स्थित है । इसमे एक शिलालेख है । जिसके अनुसार यह मंदिर 8-9 वीं शताब्दी मे निर्मित है।

बरसात में नदी की बाढ़ से उसकी रक्षा के लिये मंदिर के चबूतरे को विशेष रुप से ऊंचा बनाया गया था । इसके अलावा जितनी ऊंचाई पर मंदिर है, मंदिर के नीचे की नींव संभवतः उससे भी अधिक गहरी है और मजबूत पत्थरों से बनी हुई है।

कुल मिलाकर दर्शनीय स्थल है ....

मेरा मित्र जटाशंकर व्यापक जनसंपर्क वाला आदमी है । उसका राजिम मे एक दोस्त रहता था । उसका नाम था विष्णु प्रसाद साहू । हम लोग सीधे उसके घर में पहुंचे ।

जटाशंकर को देखकर विष्णु बहुत प्रसन्न हुआ !
उसने व्यवस्था करने की बात कही....
लेकिन जटाशंकर साधना काल में था इसलिए उसने सभी चीजों के लिए मना कर दिया ।

जलपान करके हम लोग मंदिर दर्शन करने के लिए गए और लगभग एक घंटे में वापस लौट आए ।

सूर्यग्रहण अगले दिन था । हम लोग लॉज मे रुकना चाहते थे लेकिन विष्णु प्रसाद ने अपने घर पर ही रोक लिया ....

उसने बताया कि आज एक तांत्रिक उनके घर में गृह बंधन करने के लिए आने वाले हैं ।

विष्णु प्रसाद ने आगे बताया - तांत्रिक का नाम है बाबा बिमलेश ! वे बहुत पहुंचे हुए हैं और मैंने उनको अपने घर की तंत्र बाधा दूर करने के लिए बुलाया है ।

मैंने पूछा - आपको क्या समस्या है ?

वह बोले - मेरे घर में हमेशा कोई ना कोई बीमार ही रहता है । एक सदस्य ठीक हो जाता है तो तुरंत बाद एक या दो दिन में दूसरा सदस्य बीमार हो जाता है । यह पिछले आठ-दस सालों से चल रहा है ।
कई बार घर में कई जगह पर खून के निशान मिलते हैं .....

अजीब अजीब सी आवाजें आती हैं ....

यही नहीं कई बार घर के अंदर इतनी गंदी बदबू आती है !
जैसे किसी ने शौच कर दिया .....

कभी-कभी बिल्कुल वैसी ही गंध आती है.....
जैसे श्मशान में शव को जलाते समय आती है .....

मैंने कई तांत्रिकों को दिखाया लेकिन कोई भी इस समस्या का समाधान नहीं कर पाया ।

विमलेश बाबा के बारे में बहुत सुना है इसलिए आखरी उम्मीद के रूप में उन्हें लेकर आया हूं .....

तंत्र साधना का क्षेत्र किसी महासागर की तरह विस्तृत है !

इस भारतवर्ष में एक से बढ़कर एक तंत्र साधक मौजूद है । इसलिए मैं हमेशा यह कोशिश करता हूं कि जब भी किसी तंत्र साधक से मिलने का अवसर मिले तो उसे मिलकर उसकी साधना पद्धति को भी समझने का प्रयास करू ।
यह जिज्ञासा मुझे विभिन्न प्रकार के अनुभव से गुजारती है और हर अनुभव अपने आप मे विचित्र और स्मरणीय होता है ....

बाबा बिमलेश के साथ जो अनुभव हुआ वह भी अद्भुत और अविस्मरणीय था ....

उनका पूरा नाम था बिमलेश देवांगन ।
वे भगवान भैरव के साधक थे ।
आप लोग भी जानते होंगे की भैरव साधना उसके सर्वोत्कृष्ट रूप में श्मशान में ही की जा सकती है । वह भी श्मशान साधक थे ।

शाम को विमलेश जी अपने चार शिष्यों के साथ घर में पधारे.....

लगभग साढ़े 6 फुट लंबे और किसी पहलवान की तरह हट्टे कट्टे बिमलेश 25-26 साल के युवक थे ।

आमतौर पर गृह बंधन आदि के लिए आने वाले तांत्रिकों को जिनको मैंने देखा है वह सारे के सारे 40-45 या उससे ज्यादा उम्र के हुआ करते थे ।

इतना जवान तांत्रिक मैंने पहली बार देखा था !
खासतौर से गृहस्थ जीवन मे !
उनका काम करने का तरीका एकदम अनोखा था ।

वे मसान में जाकर कुछ क्रियाएं संपन्न करते और लगभग रात के 11-12 बजे वहां से बाइक पर बैठकर जहां काम करना होता वहां पहुंच जाते .....
वहां पहले से शिष्य तैनात रहता !
वह भी दो-चार की संख्या में....

वहां पहुंचने के बाद वह गाड़ी से कूद जाते और घर में प्रवेश कर जाते ..... जहां काम करना होता.....

वहां तैनात शिष्यों की ड्यूटी होती थी उस बाइक को संभालना !

बाइक से कूद कर वह सीधे घर में प्रवेश कर जाते और उसके बाद शुरू हो जाता ....

उनका अद्भुत कार्यक्रम ....

अद्भुत इसलिए कह रहा हूं क्योंकि वह वाकई अद्भुत था !

विष्णु प्रसाद जी के घर रात लगभग 11:30 वह अपनी बाइक पर पहुंचे ...

जिज्ञासावश मैं भी बाहर ही खड़ा हुआ था !

वाकई !!

उन्होंने बाइक से छलांग लगा दी !!!

और .....

शिष्यों ने मुश्किल से बाइक को संभाला ...

उनकी बाइक की हालत भी कुछ-कुछ वैसी ही थी !

जैसी .... सर्कस में मौत का कुआं वाले प्रोग्राम में बाइक चलाने वालों की बाइक की होती है ।

दिखने में एकदम कंडम !
लेकिन चलने में एक नंबर .....

वे कूदकर घर के अंदर घुसे .....
वे घर की दीवाल पर अपना हाथ रखते और जब बाहर हटाते तो...
उस हाथ में कभी कोई कील निकलती ...
तो कभी कोई हड्डी का टुकड़ा निकलता ....
इस प्रकार से उन्होंने अलग-अलग स्थानों से करीब पच्चीस चीजें निकाली होगी ....

फिर हम लोग छत पर पहुंचे हुए !
बिमलेश बाबा आगे आगे थे और हम लोग पीछे पीछे....

छत पर पहुंचने के बाद उन्होंने जैसे ही एक छोर पर हाथ रखा !
वहां से एक सिक्का उछलकर नीचे गिरा !
यहां तक तो सब ठीक है ...
लेकिन जैसे ही वह सिक्का जमीन पर गिरा !
वह तेजी से एक तरफ भागने लगा ....

जैसे किसी ने उसे उस तरफ फेंक दिया हो !!

जबकि विमलेश जी ने सिर्फ दीवाल पर हाथ रखा था ....

वह सिक्का तेजी से दौड़ता हुआ चला जा रहा था और विमलेश जी उसके पीछे पीछे दौड़े साथ मे चिल्ला भी रहे थे - रुक ! रुक !! रुक !! #@#@#@#$# $!!! कहां जा रहा है ?

उस सिक्के ने लगभग पूरे छत का एक चक्कर लगा लिया तब जाकर उन्होंने हाथ की थपकी मारकर उस को पकड़ लिया ।

उनका एक शिष्य पीछे में थैली लेकर चलता था । जिसमें वह इन चीजों को पकड़ पकड़ कर डालते जाते .....

छत से जो सबसे विचित्र चीज निकली ....

वह थी लगभग 8 इंच लंबी एक हड्डी ...

सिक्का कील जैसी चीजें किसी दरार से निकल आए ! यह सोचा जा सकता है !

लेकिन ! 8 इंच लंबी हड्डी दीवाल से कैसे निकली ?
यह एक अजीब सी बात थी !
इसीलिए मैं इसे अदभुत कह रहा था ।

जहां जहां से चीजें निकल रही थी वहां पर दीवाल पर
कोई निशान नहीं हुआ करता था ....
ऐसा लगता था ....
जैसे वे किसी अन्य आयाम से निकल कर आ रही
हो ....

हड्डी का टुकड़ा भी जिस दीवाल से निकला !
उस दीवाल पर भी कोई निशान नहीं था !!
लेकिन ...
हड्डी उनके हाथ में मौजूद थी !!!
उसे भी उन्होंने अपने उस रहस्यमय थैले में डाल
दिया .....

यह सब कार्यक्रम करते करते रात के एक बज गए ।
एक बात तो बताना भूल ही गया ...
बाबा बिमलेश अपने पूरे कार्य के दौरान बीड़ी पीते रहते
थे ...

यूं समझ ले कि वह बीड़ी के चेन स्मोकर लग रहे थे ।

उनके पास मेघना बीड़ी का कट्टा था । जिसमें से निकालकर वह एक के बाद एक बीड़ी पीते जाते थे और पूरे कार्य के दौरान उनके मुंह से बीड़ी का धुआं निकलता रहता था ।

सारी चीजें इकठ्ठा होने के बाद छत पर सब बैठे ।
चारपाई डली हुई थी ...
एक चारपाई पर विमलेश बाबा बैठे थे ...
और दूसरी चारपाई पर हम लोग बैठे हुए थे ।

उनके हाथ मे बीड़ी का कट्टा था ।
बिमलेश बाबा बोले - साला ! डेढ़ बज रहा है....
काम करते करते तीन बज जाएँगे ....
अभी कोई ठेला भी नहीं खुला होगा ।
इसमें सिर्फ एक बीड़ी बची है .....

वाकई उस कट्टे में सिर्फ एक बीड़ी बची हुई थी । उसे निकाल कर जलाकर उन्होंने अपने होठों से लगा लिया और उस कट्टे के खाली पैकेट को अपनी दोनों हथेलियों

के बीच में रख कर मसलने लगे । साथ ही बोलते भी जाते थे - ऐसा कैसे चलेगा । बीड़ी के बिना काम कैसे चलेगा ....

फिर उन्होने ₹10 का एक नोट निकाला ...
और...
उसे भी अपनी हथेली के बीच में रख लिया.....

अब वे बीड़ी का खाली पैकेट और नोट दोनों को अपने हथेली के बीच में रख कर मसल रहे थे ।

विष्णु प्रसाद भी असमंजस में था !
घर पर कोई बीड़ी पीने वाला नहीं था !!
रात डेढ़ बजे बाहर कोई भी दुकान खुली नहीं मिलती ।

इतनी रात गए ...
किसी दूसरे के घर में जाकर बीड़ी मांगना भी थोड़ा संदेहास्पद टाइप का काम था ...

तभी ! अद्भुत आश्चर्य ,,,,,,

जिस खाली पैकेट को विमलेश बाबा अपनी हथेलियों के बीच में रखकर मसल रहे थे ....
वह हमारे देखते-देखते बीडियों से भर गया !
बिल्कुल उतना !
जितना एक नए पैकेट को फाड़ने पर दिखाई देता है ....
पूरा फुल बीड़ी का पैकेट अब उनके हाथ में था । हाँ !
वह ₹10 का नोट गायब था ....
उस समय लगभग ₹7 में बीड़ी का पूड़ा आता था ।

रात लगभग साढ़े तीन बजे तक उनका पूजन का कार्यक्रम चलता रहा और हम लोग भी साथ में बैठे रहे । पूजन समाप्त होने के बाद भैरव बाबा के भोग की बारी थी ॥

इसके लिए एक बेहद कड़वी और महंगी जड़ी , जिसका नाम संभवत कुट्टी या वैसे ही कुछ था । उसे विष्णु प्रसाद ने मंगा कर रखा था ।

वह भी थोड़ा बहुत नहीं ! बल्कि पूरे 7 किलो ....
काम पूरा हो जाने पर यह भोग विमलेश बाबा के माध्यम से भैरव बाबा ग्रहण करते थे ...

यह जड़ी इतनी कड़वी होती है कि .....
आप उसका एक छोटा टुकड़ा भी बहुत मुश्किल से खा पाएंगे ....
लेकिन .....
हमारे देखते-देखते .....

विमलेश बाबा पूरी की पूरी सात किलो जड़ी खा गए ....

उसके बाद उन्होने एक लोटा पानी पिया और फिर सभी वही छत पर ही सो गए ।

सुबह लगभग 8 बजे के आसपास हमारी नींद खुली !

तब तक विमलेश बाबा अपने शिष्यों सहित रवाना हो चुके थे ....
तीन महीने बाद मे विष्णु प्रसाद ने बताया कि उनकी समस्या का निवारण हो गया ....

नित्यकर्म आदि से निवृत्त होकर हम लोग भी नदी तट की ओर बढ़ गए ....

ग्रहण का समय उस दिन लगभग 10:30 बजे के आसपास था और ग्रहण कुछ 3 घंटे तक रहने वाला था .....

सुबह 9:30 बजे के आसपास हम लोग मंदिर दर्शन करने पहुंच चुके थे । दर्शन के बाद नदी के तट पर हम लोग बैठे । मैंने आंख बंद करके भगवान शिव का ध्यान लगाने की कोशिश की .....

भगवान शिव का बिंब सिर्फ एक क्षण के लिए मानस पटल पर आया और उसके तत्काल बाद एक जटाधारी महिला दिखने लगी !
आश्चर्य की बात यह थी कि वह जटाधारी महिला जटाशंकर के साथ बैठी हुई थी । जो दृश्य दिख रहा था वह उसी स्थान का था जहां पर हम लोग सब बैठे हुए थे !
फर्क सिर्फ इतना था कि इस समय सिर्फ हम दो लोग बैठे थे !
जो दृश्य मेरे मानस पटल पर दिख रहा था उसमें हम तीन लोग बैठे हुए थे , मैं जटाशंकर और वह जटाधारी महिला .....

इस संकेत का मतलब यह था कि पूजन उस महिला के आने के बाद ही प्रारंभ होना है .....

हम लोग दो आसन लेकर आए थे । एक पर मैं बैठा हुआ था और दूसरी चटाई फैला कर उसमें जटाशंकर बैठा था ।

मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मैं चटाई को इस प्रकार से मोड़ कर बैठा था जिसमें एक आदमी बैठ सके और जटाशंकर चटाई को इस प्रकार से मोड कर बैठा था कि उसमें दो लोग बैठ सकें ....

भगवती किस प्रकार से अपने साधकों को समय पर सही स्थान पर पहुंचा देती है और उन्हें साधना के पथ पर आगे बढ़ाती है उसका एक अद्भुत उदाहरण मैं देख रहा था ...
मैं भगवती के चरणों में नमन करता हुआ उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहा था .....
जब वह जटाधारी महिला पूजन के लिए आती .....

मेरे जीवन में इतनी अजीब अजीब घटनाएं घट चुकी थी कि अब मेरे लिए इस प्रकार के संकेतों को समझना और संभावित घटना का अनुमान लगाना थोड़ा आसान हो गया था ,,,,

तभी बेचैन जटाशंकर बोला - अबे ! चालू कर ना.....

मैं मुस्कुराया और बोला - थोड़ी देर रुक जा, तेरे साथ पूजा करने के लिए कोई आने वाला है ।

जटाशंकर बोला - तो साथ में ही ले आते ! उसको अलग से बुलाने की क्या जरूरत थी ।

मैं मुस्कुरा दिया और मन ही मन सोचा - यह तो मुझे भी नहीं मालूम कि कौन आने वाला है ? एक साथ कैसे लेकर आता ....

उस समय तक लगभग 9:45 का समय हो चुका था । पूजन की सामग्री सामने रखी हुई थी । जिसमें बहुत सारी चीजों के अलावा एक छोटा सा हवन कुंड भी था ।

प्रतीक्षा करनी थी और जटाशंकर बेचैन हो रहा था
इसलिए मैंने उससे कहा - एक काम कर , तू ग्यारह
माला मंत्र जाप कर ले ....
वह मंत्र जाप करने लगा और मैं भी गुरु मंत्र जाप में लग
गया ।
अभी भी ग्रहण प्रारम्भ के लिए आधे घंटे का समय बचा
था .....

विशेष पूजन करवाना था .....
इसलिए मैं पूरे गेटअप में था ।

पीले रंग की धोती !
पीले रंग का कुर्ता !!
और उसके ऊपर "ओम नमः शिवाय" छपी हुई गुरु
चादर .....
माथे पर त्रिपुंड भी बना लिया था । अर्थात मोटा मोटी
स्टैंडर्ड शिवभक्त वाले गेटअप में था ।

मेरी माला चल रही थी .....
तभी ....

एक कदमों की आहट मुझे अपनी और आती हुई प्रतीत हुई.....

मैंने आन्खें खोलकर देखा तो वहीं युवती जो ध्यान में दिखाई दी थी .....

सधे हुए कदमों से मेरी तरफ बढ़ रही थी ....

मैंने उसे बैठने का इशारा किया और वह जटाशंकर के बगल में जाकर बैठ गई.....

लगभग 10 बज के 15 मिनट हो चुके थे ....

ग्रहण काल आने वाला था .....

इसलिए मैंने पूजन प्रारंभ करवा दिया । दोनों को हाथ में जल देखकर संकल्प करवाया ।

डोम बाबा के बताए अनुसार शाप विमोचन की पूजन विधि प्रारंभ की ।
लगभग एक घंटे का पूजन था ।
यह पूजन कालचक्र पूजन के विधान में आता है और इसके अधिष्ठाता है महाकाल .....

काल का एक अर्थ होता है "मृत्यु" ! और महाकाल को सामान्यतः मृत्यु का देवता माना जाता है ।
काल का एक और अर्थ होता है और वह होता है "समय".....
इस दृष्टि से देखें तो महाकाल का अर्थ होता है वह देवता जो समय का अर्थात काल का अधिपति है ।

समय अपने आप में एक बहुत अद्भुत चीज है अगर आप तो ध्यान देंगे तो इसका कोई ओर छोर नहीं है ! भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग को भी ऐसा ही माना जाता है जिसका कोई आदि अंत नहीं है । इन सारी चीजों को हम उनके बौद्धिक आकार में समझने की कोशिश करते हैं लेकिन वास्तव में उनके बड़े गूढ़ अर्थ होते हैं.....

समय को देख लीजिए !
अभी का समय पिछले समय के बाद आया ! यानी कल के बाद आज आया ।
आने वाला समय अभी के समय के बाद आएगा यानी आने वाला कल आज के बाद आएगा ...

"आज" 14 तारीख है । "आज" मान लीजिए आप ने एक कार खरीद ली । यह आज वाली स्थिति सिर्फ 14 तारीख के दिन ही रहने वाली है 15 तारीख को जब आप बोलेंगे तो आप यह बोलेंगे कि मैंने "कल" कार खरीदी .....

समय बहते पानी की तरह सतत प्रवाहशील है ! जिस क्षण में हम अभी सांस ले रहे हैं अगले क्षण में वह अतीत का हिस्सा हो जाएगा । हर क्षण अपने बाद वाले क्षण से जुड़ा हुआ है ।
इस दृष्टि से देखेंगे तो .... सृष्टि के प्रारंभ के समय से आज तक का समय एक दूसरे के साथ जुड़ा हुआ है ! और .... आज से लेकर सृष्टि की समाप्ति का क्षण जो भी हो ! वहां तक भी हर क्षण एक दूसरे के साथ जुड़ा होगा .....

इसलिए महाकाल इस पूरे समय के अधिपति होने के कारण ! आदि और अंत से हीन हैं और अनंत है.....

आज हम काल की गणना सेकंड मिनट और घंटे में करते है । इसे हम बहुत बड़ी वैज्ञानिक उपलब्धि के रूप में भी मारने की कोशिश करते हैं ।

सनातन धर्म का काल गणना का स्वरूप अगर आप देखेंगे तो आपको लगेगा कि इस के सामने यह विधि तो प्राइमरी स्कूल के बच्चे के जोड़ने घटाने जैसी है.....

वर्तमान वैज्ञानिक काल गणना की विधि :-

सबसे छोटा भाग "सेकंड"

60 सेकंड = 1 मिनट

60 मिनट = 1 घंटा

24 घंटा = 1 दिन

7 दिन = 1 सप्ताह

28-31 दिन = 1 माह

365 दिन = 1 वर्ष

यहाँ आप कह सकते हैं कि इससे छोटी इकाई जैसे "मिली सेकंड" , "माइक्रो सेकंड" आदि मौजूद है । लेकिन यह अलग इकाइयां नहीं है ।

"मिली सेकंड" सेकंड का हजारवां और "माइक्रो सेकंड" सेकंड का दस लाख वां हिस्सा है ।

मूल इकाई तो सेकंड है ।

यानि सबसे छोटी समय मापक इकाई सेकंड (second) और सबसे बड़ी समय मापक इकाई वर्ष (year)....

अब सनातन धर्म की काल गणना विधि देखिये :-

गणना की सूक्ष्मता और विस्तार दोनों देख लीजिये और गर्व करिए कि आप सनातन धर्म के हैं ....

1 त्रुटि = 0.0000297 सेकंड

100 त्रुटि = 1 लव

135 लव = 1 गुरु अक्षर

10 गुरु अक्षर = 1 प्राण

6 प्राण = 1 पल

60 पल = 1 घटी = 24 मिनट

2 घटी = 1 मुहूर्त = 48 मिनट

3.75 मुहूर्त = 1 प्रहर = 3 घंटे

8 प्रहर = 1 अहोरात्र या 1 दिन रात = 24 घंटे

15 दिन-रात = 1 पक्ष

2 पक्ष = 1 मास (पितरों का एक दिन-रात)

कृष्ण पक्ष = पितरों का एक दिन और शुक्ल पक्ष = पितरों की एक रात।

2 मास = 1 ऋतु

3 ऋतु = 6 मास

6 मास = 1 अयन (देवताओं का एक दिन-रात)

2 अयन = 1 वर्ष

उत्तरायन = देवताओं का दिन

दक्षिणायन = देवताओं की रात।

मानवों का एक वर्ष = देवताओं का एक दिन जिसे दिव्य दिन कहते हैं।

1 वर्ष = 1 संवत्सर=1 अब्द

10 अब्द = 1 दशाब्द

100 अब्द = शताब्द

360 वर्ष = 1 दिव्य वर्ष अर्थात देवताओं का 1 वर्ष।

12,000 दिव्य वर्ष = एक महायुग (चारों युगों को मिलाकर एक महायुग)

जिसमे :-

सतयुग = 4800 देवता वर्ष

त्रेतायुग = 3600 देवता वर्ष

द्वापरयुग = 2400 देवता वर्ष

कलियुग = 1200 देवता वर्ष

71 महायुग = 1 मन्वंतर ।

चौदह मन्वंतर = एक कल्प।

एक कल्प = ब्रह्मा का एक दिन । (ब्रह्मा का एक दिन बीतने के बाद महाप्रलय होती है और फिर इतनी ही लंबी रात्रि होती है)। इस दिन और रात्रि के आकलन से उनकी आयु 100 वर्ष होती है। उनकी आधी आयु निकल चुकी है और शेष में से यह प्रथम कल्प है। ब्रह्मा का वर्ष यानी 31 खरब 10 अरब 40 करोड़ वर्ष। ब्रह्मा की 100 वर्ष की आयु अथवा ब्रह्मांड की आयु- 31 नील 10 अरब 40 अरब वर्ष (31,10,40,00,00,00,000 वर्ष).....

मन्वंतर काल का मान : सूर्य मंडल के परमेष्ठी मंडल (आकाश गंगा) के केंद्र का चक्र पूरा होने पर उसे मन्वंतर काल कहा गया। आधुनिक मान के अनुसार सूर्य 25 से 27 करोड़ वर्ष में आकाश गंगा के केंद्र का चक्र पूरा करता है।इस गणना के अनुसार यह मान लगभग 30 करोड़ वर्ष बैठता है ...

कल्प का मान : परमेष्ठी मंडल स्वायम्भू मंडल का परिभ्रमण कर रहा है यानी आकाशगंगा अपने से ऊपर वाली आकाशगंगा का चक्कर लगा रही है। इस काल को कल्प कहा गया यानी इसकी माप है 4 अरब 32 करोड़ वर्ष (4,32,00,00,000)।

इस कल्प में 6 मन्वंतर अपनी संध्याओं समेत निकल चुके, अब 7वां मन्वंतर काल चल रहा है जिसे वैवस्वत: मनु की संतानों का काल माना जाता है।

27वां चतुर्युगी बीत चुका है।

वर्तमान में यह 28वें चतुर्युगी का यह कलियुग चल रहा है।

यह कलियुग ब्रह्मा के द्वितीय परार्ध में श्वेतवराह नाम के कल्प में और वैवस्वत मनु के मन्वंतर में चल रहा है। इसका प्रथम चरण ही चल रहा है।

जब पूजा के समय पंडित जी आपसे संकल्प कराते है तो वह यह सारी चीजें बोलते है अगर आप ध्यान देंगे तो आपको समझ में आएगा ...

संकल्प :

(पंडित आपको कहते हैं कि - दाहिने हाथ में जल अक्षत और द्रव्य लेकर निम्न संकल्प मंत्र बोले :)
'ऊँ विष्णु र्विष्णुर्विष्णु : श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पै वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलि प्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारत वर्षे भरत खंडे आर्यावर्तान्तर्गतैकदेशे.....

शायद विस्तार ज्यादा हो गया क्षमा करिएगा ... लेकिन यह ऐसी जानकारियां हैं जो हमें पता चलेंगी तभी हम स्वयं को गौरवशाली इतिहास का हिस्सा मान पायेंगे ... अस्तु...

मैं पहली बार शाप मोचन की क्रिया करवा रहा था । इसलिए मैंने गुरुदेव को और डोम बाबा को कार्य की सफलता और सभी प्रकार की त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थना की । हाथों मे जल भर के उनके चरणों में समर्पित किया और पूजन को समाप्त किया । इस बीच में जटाशंकर ने बात करने की कोशिश की तो मैंने उसे इशारे से मना कर दिया ।

ऊपर काल के जितने अंश की बात मैंने की है उन सारे का पूजन शाप मोचन प्रयोग के दौरान किया जाता है । हमारा सनातन धर्म यह मानता है कि आत्मा अनश्वर है । वह अनंत काल से अपनी यात्रा करती हुई चली आ रही है । काल के समस्त खंडों में किए गए पापों को क्षमा करने की प्रार्थना संबंधित कालखंड से महाकाल के स्वरूप के रूप में की जाती है ताकि उस आत्मा के द्वारा संचित पापों का क्षय हो सके । इस प्रकार के प्रयोग उन पापों की और दोषों की तीव्रता को कम करते हैं । जिसके बाद मंत्र जाप करने से विपरीत परिस्थितियों में लाभ मिलता है ।

पूजन सम्पन्न हो जाने के बाद आधे घंटे तक हवन का कार्यक्रम चला ।

इसके बाद दोनों को कमर तक जल में नदी में खड़ा करके तर्पण संपन्न करवाया ।

इस प्रकार से लगभग ग्रहण काल के अंदर अंदर सारी क्रियाएं पूर्ण हो चुकी थी ।

जटाशंकर उस महिला के बारे में जानने को जितना उतावला था ....

मैं भी उससे कम उतावला नहीं था । ग्रहण काल अभी चल रहा था । उस समय 12 बज कर 10 मिनट हुए थे अर्थात अभी लगभग सवा घंटे का समय ग्रहण का और बचा हुआ था ।

ग्रहण काल के पूरे समय का उपयोग मंत्र जाप में करना चाहिए ...
मेरे गुरुदेव ने मुझे बताया था कि ग्रहण काल में किए गए मंत्र जाप का हजार गुना फल मिलता है । अर्थात अगर आप ग्रहण काल में एक मंत्र जाप करते हैं तो उसकी प्रभावशीलता हजार बार मंत्र जाप करने के बराबर हो जाती है ।

ग्रहण काल था.....

मुझे भी कुछ मंत्र जाप करने थे !

जो मैं अकेले में करना चाहता था ।

उसके लिए जरूरी था कि जटाशंकर को तथा उस महिला को किसी दूसरी साधना में व्यस्त किया जाए ताकि मैं अपनी साधना कर सकूं....

मैंने दोनों को बताया कि ग्रहण काल पूरा होने में अभी समय है ! इसलिए आप दोनों मंदिर परिसर के पास बैठ कर भगवान शिव के मंत्र का जाप करिए !

तब तक मैं अपने कुछ कार्य करके आता हूं ।

दोनों ने सहमति में सिर हिलाया और मंदिर की ओर चले गए ....

मैंने नदी में डुबकी लगाई और नदी के दूसरी ओर जंगल की तरफ निकल गया । डोम बाबा ने मुझे ग्रहण काल में महाकाली के एक उग्र स्वरूप "कृत्या" का मंत्र जाप करने का निर्देश दिया था ।

संभवत वे जानते थे कि इस पूजन के पश्चात मेरे पास समय बचेगा । अब लगभग 50 मिनट का समय बचा हुआ था ।

मैं आगे बढ़ता हुआ लगभग एक डेढ़ किलोमीटर आगे आ चुका था ।

सामने कुछ धुआँ सा दिखाई दे रहा था...

मेरे कानों में कपालिनी का स्वर गूंजा - आगे श्मशान है ! वही बैठना है !!

वह किसी गांव का श्मशान शासन था ...
ग्रहण काल की वजह से संभवत : !
वहां पर कोई भी नजर नहीं आ रहा था । एक चिता जल रही थी । मैं उसके पास जाकर बैठ गया ।
ध्यान लगाया और संकेत मिला कि चिता उपयुक्त है ।

हर साधना का अपना-अपना एक ड्रेस कोड होता है । पीले रंग के वस्त्र पहनकर शमशान साधना नहीं की जा सकती इसलिए मैं वस्त्र मशान की परिधि के बाहर उतार के रख चुका था ।

चिता भस्म का लेप लगाकर माथे और निर्धारित स्थानों पर त्रिपुंड बनाकर मैं चिता के सम्मुख बैठ गया ।

डोम बाबा के द्वारा बताए गए निर्देशानुसार मंत्र का जाप करने लगा । इसके पहले मैंने रक्षा चक्र भी बना लिया था ।

पिछली कथाओं के माध्यम से आप लोग भी जानते होंगे कि श्मशान साधना में रक्षा चक्र सबसे महत्वपूर्ण कार्य होता है । रक्षा क्षेत्र की प्रबलता साधना में आने वाले विघ्नों को रोकने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । श्मशान साधनाओं मे अगर आपका रक्षा चक्र कमजोर है तो आप यह मानकर चलें कि आपकी साधना के सफल होने के चांसेस 50% से भी कम हो जाते हैं ।

कृत्या साधना करने के कई प्रकार है ! उनमें से सबसे खतरनाक और जटिल प्रकार होता है श्मशान साधना करने का !

कृत्या का मतलब होता है आपके अंदर की शक्तियों को ही आप एक मानवीय स्वरूप या देवी स्वरूप या आकृति प्रदान करते हैं । उस की प्रबलता और प्रचंडता दोनों आपकी यानि साधक की अपनी क्षमता पर निर्भर करते हैं ।

श्मशान साधक दुनिया के सभी प्रपंचों से दूर रहता है । इसके बावजूद कई बार ऐसी स्थितिया आ जाती है जब उसे अपने अस्त्रों का प्रयोग भी करना पड़ता है ।

उदाहरण के लिए जब मारण प्रयोग सामने आ जाएं और अन्य सौम्य शक्तियां काम नहीं करती हैं वहां पर साधक के अंदर उग्र साधना की शक्तियां भी होनी चाहिए अन्यथा वह कमजोर पड़ सकता है और उसे नुकसान भी हो सकता है ।

उदाहरण से समझाऊँ तो मान लीजिए कि मैं योग विद्या में महारत हासिल कर चुका हूं तो बंदूक की गोली मुझ पर असर नहीं करेगी यह नहीं कहा जा सकता !
बंदूक की गोली से बचने के लिए मुझे बुलेट प्रूफ जैकेट भी पहननी पड़ेगी ।
अगर मैं मुकाबला करना चाहता हूं तो मेरे पास बंदूक भी होनी चाहिए ।
इसे आप एक छोटे से देश इजराइल से तुलना करके ले सकते हैं । इजराइल चारों तरफ से दुश्मन देशों से घिरा हुआ है । जिनका आपस में कुछ न कुछ टकराव होता रहता है । यदि आकार की बात करें तो इजराइल अपने

दुश्मनों के भौगोलिक आकार की तुलना में मुश्किल से 5 या 10 परसेंट के आकार का होगा । उसके बावजूद पिछले कई सालों से वह अपनी प्रहारक क्षमता और रक्षक क्षमता की बदौलत अपने आप को बचाता आ रहा है ।
ठीक यही साधक के साथ भी होता है ।
इसलिए डोम बाबा ने मुझे इस साधना को करने की आज्ञा दी थी .....

रक्षाचक्र बनाने के बाद मैंने मंत्र जाप प्रारंभ किया । जैसे-जैसे मेरा मंत्र जाप आगे बढ़ता जा रहा था मुझे अपने शरीर में तीव्र गर्मी का आभास हो रहा था । ऐसा लग रहा था जैसे मेरा शरीर जल रहा हो । उसमें से धुआं सा निकल रहा हो । यह आभास मंत्र जाप के बढ़ते बढ़ते तीव्र होता चला गया .....

लगभग 20 मिनट के मंत्र जाप के बाद मुझे अपने शरीर से धुआँ निकलता हुआ दिखने लगा.....

कुछ देर के बाद.....

मेरे शरीर के सभी हिस्सों से थोड़े-थोड़े अंश में काले रंग का धुआं निकल कर उस चिता के ऊपर मेरे सामने एक आकृति का निर्माण होने लगा ।

यह आकृति लगभग मेरे ही आकार की थी ।
उन्होंने जो मंत्र दिया था उसकी मुझे ग्यारह मालाएं करनी थी । जो मैं पूर्ण कर चुका था ।

धीरे धीरे उस आकृति मे मुझे भगवती महाकाली का आभास होने लगा ।

काला धुआं धीरे-धीरे आकार लेते हुए महाकाली के स्वरूप जैसा दिखने लगा .....

मैंने उनको साष्टांग दंडवत प्रणाम किया !
मशान अट्टहास से गूंज उठा !
मेघ गर्जना जैसी आवाज गूंजी - उठ !
मैं उठ कर बैठ गया !
सामने चिता के ऊपर वह काले रंग से बना हुआ स्वरूप पूरी तरह से भगवती महाकाली के बिम्ब में परिवर्तित हो चुका था ...

लाल-लाल आंखें ....
लपलपाती हुई जीभ !
नर मुंडो की माला धारण किए हुए.....

भगवती महाकाली का प्रचंड स्वरूप सामने मौजूद था ...
मैं भिक्षापात्र मुद्रा बनाकर जगदजननी के सामने खड़ा था .....
गहन गंभीर स्वर गूँजा - आज से यह कृत्या तेरे शरीर में वास करेगी ! जब आवश्यकता होगी यह तेरा कार्य संपन्न करेगी ....

इतना कहकर वह आवाज शांत हो गई ....
चिता के ऊपर खड़ी हुई वह आकृति उतरकर मेरी तरफ बढ़ी ...
वह मेरे शरीर के पास आ गई और मेरे शरीर में विलीन हो गई !

जैसे ही वह आकृति मेरे शरीर में समाई मुझे जबरदस्त बिजली के झटके जैसा आभास हुआ और मैं भरभरा कर अपने आसन में गिर गया.....

लगभग 5-10 मिनट तक मैं बेहोशी जैसी हालत में रहा होऊँगा...
फिर मुझे होश आया !

मेरा पूरा शरीर किसी भट्टी की तरह तप रहा था । मैंने वापस नदी में डुबकी लगा दी ।

नदी के पानी से गर्मी में थोड़ी सी राहत महसूस हुई । पूरा शरीर बुखार जैसी गर्मी महसूस कर रहा था !

ऐसा प्रतीत हो रहा था कि कम से कम एक सौ दो डिग्री टेंपरेचर शरीर का हो ....

लगभग दस मिनट मैं पानी के अंदर ही पड़ा रहा तब जाकर थोड़ी राहत महसूस की ...

उसके बाद लगभग 11-12 दिनों तक मेरे शरीर का तापमान वैसा ही रहा ।
दिन में चार पांच बार नहाने के बावजूद बावजूद शरीर किसी भट्टी की तरह गर्म लगता था ।

कपड़े पहनना तक नहीं सुहाता था .....

ऑफिस से आने के बाद मे घर मे लगभग दिगंबर ही रहता था .....

जैसे ही ताप बढ़ा स्नान किया और फिर गीले गमछे मे ही घर मे घूमता ...

जो भी मुझसे हाथ मिलाता था वह मुझसे यह जरूर पूछता कि क्या तुम को बुखार है ?
अब मैं उनको क्या बताता कि मुझे किस प्रकार का बुखार है .....
खैर ....
लगभग ढाई बजे के आसपास में वापस मंदिर के प्रांगण में पहुंच गया ...
वहां भीड़ लग गई थी । मैं आश्चर्य में था कि अचानक ऐसा क्या घटित हो गया जिसकी वजह से भीड़ लगी हुई है ।
किसी तरह से मैंने अंदर जाकर देखा तो वहां वैशाली बेहोश पड़ी हुई थी और जटाशंकर पानी छिड़ककर उसे उठाने की कोशिश कर रहा था ....

जटाशंकर ने बताया कि मंदिर पहुँचते तक उसके और जटाधारी महिला के बीच में जान-पहचान हो गयी थी...

मेरे ख्याल से आप लोग भी समझ गए होंगे कि वह जटाधारी महिला थी ! ..... वैशाली !

जटा आगे बोला - मैं और वैशाली दोनों मंत्र जाप करने के लिए मंदिर के प्रांगण में बैठे हुए थे । लगभग एक घंटे तक हम दोनों मंत्र जाप में लगे रहे ।

उसके बाद अचानक वैशाली उठकर नृत्य करने लगी.....

लगभग आधे घंटे तक वह कूद कूद कर नृत्य करती रही ....

उसका नृत्य देखकर लोगों की भीड़ जमा हो गई ....

मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं ? क्योंकि उसका नृत्य इतना अजीब होते हुए भी बेहद आकर्षक नृत्य था ....

ऐसा लग रहा था जैसे साक्षात शिव नृत्य कर रहे हो ।

न जाने कहां से एक साधु आकर डमरु बजाने लगा और कुल मिलाकर माहौल बेहद सुखद सा हो गया था ।

आखिर में उस साधु ने हर हर महादेव का नारा लगाया और जोर का हुंकारा भरा .... उसका हुंकारा किसी सिंह की गर्जना के जैसा तीव्र था ...
सभी लोग स्तब्ध होकर खड़े हो गए ....

फिर उसने अपनी झोली में हाथ डाला !
भस्म हाथ में निकाला और उस पर जोर की फूंक मारी .....
वह भस्म चारों तरफ बिखर गई.....
कुछ सेकंड बाद जब भस्म की धुंध छँटी .....
तो....
वैशाली जमीन पर पड़ी हुई थी.....
और वह साधू गायब था ....

भगवान शिव अपने भक्तों को अलग-अलग स्वरूपों में दर्शन देते हैं । उनकी माया वही जाने .....

तब तक वैशाली को भी होश आ गया था ....
हमने उससे पूछा कि क्या हुआ ?

वैशाली बोली - मेरा मंत्र जाप चल रहा था । अचानक मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे रीढ़ की हड्डियों मे कोई विद्युत की तरंग सी उछल गयी और मैं अचानक नृत्य करने लगी ।

तभी मुझे अपने सामने डमरु बजाते हुए बाबा दिखने लगे....
मैं और उत्साह से नृत्य करने लगी .....
फिर अचानक मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे दोनों भौंह के बीच मे कोई तीव्र आघात हुआ हो .....

उसके बाद जब होश आया तो आप लोग पानी छिड़क रहे थे ....

धीरे धीरे भीड़ छट गई !
दस पंद्रह मिनट में वैशाली भी सामान्य हो गई है । कुछ देर तक इधर-उधर की बातें हुई ।
फिर हम लोग एक जूस की दुकान पर मौसम्बी जूस पीने बैठे ।

थोड़ा संयत होने के बाद वैशाली ने अपनी कहानी सुनाई ।

वह बोली - मैं कल रात भगवान शिव का ध्यान करके सोई थी । इस समय मन में यही भाव आ रहा था कि साधना के क्षेत्र में मुझे आगे बढ़ना है । मैंने बाबा से प्रार्थना की कि मुझे कोई मार्गदर्शन उपलब्ध कराइए । लगभग रात बारह बजे मुझे नींद आ गई ...

सपने में आप दोनों इसी प्रकार बैठे हुए दिखाई दिए । मैं आप दोनों को नहीं जानती थी । इसलिए हड़बड़ा कर उठ बैठी ....

लगभग आधा पौन घंटे के बाद नींद लगी ....
तो दोबारा से यही सपना आया, लेकिन इस बार मैं आप दोनों के साथ पूजा में बैठी हुई थी ।
मैं पहले भी राजिम आ चुकी हूं !
इसलिए मुझे पता चल गया कि यह यही का दृश्य है ।
फिर मेरी नींद खुल गई ...
सुबह पाँच बजे के आस पास वही सपना मुझे तीसरी बार आया !

तीसरी बार सपना आया तो मुझे लगा मुझे राजिम आना चाहिए और मैं नहाकर तैयार होकर निकल पड़ी ।

यह इलाका काफी बड़ा है और बहुत सारे लोग अपने अपने पूजन कार्य में व्यस्त हैं । इनके बीच में आप लोगों को ढूंढना भी थोड़ा सा मुश्किल कार्य था । इसलिए मैं चारों तरफ नजर दौडाते दौडाते आ रही थी । तभी आप दोनों पर मेरी नजर पड़ी और मैं समझ गई कि मुझे आप लोगों के साथ ही पूजा संपन्न करनी है । फिर भी .... संकोच लग रहा था कि अनजान आदमी के पास जाकर मैं क्या बोलूंगी ।

मेरे आते ही आपने बैठने का इशारा किया । तो मैं समझ गई कि आप भी इस बारे में जानते हैं....
इसके बाद कुछ बातें हुई और जटाशंकर और मैं वापस आ गये । वैशाली भी अपने घर चली गई।
वैशाली और जटाशंकर के बीच में जिस प्रकार से बातें हो रही थी । वह मुझे उनके भविष्य का संकेत दे रही थी । दोनों इस प्रकार से बात कर रहे थे जैसे वे काफी दिनों से एक दूसरे को जानते हो । कालांतर में मेरी सोच सत्य साबित हुई । उस पर मैं आगे प्रकाश डालूंगा ...

अगर आप अपने आसपास नजर डालें तो आपको बहुत सारे ऐसे लोग दिखाई देंगे जो विवाह करने के सर्वथा योग्य होते हुए भी अविवाहित हैं ....
कुछ लोगों का धन, यौवन स्वास्थ्य किसी भी चीज की कमी न रहते हुए भी विवाह नहीं होता है ।

वही आप पाएंगे कि शरीर के अंग से विहीन व्यक्ति, भयानक रोग से ग्रसित व्यक्ति, भीख मांग कर जीवन गुजारने वाले व्यक्ति का भी विवाह हो जाता है । यानी यह विवाह की जो टेक्नोलॉजी है या इसका जो फंडा है वह बेहद विचित्र है ....

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है की इसके संबंध में कुछ भी नहीं कहा जा सकता ....

यह अपने आप में एक विचित्र विषय है .....
जिसका नियम कानून सब बिल्कुल अलग है ।
अस्तु.....

विवाह एक ऐसी स्थिति है जो हमारे भारत में पूर्व लिखित माना जाता है !

ऐसा कहा जाता है कि जोड़ियां प्रभु स्वयं बना कर भेजते हैं ।

अब इसमें कितनी सच्चाई है ?
यह एक अलग बिंदु है ।
उस पर मैं नहीं जाना चाहता ....

विवाह के जितने तरीके सनातन धर्म में मौजूद हैं वह शायद ही किसी और धर्म में मौजूद हो ।

अब आप कहेंगे यह बिलकुल नई बात है । आइये देखते हैं ....

हमारे यहां कई प्रकार के विवाह प्रचलित थे । जब इन विवाहों की प्रक्रिया तथा पद्धतियां बनी उस समय सामाजिक परिस्थितियां अलग थी ।

वर्तमान समय में सामाजिक परिस्थितियां बिल्कुल अलग है । इसलिए इसमें से सभी प्रकार के विवाह का समाज में मान्यता मिलना असंभव है ।

जिस जिस प्रकार से एक पुरुष और एक स्त्री के बीच में संबंध हो सकता है उसे विवाह का स्वरूप मानते हुए इन विवाह के प्रकारों की व्याख्या की गई है ।

जिनका वर्तमान समय के अनुरूप विवेचन कर रहा हूं ताकि आप उसे ज्यादा सहजता से समझ सके :-

1. ब्रह्म विवाह

आज हम जो विवाह का स्वरूप देखते हैं उसमें आमतौर पर लड़की के माता-पिता और लड़के के माता पिता के द्वारा वर और वधू को पसंद किया जाता है । दोनो पक्ष की सहमति से सुयोज्ञ वर से कन्या का विवाह निश्चित कर देना 'ब्रह्म विवाह' कहलाता है। सामान्यतः इस विवाह के बाद कन्या को आभूषणयुक्त करके विदा किया जाता है। आज का "व्यवस्था विवाह" 'ब्रह्म विवाह' का ही रूप है।

2. दैव विवाह

देव कार्य का मतलब होता है किसी विशेष प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान इस प्रकार केधार्मिक अनुष्ठान कई आवश्यकता ओं के लिए किए जाते थे जिनमें राज्य में शत्रु बाधा से निवारण से लेकर वर्षा के लिए किए जाने वाले अनुष्ठान तक बहुत सारी चीजें हुआ करती थी । इस प्रकार के किसी धार्मिक अनुष्टान से प्रसन्न होकर अपनी कन्या को दान में दे देना 'दैव विवाह' कहलाता है। इस प्रकार के विवाह विद्वान यज्ञ करता के पांडित्य को देखकर भी संपन्न किए जाते थे क्योंकि इस प्रकार के विशिष्ट अनुष्ठानों को करने की योग्यता को एक श्रेष्ठ विद्वान का लक्षण माना जाता था और ऐसे विद्वान को अपनी पुत्री देना पिता अपना सौभाग्य समझता था ।

3. आर्य विवाह

कन्या-पक्ष वालों को कन्या का मूल्य दे कर (सामान्यतः गौदान करके) कन्या से विवाह कर लेना 'आर्य विवाह' कहलाता है । जिस प्रकार से वर को दहेज देकर विवाह संपन्न कराया जाता है यह उसका ठीक उल्टा माना जा सकता है । हमारे देश में कई प्रांतों में इस प्रकार के

देव कार्य का मतलब होता है किसी विशेष प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान इस प्रकार केधार्मिक अनुष्ठान कई आवश्यकता ओं के लिए किए जाते थे जिनमें राज्य में शत्रु बाधा से निवारण से लेकर वर्षा के लिए किए जाने वाले अनुष्ठान तक बहुत सारी चीजें हुआ करती थी । इस प्रकार के किसी धार्मिक अनुष्टान से प्रसन्न होकर अपनी कन्या को दान में दे देना 'दैव विवाह' कहलाता है। इस प्रकार के विवाह विद्वान यज्ञ करता के पांडित्य को देखकर भी संपन्न किए जाते थे क्योंकि इस प्रकार के विशिष्ट अनुष्ठानों को करने की योग्यता को एक श्रेष्ठ विद्वान का लक्षण माना जाता था और ऐसे विद्वान को अपनी पुत्री देना पिता अपना सौभाग्य समझता था ।

3. आर्य विवाह

कन्या-पक्ष वालों को कन्या का मूल्य दे कर (सामान्यतः गौदान करके) कन्या से विवाह कर लेना 'आर्य विवाह' कहलाता है । जिस प्रकार से वर को दहेज देकर विवाह संपन्न कराया जाता है यह उसका ठीक उल्टा माना जा सकता है । हमारे देश में कई प्रांतों में इस प्रकार के

विवाह प्रचलित है । कई आदिवासी समुदायों में भी इस प्रकार के विवाह संपन्न होते हैं ।

4. प्रजापत्य विवाह

कई परिवारों में कन्या की सहमति विवाह के लिए आवश्यक नहीं मानी जाती और माता-पिता जिस वर को योग्य मान लेते हैं उसके साथ कन्या का विवाह कर दिया जाता है । कन्या की सहमति के बिना उसका विवाह योग्य वर से कर देना 'प्रजापत्य विवाह' कहलाता है।

5. गंधर्व विवाह

वर्तमान समय में इसे प्रेम विवाह कहा जाता है । इसमें वर और कन्या एक दूसरे को आपस में जानते हैं और पसंद कर लेते हैं तथा एक दूसरे का जीवन साथी बनने के लिए सहमत हो जाते हैं । परिवार वालों की सहमति के बिना वर और कन्या का बिना किसी रीति-रिवाज के आपस में विवाह कर लेना 'गंधर्व विवाह' कहलाता है। दुष्यंतने शकुन्तलासे 'गंधर्व विवाह' किया था। मंदिर में किए जाने वाले विवाह इस श्रेणी के माने जा सकते हैं ।

6. असुर विवाह

कई स्थानों में कन्या की कमी हो जाती है ऐसी स्थिति में जब योग्य कन्या उपलब्ध नहीं होती तब वर पक्ष द्वारा किसी प्रकार का आर्थिक प्रतिफल देखकर कन्या के माता-पिता से कन्या को प्राप्त कर लिया जाता है और उसके पश्चात उससे विवाह कर लिया जाता है । कन्या को खरीद कर (आर्थिक रूप से) विवाह कर लेना 'असुर विवाह' कहलाता है।

7. राक्षस विवाह

एक तरफा सहमति से भी कई बार विवाह संपन्न होते हैं कुछ क्षेत्रों में यह देखा गया है कि पुरुषों द्वारा स्त्रियों का अपहरण कर लिया जाता है और उसके बाद उनसे विवाह किया जाता है । कन्या की सहमति के बिना उसका अपहरण करके जबरदस्ती विवाह कर लेना 'राक्षस विवाह' कहलाता है।

8. पैशाच विवाह

वर्तमान समय में वीडियो क्लिप बनाकर या किसी भी पीने वाले ड्रिंक में दवाई डाल कर लड़कियों से संबंध बना लिया जाता है और उन्हें अपनी बात मानने के लिए

विवश किया जाता है । इन दवाओं को पार्टी ड्रग कहा जाता है । यह दवाएं मानसिक विवेक को समाप्त कर देती हैं । साथ ही कामोत्तेजना को कई गुना बढ़ा देती हैं । जिसके चलते लड़की संबंध बनाने के लिए राजी हो जाती है । ऐसी कई कहानियां आपने सुनी होंगी । कन्या की मदहोशी (गहन निद्रा, मानसिक दुर्बलता आदि) का लाभ उठा कर उससे शारीरिक सम्बंध बना लेना और उससे विवाह करना 'पैशाच विवाह' कहलाता है।

कुल मिलाकर सनातन धर्म में हर संभावित पुरुष स्त्री संबंध या विवाह की तदनुसार व्याख्या की गई है ।

हमारे शास्त्रों में 16 प्रकार के संस्कार माने गए हैं जिसमें से 14 वे क्रम में विवाह संस्कार आता है ...

जटाशंकर और वैशाली इसके बाद आपस में मिलते रहे और अंततः उन्होंने विवाह करने का निश्चय कर लिया ।

इसके पीछे भी बहुत कुछ घटा जो आपको आगे बताऊंगा ....

सेवक बद्री बाहर आ चुका था वह मुझे अपने साथ लेकर अंदर ले गया ।

मुझे शंका हुई ...

जटाशंकर बाहर नहीं आया...

उसके साथ कुछ गड़बड़ तो नहीं हुई यही सोचते-सोचते मैं उसके कमरे में पहुंचा ...

वह बिस्तर पर लेटा हुआ था.....

मुझे देखकर उसने मुस्कुराने की कोशिश की लेकिन साफ दिख रहा था कि उसको पीड़ा हो रही थी ....

बद्री ने मेरे लिए कुर्सी लगाई और चाय लाने के लिए चला गया ।

मैं जटाशंकर के बगल में बैठ गया और पूछा - क्या हुआ ?

उसने बताया - पूरे शरीर में दर्द हो रहा है .....

ऐसा लग रहा है.....

जैसे कोई पूरे शरीर में सुइयां चुभो रहा हो ....

मैंने पूछा - ऐसा कब से हो रहा है ?

सेवक बद्री बाहर आ चुका था वह मुझे अपने साथ लेकर अंदर ले गया ।

मुझे शंका हुई ...

जटाशंकर बाहर नहीं आया...

उसके साथ कुछ गड़बड़ तो नहीं हुई यही सोचते-सोचते मैं उसके कमरे में पहुंचा ...

वह बिस्तर पर लेटा हुआ था.....

मुझे देखकर उसने मुस्कुराने की कोशिश की लेकिन साफ दिख रहा था कि उसको पीड़ा हो रही थी ....

बद्री ने मेरे लिए कुर्सी लगाई और चाय लाने के लिए चला गया ।

मैं जटाशंकर के बगल में बैठ गया और पूछा - क्या हुआ ?

उसने बताया - पूरे शरीर में दर्द हो रहा है .....

ऐसा लग रहा है.....

जैसे कोई पूरे शरीर में सुइयां चुभो रहा हो ....

मैंने पूछा - ऐसा कब से हो रहा है ?

जटा बोला - कल रात से मुझे थोड़ी थोड़ी तकलीफ हो रही थी हाथ पैर में दर्द जैसी .... थोड़ा बुखार भी था मैंने सोचा कि सर्दी जुकाम या वायरल होगा इसलिए क्रोसिन खाकर सो गया ...

सुबह उठा तो सब ठीक लग रहा था लेकिन जब दोपहर को खाना खा कर लेटा तो दर्द फिर से उठने लगा ।

बद्री डॉक्टर को बुला कर लाया उसने टेंपरेचर चेक किया और वायरल बुखार की संभावना बता कर एंटीबायोटिक और क्रोसिन देकर चला गया मैं दवा खा कर लेट गया .....

दर्द के मारे नींद नहीं आ रही थी !
तभी ,,,,,
मैंने देखा कि काले रंग का एक व्यक्ति मेरे बिस्तर के चारों तरफ घूम रहा है...
वह धुए जैसा था और लगभग 10 फुट की ऊंचाई का था ... उसके हाथ में एक अजीब सा डंडे जैसा हथियार भी था ।

वह उस डंडे से मुझे मारने की कोशिश करता था ।
लेकिन वह डंडा मुझ तक पहुंच नहीं पाता था । बीच में
ऐसा लगता था जैसे कोई उसे रोक लेता था ।

ऐसा लग रहा है जैसे कोई शक्ति आड़े आ जा रही है ...

जैसे ही वह डंडा मेरे शरीर की तरफ बढ़ता मुझे अपने
शरीर के उस हिस्से में तेज दर्द की अनुभूति होती थी ।
उस डंडे के आकार के हिसाब से अगर चोट लगती ,
तो उस जगह की हड्डी चकनाचूर हो जाती , क्योंकि वह
आकृति और उसका हथियार दोनों ही विशालकाय थे ।

उसे देखने के बाद मुझे लगा यह कोई बीमारी नहीं है
बल्कि कुछ गड़बड़ है ! तभी मुझे तुम्हारा ख्याल आया
और तुम को फोन लगाया ....

जो लक्षण जटाशंकर बता रहा था....
वह प्रेत बाधा के लक्षण थे.....
वह भी गंभीर प्रेत बाधा के ....

जटाशंकर ने अभी अभी लगभग 4 महीने तक मंत्र जाप किया हुआ था । इस मंत्र जाप से उसके शरीर के अंदर जो आध्यात्मिक ऊर्जा पैदा हुई थी वह उसकी रक्षा करने के लिए उसके चारों तरफ घेरा बना रही थी ... जिसकी वजह से प्रहार की तीव्रता कम हो जा रही थी ....

जैसा कि आप लोग जानते हैं कि इस प्रकार की परिस्थिति में कपालिनी ही मेरी सहायक बनती है । उस दिन भी मैंने उसी से समस्या के विषय में जानकारी मांगी...

मेरे कानों में आवाज गूंजी - "अब्दुल राशिद"

यह नाम मेरे लिए जाना पहचाना था ।
यह जटाशंकर का मुनीम था । वही उसके पूरे कामकाज की देखभाल करता था । अब्दुल रशीद जटाशंकर और मैं एक ही क्लास में पढ़ते थे । अब्दुल के पिताजी जटाशंकर के पिता जी के यहां काम करते थे । वह ड्राइवर थे । इसके साथ-साथ वह खदान में ब्लास्ट करने का काम भी करते थे ।

जैसा कि मैंने आपको बताया था देशमुख परिवार का व्यापार और व्यवसाय कई तरह का और कई क्षेत्रों में बिखरा हुआ था । उनके पास पत्थर की खाने भी थी ।

खानों से पत्थर निकालने के लिए ब्लास्ट करना पड़ता है । ब्लास्ट करने के लिए पत्थर में छेद किया जाता है और उसके अंदर बारूद भर के फिर उसे उड़ाया जाता है । इससे पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़े हो जाते हैं और फिर उनको तोड़कर छोटे पत्थरों में बदला जाता है ।

ऐसे ही एक ब्लास्ट के दौरान उनके सिर पर पत्थर का एक टुकड़ा आकर लगा और उनकी मृत्यु हो गई । उस समय सुरक्षा उपकरण इतने ज्यादा उपलब्ध भी नहीं थे और लोग जागरूक भी नहीं थे । इसके चलते बहुत सारी दुर्घटनाएं होती थी ... ब्लास्टिंग के दौरान कई लोगों को चोट भी लगती थी ...
कई लोगों की मृत्यु हो जाती थी । यह भी उसी प्रकार की घटना थी ....

अब्दुल के पिताजी की मृत्यु के लगभग 3 महीने के बाद उसकी माता जी को भी ब्रेन मलेरिया हो गया ।

इसकी शुरुआत में बुखार आता है । उन्होंने उसे सामान्य बुखार समझा । लेकिन एक दिन उनका सिर एक तरफ लटकने लगा । तब मामले की गंभीरता का एहसास हुआ ....
उन्हें अस्पताल ले जाया गया । लेकिन तब तक देर हो चुकी थी और उन्हें बचाया नहीं जा सका ।

उस समय अब्दुल लगभग 10 साल का रहा होगा ।

मां-बाप दोनों के गुजर जाने के बाद उसकी सभी जरूरतें अब जटा के पिताजी पूरी किया करते थे । वह हमारे साथ स्कूल भी जाता और बाकी समय में घर के छुटपुट काम भी किया करता था । जटा के पिता जी ने 12 वीं के बाद उसे मुनीम का काम दे दिया था ।
वह अपने काम में बहुत तेज था ।
पिछले 10-12 सालों से इस काम में अपनी निपुणता दिखा रहा था ।
जटा के पिताजी और उसके बाद जटाशंकर भी उसके ऊपर पूरा विश्वास रखता था और सारा काम वही देखता था ।

अब्दुल को मैं भी काफी अच्छे से जानता था क्योंकि हम लोग साथ पढ़े थे । हम तीनों आपस में दोस्तों की तरह ही व्यवहार करते थे । यह अलग बात है कि वह जटा का मुलाजिम भी था.....

मैंने बद्री से पूछा - अब्दुल कहां है ?

बद्री बोला - परसों भैया जी और वे दोनों साथ गए थे और काफी देर से लौटे थे । उसके बाद उनको नहीं देखा । आप बोलो तो बुलवा लेता हूं ...

मैंने कहा - हां बुलवा लो ।

लगभग आधे घंटे में अब्दुल हाजिर हो गया ।

मैंने अब्दुल से पूछा- तुम लोग परसों कहां गए थे ?
वह थोड़ा झिझका ! फिर बोला - हम लोग पीर बाबा की मजार पर गए थे ।

मैंने पूछा - वहाँ क्या किया ?
अब्दुल बोला - कुछ नहीं !
मैं समझ गया कि बाबू कुछ छुपा रहा है ।

मै बोला - देख अब्दुल ! तू सच सच बता क्योंकि जटा परेशानी में है । उसको प्रेत परेशान कर रहा है ।

अब्दुल के चेहरे पर तनाव के भाव उभरे और वह बोला - मैंने बोला था इसको ! पर यह नहीं माना । मजार के बाजू वाले पेड़ के पीछे बैठकर इसने पेग मारा । मुझे भी लेने के लिए बोला था, लेकिन मैंने मना कर दिया ।

अब सारी बात मेरी समझ में आ गई थी । मजार आमतौर पर ऐसे लोगों की बनाई जाती है जो मनुष्य योनि का त्याग कर चुके होते हैं लेकिन उनके लिए स्थान बनाया जाता है । एक तरह से वह प्रेतात्मा के लिए दिया गया स्थान होता है । इसलिए वहां पर अन्य इतर योनियाँ भी उपस्थित रहती है । उन्हीं में से कोई क्रोधित होकर जटा की परेड ले रहा था ।

मृत आत्माओं के लिए सनातन धर्म में श्मशान की व्यवस्था होती है । वहां पर अनेक प्रकार की आत्माएं विचरण करती रहती है ऐसा माना जाता है ।

इनमें से कई आत्माएं अतृप्त होती है और किसी माध्यम की तलाश में रहती हैं । जिसके द्वारा अपनी अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति कर सकें ।
छोटे बालक बालिकाएं और सुकोमल मन वाली महिलाएं इसके लिए सबसे आसान माध्यम होती हैं । इसी कारण से छोटे बालक को और महिलाओं को श्मशान या कब्रिस्तान में जाने से मना किया जाता है । उन्हे मजारों पर भी नहीं जाना चाहिए ।

श्मशान से निकलने पर हाथ पैर धोने और घर आने पर स्नान आदि की जो परंपरा है वह इसी लिए है ताकि किसी प्रकार की सूक्ष्म शक्ति अगर साथ में आ गई हो तो वह शांत हो जाए ।

इसके अलावा मृत शरीर को यथासंभव घर से जल्दी से जल्दी श्मशान घाट पहुंचाने की कोशिश की जाती है । इसके पीछे प्रमुख कारण यही रहता है कि शरीर से मुक्त हो चुकी आत्मा जो अब इतर योनि की हो चुकी है वह किसी को परेशान ना करें । इस समय में पूजा-पाठ आदि भी बंद कर दिया जाता है ताकि वह आत्मा

सरलता से इस लोक से बाहर निकल कर अपने लोक को चली जाए ।

इसी प्रकार से कब्रिस्तान भी इतर योनियों के लिए निर्धारित जगह है । मजार भी उसी का एक स्वरूप है क्योंकि वह भी किसी की कब्र है । अर्थात एक ऐसी जगह जहां पर हमने एक मृत आत्मा को ससम्मान स्थापित किया है ।

ऐसी जगह में अन्य आत्माएं भी उपस्थित रहती है क्योंकि वह स्थान आत्माओं को रहने के लिए हमने निर्धारित कर दिया है ।
इनमें भी कई प्रकार की आत्माएं होती है जो अपने अपने प्रवृत्ति के अनुसार विभिन्न प्रकार के व्यवहार और दुर्व्यवहार भी करती हैं ।

एक तरह से वह सिद्ध या पीर उन सारी आत्माओं का प्रमुख होता है । संभवत जटाशंकर के आचरण से पीर बाबा के मजार की ऐसी ही कोई आत्मा क्रोधित हो गई थी ।

उसकी शांति पीर बाबा के माध्यम से ही हो सकती थी क्योंकि गलती तो हुई थी .....

तो अगले दिन जटाशंकर के हाथों से स्पर्श करा कर फूल माला तथा कुछ अन्य सामग्री पीर बाबा की मजार पर अब्दुल ने ले जाकर चढ़ाई !

उसके एक-दो दिन के बाद जटाशंकर सामान्य स्थिति में आ गया ।

एक महीने के बाद चुनाव आ गया । जैसा कि आप लोग भी जानते होंगे की चुनाव में शासकीय कर्मचारियों की ड्यूटी लगती है । मेरी भी ड्यूटी लगी । चुनाव का कार्य चुनाव आयोग के निर्देश में होता है । उस समय किसी भी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाती है । अगर सरकारी कर्मचारी गड़बड़ करें तो उसकी बर्खास्तगी तक हो सकती है । इसलिए चुनाव की ड्यूटी लगने पर शासकीय कर्मचारी किसी मुस्तैद फौजी की तरह अपना कार्य पूरी श्रद्धा के साथ, पूरी क्षमता के साथ करते हैं ।

मेरी ड्यूटी बस्तर के आदिवासी इलाके में लगी थी । वहां की परिस्थितियों से आप लोग अवगत होंगे । कई स्थानों पर आवागमन के लिए सड़क नहीं है । इसलिए पैदल लंबी यात्रा करके हम लोग बूथ तक पहुंचे थे ।

वह जगह ऐसी थी कि यहां पर मोबाइल पर सिग्नल भी नहीं होता था । तीन-चार दिन वहां रहना था इसलिए आना जाना सब मिलाकर लगभग हफ्ते भर का समय लग गया ।

मत पेटी को जमा कराने तक जिम्मेदारी खत्म नहीं होती है और जगह छोड़ने की इजाजत भी नहीं होती । वापस आने के बाद मत पेटी जमा कराने के बाद जब घर पहुंचा तो ऐसा लग रहा था जैसे युद्ध करके घर लौटा हूं ....

नहा धोकर खाना खाकर सो गया । रात लगभग 8 बजे दरवाजे की घंटी बजी ! बड़े अनमने ढंग से उठकर मैंने दरवाजा खोला तो सामने अब्दुल खड़ा था । उसके चेहरे के भाव बता रहे थे कि कुछ गंभीर घटित हुआ है । मैंने उसको अंदर आने का इशारा किया ।

अंदर आने के बाद अब्दुल ने बताया - जटाशंकर की हालत बहुत ज्यादा खराब है । वह कल से हिचकियां भर रहा है ।

मुझे लगा कि जटाशंकर से नजदीकी की वजह से अब्दुल इतना ज्यादा परेशान हो रहा है वरना हिचकी आना कौन सी बड़ी बात है ।
खैर .... उसके साथ मैं गाड़ी मे बैठ मोतीलाल हॉस्पिटल पहुँच गया । वहां पहुंचने पर मुझे समझ में आया कि अब्दुल इतना विचलित क्यों था ?

जटाशंकर बिस्तर पर लेटा हुआ था ।
उसकी आंखें बंद थी ।
ग्लूकोस की बोतल लटकी हुई थी ।
पास में ही वैशाली भी चिंतित मुद्रा में बैठी हुई थी ।
उसकी बगल में जटा की माताजी भीगी आँखों के साथ बैठी थी । मुझे देखते ही दोनों मुझे पकड़कर रोने लगीं । यह सब देख कर मुझे अजीब सा लग रहा था क्योंकि मैं अब भी यही सोच रहा था कि हिचकी लगना कौन सी बड़ी बात है ?

इन दोनों का इस प्रकार रोना मामले की गंभीरता बता रहा था ...

यानी बात कुछ ज्यादा ही गंभीर थी ....

जटाशंकर बड़ी शांति से लेटा हुआ था इसलिए मुझे अभी बात समझ में नहीं आ रही थी ।

लगभग चार-पांच मिनट बीते होंगे .....

अचानक उसने हिचकियां लेना चालू कर दिया । वह रह रह कर हिचकियाँ ले रहा था ।

हिचकियां सामान्य नहीं थी.....

वह इतनी जोर से हिचकी ले रहा था कि पूरा का पूरा बिस्तर हिलता था !

उसका पूरा शरीर फड़फड़ा जाता था....

तब मेरी समझ में आया कि यह लोग इतने ज्यादा परेशान क्यों है ।

माताजी ने बताया - चार दिन पहले अचानक यह घर में गिर पडा । और बेहोश हो गया ।

तीन दिनों से इसको होश नहीं आया है । फिर अचानक से इसको हिचकियां भी चालू हो गई .....

इसकी हालत कल से ऐसी ही है ।

मैंने वैशाली की तरफ प्रश्नवाचक निगाहों से देखा तो वह बोली - डॉक्टर साहब भी समझ नहीं पा रहे हैं कि क्या हुआ है ?

लेकिन उनका कहना है कि यह हिचकियाँ बंद नहीं हुई तो दिक्कत बढ़ जाएगी ।

जटाशंकर की हिचकियां नॉनस्टॉप चल रही थी । ऐसा लग रहा था जैसे कोई टाइमर सेट कर दिया गया हो । एक निश्चित समय अंतराल के बाद उसको हिचकियां आती थी .....

इतनी जोर की हिचकियां आती थी कि आसपास के लोग भी घबरा जाते थे !

उसकी हिचकियां देखकर मुझे भी घबराहट महसूस होने लगी क्योंकि इतनी जोर की हिचकिया मैंने भी अपने जीवन में पहली बार देखी थी ।

मैंने डॉक्टर से मिलकर बात की उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति उन्होंने भी कभी नहीं देखी है , और इस प्रकार की हिचकियां मरीज के लिए प्राण घातक हो सकती हैं ।

समस्या बड़ी गंभीर थी !

इसका इलाज ढूंढना जरूरी था ।

जब अपना कोई संकट में हो तो उस समय दिमाग काम नहीं करता है ।
मेरे साथ भी वही स्थिति थी .....

मैं सोच में पड़ गया कि क्या किया जाए ?
यह आदमी तो अच्छा खासा था !
इसे न तो बीपी थी ....
और ना ही शुगर था ।
फिर अचानक यह क्या हो गया ?

मैं इसी उधेड़बुन में लगा हुआ था , तभी दिमाग में विचार आया कि कहीं इस पर कोई तांत्रिक प्रयोग तो नहीं हुआ है ?

यह विचार आते ही दिमाग में बत्ती सी जली ! अस्पताल एक ऐसी जगह है , जहां पर जाते ही आपको स्वास्थ्य का महत्व पता चलता है । अगर आप स्वस्थ है और अस्पताल गए हुए हैं , तो वहां के बिस्तर पर पड़े हुए पीड़ित मरीजों की अवस्था को देखकर आपको स्वयं के भाग्यशाली होने का एहसास अवश्य होगा । बीमारी और दर्द के ऐसे ऐसे स्वरूप आपको देखने मिलेंगे जिन्हें

देखकर आपके अंदर वैराग्य का भाव भी उदित हो जाएगा । इस जीवन में कितनी पीड़ा और कितना दुख है यह देख कर अंतर मन विचलित हो जाएगा .....

कुछ-कुछ वैसा ही मेरे मन में भी हो रहा था । वैसी जगह बैठकर ध्यान और चिंतन करना बड़ा मुश्किल है इसलिए मैंने सोचा घर चल कर इस पर विचार और चिंतन करते हैं ।

मैंने वैशाली और माताजी से इजाजत ली और मैं घर लौट आया । शुद्ध होकर अपने साधना कक्ष में चला गया । गुरु जी का ध्यान पूजन करके चिंतन किया ।

रोज की अपेक्षा ज्यादा समय लग गया ....
क्योंकि मन विचलित था ।
जैसे ही ध्यान लगा.....
गुरुदेव का बिंब स्पष्ट हुआ और उन्होंने सिर्फ एक शब्द कहा और उनका बिम्ब लुप्त हो गया ।
वह शब्द था ..... कृत्या !
यानी ..... मुझे कृत्या प्रयोग करना था ।
रात के दस बज रहे थे ।

तंत्र साधनाओं में रात के 9 बजे से लेकर सुबह के 3 बजे तक के समय को रात्रीकाल कहा जाता है । इस दौरान उग्र साधनाएं की जा सकती है ।
जिन सामग्रियों की जरूरत थी ...
वह घर पर ही उपलब्ध थी । इसलिए मैंने प्रयोग प्रारंभ कर दिया ।

प्रयोग करने के पश्चात मंत्रसिद्ध वस्तु को पीड़ित व्यक्ति को खिला देने से उसके ऊपर हुआ प्रयोग शांत हो जाता है ।
जटाशंकर ऐसी स्थिति में नहीं था कि वह कुछ खा सके । अतः मैंने गंगाजल के ऊपर वह प्रयोग संपन्न किया ।

रात के लगभग एक बजे जल को लेकर मैं अस्पताल पहुंचा...

तब भी उसकी स्थिति वैसी ही थी ....
लगातार हिचकियां आ रही थी ....

गंगाजल पिलाने के लगभग 5 मिनट के बाद वह सामान्य हो गया ! उसकी हिचकियां बंद हो गई । मैंने राहत की सांस ली !
और वापस लौट आया ।
दरअसल जटाशंकर के ऊपर तांत्रिक प्रयोग संपन्न हुआ था ।

वह सावन का महीना चल रहा था । एक डेढ़ हफ़्ता सावन का बीत गया था । हरियाली त्योहार आने वाला था । हरेली अर्थात श्रावण मास की हरियाली अमावस्या !

सावन माह की अमावस्या को हरैली त्योहार के रूप में मनाया जाता है । धान के कटोरा के नाम से मशहूर छत्तीसगढ़ में मनाए जाने वाले त्योहारों मे प्रमुख है हरेली ।

इस दिन किसान खेती में उपयोग होने वाले सभी औजारों की पूजा करते हैं। गाय-बैलों की भी पूजा की जाती है । गेंड़ी सहित कई तरह के पारंपरिक खेल भी हरेली के आकर्षण होते हैं । यह कृषि कार्य के पहले

का प्रतीक है । यह छत्तीसगढ़ के सबसे व्यापक रूप से मनाए जाने वाले त्योहारों में से एक है ।

इसके अलावा हरेली का एक और पक्ष भी है । जिसकी वजह से इस त्यौहार का आना मेरे लिए विशेष चिंता का विषय था ।
वह पक्ष था ....
छत्तीसगढ़ के तांत्रिकों के लिए हरेली की विशिष्टता ....
छत्तीसगढ़ तंत्र साधना के क्षेत्र में काफी गहरी दखल रखता है । यहां पर तंत्र के जानकार लोगों को बैगा कहा जाता है । यह विद्या गुरु से शिष्य को मौखिक रूप से दी जाती है ।

साधना के क्षेत्र में जैसा कि आमतौर पर सभी स्थानों पर होता है गुरु अपने शिष्य को पहले अपना शिष्यत्व प्रदान करता है । इसके लिए अलग-अलग प्रकार की प्रक्रिया अपनाई जाती है । छत्तीसगढ़ में इसे "पाठ पीढा" कहा जाता है ।

का प्रतीक है । यह छत्तीसगढ़ के सबसे व्यापक रूप से मनाए जाने वाले त्योहारों में से एक है ।

इसके अलावा हरेली का एक और पक्ष भी है । जिसकी वजह से इस त्यौहार का आना मेरे लिए विशेष चिंता का विषय था ।
वह पक्ष था ....
छत्तीसगढ़ के तांत्रिकों के लिए हरेली की विशिष्टता ....
छत्तीसगढ़ तंत्र साधना के क्षेत्र में काफी गहरी दखल रखता है । यहां पर तंत्र के जानकार लोगों को बैगा कहा जाता है । यह विद्या गुरु से शिष्य को मौखिक रूप से दी जाती है ।

साधना के क्षेत्र में जैसा कि आमतौर पर सभी स्थानों पर होता है गुरु अपने शिष्य को पहले अपना शिष्यत्व प्रदान करता है । इसके लिए अलग-अलग प्रकार की प्रक्रिया अपनाई जाती है । छत्तीसगढ़ में इसे "पाठ पीढा" कहा जाता है ।

यह वास्तव में देवी या शक्ति के आसन का प्रतीक है ! उस शक्ति के आसन का जिसकी आराधना यहां के तांत्रिक करते हैं ।

जब गुरु अपने शिष्य को यह विद्या सिखाने के लिए सहमति प्रदान करता है या यूं कहिए कि उसे अपना शिष्य बनाता है तो उसे यह "पाठ पीढा" प्रदान करता है । यह आमतौर पर नीम लकड़ी की बनी हुई एक छोटी चौकी होती है । जिसे बनाते समय बहुत सारी जटिल प्रक्रियाओं का पालन किया जाता है । इस चौकी को किसी भी दूसरे व्यक्ति के स्पर्श से बचा कर रखना होता है ताकि इसमें स्थापित शक्तियां सुरक्षित रह सकें । इस चौकी के माध्यम से गुरु अपने देवीय शक्ति या पुण्य को सांकेतिक रूप से अपने शिष्य को प्रदान करता है । जिसके बाद वह विभिन्न प्रकार के मंत्रों का जाप करने तथा उन्हें सिद्ध करने के मार्ग पर अग्रसर होता है । इस प्रक्रिया में हरेली का दिन बेहद महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसी दिन से मंत्र प्रदान करने की प्रक्रिया का प्रारंभ होता है ।

अमावस्या का दिन होने के कारण यह उन लोगों के लिए भी अति विशिष्ट तांत्रिक दिवस होता है जो मारण जैसे उग्र प्रयोग करना चाहते हैं ।

छत्तीसगढ़ में यह विशेष रूप से तांत्रिक मारण प्रयोगों का दिन माना जाता है । इस दिन नकारात्मक शक्तियों की आराधना करने वाले तांत्रिकों के द्वारा मारण प्रयोग संपन्न किए जाते हैं । ऐसी मान्यता है कि हरेली के दिन किए गए मारण प्रयोग बेहद प्रबल और लगभग अकाट्य होते हैं । यानी जिस व्यक्ति के ऊपर प्रयोग किया जा रहा है उसका निपटना लगभग तय होता है ।

यहां तक माना जाता है कि इस प्रकार के मंत्र प्रयोग जिन्हें बाण भी कहा जाता है । वह सूक्ष्म अग्नि पुंज के रूप में प्रयोग कर्ता के स्थान से निकलकर अपने लक्ष्य की ओर जाता है ।

इसे कुछ तांत्रिक शक्ति परीक्षण के रूप में लेते हैं और ऐसे अग्निबाण को अपनी शक्तियों के माध्यम से रोक भी लेते हैं । यह भी कहा जाता है कि अगर कोई व्यक्ति इसके जाने के रास्ते में गलती से आ जाए तो वह व्यक्ति

भी इसकी चपेट में आकर इसके प्रभाव का शिकार हो जाता है । यानी कुल मिलाकर यह रात बेहद खतरनाक मानी जाती है ।

इस दिन अधिकांश लोग कोशिश किया करते हैं कि अंधेरा होने के बाद बाहर ना निकलें । विशेष रूप से गांवों में इस तरह की सावधानी ज़्यादा बरती जाती है ।

ऐसा माना जाता है कि इस दिन तांत्रिकों के द्वारा मारण प्रयोग का सिद्ध मुहूर्त होने के कारण इस दिन किया गया प्रयोग निश्चित मृत्यु का कारण बनता है .....
यही बात मेरे लिए चिंता का विषय थी !

हरेली चार या पाँच दिन के बाद आने वाली थी ....

जिस प्रकार का तांत्रिक प्रयोग जटाशंकर पर प्रारंभ हुआ था वह हरियाली के दिन अपनी पूर्णता पर पहुँचता और जटाशंकर की मौत का कारण बन सकता था ।

सुनने में यह बात थोड़ी अजीब लग सकती है लेकिन अगर आप छत्तीसगढ़ में ग्रामीण इलाकों में एक बार

घूम लें तो आपको इतनी सारी कहानियां सुनने को मिल जाएगी कि आपको भी इस रात को बाहर निकलने मे डर लगेगा .....

कृत्या के मंत्र से अभिमंत्रित जल को पिला देने से जटाशंकर की हालत में सुधार हो गया था और उसके ऊपर किए गए प्रयोगों की तीव्रता न्यूनतम हो गई थी ....

लेकिन ....

वह ख़तरे से बाहर नहीं हुआ था !

ख़ासतौर से हरेली के दिन उस पर मारण प्रयोग होने की संभावना थी ।

अब मुझे यह पता करना था कि इसके पीछे किसका हाथ है ?

अगले दिन सुबह स्नानादि करने के बाद मैं अपने पूजा स्थान में बैठा । पूजन संपन्न होने के बाद कपालिनी का विशेष पूजन संपन्न किया ।

जिसके बाद मैंने कपालिनी का आह्वान किया ...

कुछ समय के बाद कपालिनी की उपस्थिति स्पष्ट हुई .....

मैंने उस के समक्ष अपनी समस्या रखी !
कपाली ने जो बताया वह कुछ ऐसा था.....

जटाशंकर अपने माता पिता का इकलौता बेटा था अर्थात उनकी सारी धन संपत्ति का वह इकलौता वारिस था ।
जटाशंकर के दादा जी के पास 50 एकड़ ज़मीन थी । जिसमें से उन्होने दो हिस्से किए थे । एक हिस्सा जटाशंकर के पिता जी को मिला था । उस 25 एकड़ ज़मीन में जटाशंकर के पिताजी ने अपनी मेहनत सूझ-बूझ और नई तकनीकों का प्रयोग करते हुए 25 एकड़ की खेती को डेढ़ सौ एकड़ पर पहुँचा दिया ।
इतना ही नहीं इसके साथ साथ उन्होंने अलग अलग क़िस्म के कार्य भी प्रारम्भ किये । जिसमें से एक था खेत के बीच में बने हुए तालाब में मछली पालन !

मछली पालन एक अच्छा व्यवसाय माना जाता है । अगर उसे वैज्ञानिक ढंग से किया जाए तो लाभ की संभावनाएं काफ़ी ज़्यादा बढ़ जाती है । जटाशंकर के पिताजी ने इनका पालन दिया था जिसकी वजह से उन्हें इसमें पर्याप्त मात्रा में लाभ हुआ ।

गाँव से लगभग 25 किलोमीटर की दूरी पर एक बंजर ज़मीनों उनको औने पौने दामों पर मिल गई । वह ज़मीन लगभग 45 एकड़ की थी । उस ज़मीन से काफ़ी पत्थर निकले । उन पत्थरों को बेचकर उन्होंने काफ़ी पैसा बनाया । पत्थरों के खोदने के बाद बने गड्ढों को पाटने की बजाय उन्होंने वहाँ पर तालाब बना दिया और उसमें भी मछली पालन प्रारंभ कर दिया ....

यानी उनकी क़िस्मत ऐसी थी ...
कि जहाँ हाथ लगा देते थे .....
वहाँ मिट्टी भी सोना बन जाती थी !

जटाशंकर भी बिलकुल उन्हीं के समान निकला । अठारह वर्ष की उम्र में उसके पिता ने उसे अपने व्यापार खेती तथा अन्य चीज़ों के बारे में बताना चालू किया । 20 वर्ष का होते होते वह लगभग सारे काम सीख गया था ।

आमतौर पर हम अपने बच्चों के निर्णय को स्वयं लेना पसंद करते हैं । कोशिश करते हैं खासतौर से यह जताने

कि हमारे निर्णय सही हैं और तुम अभी निर्णय लेने के लायक नहीं हो ! छोटे हो ।

अगर आप थोड़ा सा चिंतन करें तो ऐसा करके हम उनकी निर्णय लेने की क्षमता पर अविश्वास कर रहे हैं । उन्हें यह समझने का अवसर नहीं दे रहे हैं कि उनके अंदर भी इतनी बौद्धिक क्षमता है कि वह अपना निर्णय स्वयं ले सकें .....
अगर आप थोड़ा सा गौर से देखेंगे तो जितने बड़े दिग्गज व्यवसाई हैं ... वह ऐसे हैं....
जिन्होंने अपनी छोटी उम्र से ही व्यवसाय का एबीसीडी सीख लिया था ....
खैर...

जटा के पिता ने उसे अपने हिसाब से निर्णय लेने की छूट दे दी । उन्होंने उस पर नजर रखी लेकिन निर्णय लेने की स्वतंत्रता भी उसे दी । इस छूट का उसने दुरुपयोग नहीं किया । बल्कि साल भर के अंदर उसने कुछ ऐसे निर्णय लिए ... जिसे देखकर उसके पिताजी निश्चिंत हो गए कि बच्चा समझदार है और सारे बिज़नस को संभाल लेगा.....

आमतौर पर जिस उम्र में लड़के, लड़कियाँ घुमाने और फ़िल्में देखने में व्यस्त रहते हैं उस उम्र में जटाशंकर खेती और बिज़नेस की बारीकियों में पारंगत हो चुका था। उसकी बुद्धिमानी सूझ-बूझ और मेहनत का लोग लोहा मानने लगे थे।

जटाशंकर को जो चीज भगवान से वरदान के रूप में मिली थी, वह थी इंसान को पहचानना। जिम्मेदारी किसे सौंपना है यह वह अच्छे से जानता था। ऐसे लोगों को चुनकर वह अपनी ज़िम्मेदारी सौंपता था जो उसकी ज़िम्मेदारी को अपनी ख़ुद की ज़िम्मेदारी समझकर निभाते थे। जटाशंकर का व्यवहार और उसके द्वारा मिलने वाले सम्मान और स्वतंत्रता के कारण ये सारे लोग जिन्हें हम मैनेजर कह सकते हैं अपनी अपनी जवाबदारी पूरी तरह से निभाते थे।

जब तक बहुत ज़्यादा ज़रूरत न हो जटाशंकर किसी के काम में हस्तक्षेप नहीं करता था। उसका नेटवर्क इतना तगड़ा था कि उसे हर जगह की जानकारी बराबर मिलती रहती थी। साथ ही वह सभी के साथ लगातार संपर्क में भी रहता था। उनकी ज़रूरत तथा समस्याओं के समय

उनकी मदद के लिए हर संभव प्रयास भी करता था ।

इन सब कारणों से लोग उसे अपने परिवार का सदस्य मानते थे । उसके काम को अपना खुद का काम मानकर पूरी तन्मयता और सद्भावना के साथ करते थे .....

जटाशंकर के चाचा जी थे बलदाऊ !
दादाजी ने जमीन के 25-25 एकड़ के दो हिस्से किए थे और एक हिस्सा बलदाऊ को भी दिया था । कई बार ऐसा होता है कि कुछ लोगों को अगर धन या जायदाद मिल जाए तो उनका दिमाग़ ख़राब हो जाता है या सातवें आसमान पर पहुँच जाता है ।

मेरे एक परिचित थे मदन लाल !
जो बेहद सामान्य से जीवन यापन कर रहे थे । उनकी तीन एकड़ जमीन गांव के अंदर की तरफ थी । जिसकी कोई खास कीमत भी नहीं मिल रही थी । मेहनत वह करते नहीं थे और करना चाहते भी नहीं थे ।
इसलिए और साथ ही नौकरी होने की वजह से खेत अधिया पर उठा देते थे अर्थात जो भी कमाई होती उसका आधा हिस्सा खेती करने वाला उनको दे देता था ।

खेत उनका रहता था लेकिन फसल उगाने वाले का होता था। इस प्रकार से चावल दाल की व्यवस्था हो जाती थी बाकी सब नौकरी के माध्यम से हो जाता था।

परिस्थितियां बदली और हाईवे निर्माण का कार्य बड़े जोर शोर से देशभर में चालू हुआ। सौभाग्यवश उनकी जमीन हाईवे के बिल्कुल बगल में आई।

किस जगह से हाईवे जाने वाली है यह जानने के लिए प्रॉपर्टी डीलर बैठे रहते हैं। अपने सूत्रों के माध्यम से वह इसका पता भी लगा लेते हैं। शुरुआती दौर में कीमत कम होती है मगर जैसे-जैसे काम चालू होने लगता है जमीन की कीमत भी बढ़ती जाती है। यह लोग जमीन खरीदने के लिए बड़ी कीमत देने को तैयार रहते हैं।

मदन लाल जी को अपने तीन एकड़ खेत की कीमत एक करोड रुपए प्रति एकड़ के हिसाब से मिल गई। यानी मदन लाल जी बैठे-बिठाए करोड़पति बन गए....

इसके बाद उन्होंने जो कुछ किया वह एक अलग ही इतिहास था।

पैसा जैसे ही आता है.....
चमचे और चापलूस अपने आप आते हैं । चमचों और चापलूसों के आते ही उन्होंने भोग विलास की सारी सीमाएं लांघ डालीं ।
जो पैसा मिला था उसमें से अधिकांश उन्होंने अय्याशी में उड़ा दिया । नौकरी पहले बिल्कुल नियमित आया करते थे लेकिन जैसे ही पैसा आया तो जिस दिन मर्जी होती तो आते !
और नहीं होती तो नहीं आते ...

फिर अचानक एक दिन एक रहस्यमय दुर्घटना में उन्हें भयंकर गंभीर चोट लगी ।
यह दुर्घटना कैसे हुई ?
इसका रहस्य कोई नहीं जान पाया ।
लगभग डेढ़ महीने वह जीवन और मौत के बीच में संघर्ष करते रहे और निपट गए ।

अंत समय में यह स्थिति थी कि इलाज के पैसे भी नहीं थे .....

जब लक्ष्मी की अनायास प्राप्ति मति भ्रष्ट करती है तो इस प्रकार के तांडव होते हैं । आपने अपने आसपास भी अवश्य ऐसा कोई न कोई उदाहरण देखा होगा ।

चाचा बलदाऊ जी भी इसी प्रजाति के प्राणी थे ....
जैसे ही उनके हाथ में संपत्ति लगी .....
उसने जो उन्मुक्तता का तांडव दिखाया उसे देखकर लोग दंग रह गए...
जटाशंकर के पिताजी ने उसे समझाने का बहुत प्रयास किया ....
लेकिन उसने उसे साफ कह दिया - " मेरे बाप का माल है ! मैं जैसा चाहूँ वैसा करूंगा !! तुझे उससे क्या ?
इसके बाद वह भी समझाने नहीं गए ।
समस्त प्रकार के कार्यक्रमों और दुष्कर्मों को उसने पूरी शिद्दत से अंजाम दिया ।
इस चक्कर में नशा भी शौक में शामिल था । चमचों ने चापलूसी कर कर के उसे आसमान पर चढ़ा दिया । जब चमचे आते हैं तो उनकी खातिरदारी भी करनी पड़ती है । उन पर खर्च भी करना पड़ता है .....
धीरे धीरे उसकी ज़मीन बिकती चली गई .....

जैसे-जैसे पैसा घटता जाता है ....
वैसे वैसे चमचों की संख्या भी कम होती जाती है जो आखिर में शून्य हो जाती है ।
जो चमचे तलवे चाटने को तैयार रहते हैं वह ऐसी स्थिति में पहचानने को भी तैयार नहीं होते हैं ....

धीरे-धीरे बलदाऊ चाचा के साथ ऐसा ही हो रहा था ।
आखिर में एक स्थिति ऐसी आयी कि अब वह बिलकुल ज़मीन पर आ गया ।

जब खाने के लाले पडने लगे तब उसको असलियत समझ में आयी और वह जटाशंकर के पिताजी के पास आकर गिड़गिड़ाया ।
तब तक जटाशंकर के पिताजी काफी प्रगति कर चुके थे .....
सहृदय आदमी थे ....
उनको उस पर तरस आया और अपने राइस मिल की ज़िम्मेदारी उसे सौंप दी ।

वह बुरी तरह चोट खाया हुआ आदमी था ।

इसलिए उसने संभलने के इस मौक़े का पूरा सदुपयोग किया और पूरी लगन के साथ राइस मिल के काम में लग गया ।
धीरे धीरे उसके काम को देखकर जटाशंकर के पिताजी को भी यह विश्वास हो गया कि यह अब समझ गया है । उन्होंने राइस मिल की आय का एक बड़ा हिस्सा उसको दे दिया । बलदाऊ चाचा और भी लगन से काम करने लगा ....

समय बीतता गया और उनकी विशेषज्ञता भी बढ़ती गई । उनका बेटा आनंद इस काम में अपने पिता की मदद किया करता था । सारे राइस मिल का पूरा काम लगभग दोनों बाप बेटों के ज़िम्मे था और उस से होने वाली आय का एक बड़ा हिस्सा भी उनके पास आता था ।

इसके बावजूद जहाँ संभव हो सकता था वहाँ वहाँ से वे अपनी कमाई का ज़रिया ज़रूर निकाल लेते थे ।

जटाशंकर के पिताजी सब कुछ जानते हुए भी इस ओर ज़्यादा ध्यान नहीं देते थे । इसलिए उनकी दुकानदारी अच्छी ख़ासी चल जाती थी ।

जटाशंकर के आने के बाद शुरु शुरु में सब कुछ ठीक ठाक चलता रहा ।

जटाशंकर के पिताजी के गुज़र जाने के तीन साल बाद बलदाउ चाचा जी भी गुज़र गए । बलदाऊ जी के गुजरने के बाद आनंद अब राइस मिल का सर्वे सर्वा था । बलदाऊ चाचा भी हेरा फेरि कर लिया करते थे लेकिन अपने ब्रांड की गुणवत्ता का ध्यान अवश्य रखते थे ।

आनंद को इन सारी चीजों से कोई मतलब नहीं था वह ज्यादा से ज्यादा पैसे कमाने पर यकीन करता .... इसलिए उसने हर संभव तरीके से इसके लिए प्रयास प्रारंभ कर दिए .....

पिताजी उधर विशेष ध्यान नहीं देते थे और सब कुछ उनके ऊपर छोड़ा हुआ था इसलिए जटाशंकर भी शुरु

में राइस मिल वाले मामले में ज्यादा दखल नहीं करता था ।

आनंद की हेरा फेरी धीरे-धीरे बढ़ती चली गयी । जटाशंकर के स्वभाव और उसके मिलनसारिता की वजह से राइस मिल में काम करने वाले लोगों ने उसे सारी सच्चाई से अवगत करा दिया । जटाशंकर यह जानकर थोड़ा विचलित हुआ ।

रिश्तेदारों के साथ बहुत ज़्यादा कठोर व्यवहार करना उचित नहीं होता, इसलिए उसने दूसरा मार्ग निकाला । राइस मिल के सारे काम को कंप्यूटराइज्ड़ कर दिया । कंप्यूटराइज्ड कर देने की वजह से घपले की संभावनाएं 80 प्रतिशत कम हो गई । जो आनंद के ग़ुस्से की वजह बना और उसने कमाई की दूसरी योजनाओं पर काम करना चालू कर दिया ।

राइस मिल में जो कर्मचारी कंप्यूटर में एंट्री करता था । उसे उसने अपने साथ मिलाया और पैसे का लालच देकर एंट्री में घपलेबाजी चालू करवा दी ।

जटाशंकर के मुखबिरों ने इसकी सूचना उस तक पहुँचा दी । उसके बाद जटाशंकर ने न सिर्फ़ उस कर्मचारी को तबियत से लताड़ लगायी , बल्कि उसे नौकरी से भी निकाल दिया ।

जटाशंकर इतने पर ही नहीं रुका । उसने आनंद को भी फ़ैक्ट्री से निकल जाने के लिए कहा । निकाल दिए जाने के बाद आनंद इधर उधर भटकता रहा ...
जब उसे कहीं ठिकाना नहीं मिला तो जटाशंकर की माताजी के हाथ पैर पकड़कर किसी प्रकार से वापस अपनी जगह पर आ पाया लेकिन अब जटाशंकर ने उसे उतनी स्वतंत्रता नहीं दी थी ।
जटाशंकर बहुत ही अच्छे स्वभाव का स्वामी था लेकिन धोखा देने वालों को माफ करना उसके स्वभाव में शामिल नहीं था । इसलिए उसने मां की बात का मान रखते हुए आनंद को वापस तो ले लिया लेकिन पैसे के लेन देन वाला काम अब उसके हाथ में नहीं था । आनंद को केवल मासिक तनख़्वाह दी जाती थी ...
यह कुछ कुछ ऐसा था जैसे 56 भोग खाने वाले को दाल रोटी खानी पड़ रही हो....

यह स्थिति उसे नागवार गुज़र रही थी !
उसके दिमाग़ ने एक ख़तरनाक योजना पर काम करना चालू किया । इसमें उसके एक वक़ील मित्र ने काफ़ी मदद की । विरासत के नियमों मे संभावना के बारे मे बताया ।

जैसा कि मैंने आपको बताया था जटाशंकर अकेला प्राणी था ....
उसे विवाह आदि में कोई विशेष रुचि नहीं थी । सारे प्रयासों के बाद भी उसने विवाह नहीं किया । वह अभी भी अकेला ही था । इस बात को ध्यान में रखते हुए वकील के ज्ञान के आधार पर आनंद ने सोचा - अगर जटाशंकर न रहे तो उसकी सारी जायदाद की मालकियत उसको मिल जाने वाली थी .....
सबसे क़रीबी रिश्तेदार वही था !
यह ज्ञान जब से उसे मिला .....
उसने अपनी योजना बनाना चालू कर दिया !

जिसमें उसकी सहयोगी बनी उसकी पत्नी वृंदा । वृंदा की माँ अच्छी तरह से सीखी हुई तांत्रिक महिला थी । जो काफ़ी विद्याएँ जानती थी ।

यह तय किया गया कि किसी भी तरह से इस हरियाली पर जटाशंकर को निपटा दिया जाए .....

वृंदा की मां का नाम था जमुना !

जब भी वृंदा को किसी प्रकार की परेशानी आती थी । वह अपनी मां से उसका हल पूछती थी और मां उसे अलग-अलग प्रकार के टोटके या कोई अन्य उपाय बताती थी । जमना के बताए उपाय बड़े विचित्र से हुआ करते थे , लेकिन हर बार 100% रिजल्ट देते थे इसलिए उसे अपनी मां पर पूर्ण विश्वास था ।

एक बार आनंद का संबंध किसी महिला के साथ हो गया और वह वृंदा की उपेक्षा करने लगा । दोनों के बीच आपसी तनाव बढ़ने लगा ! झगड़ा झंझट होने लगा ! परिस्थितियां यहां तक पहुंच गई कि आनंद ने उस पर हाथ उठाना भी चालू कर दिया । वृंदा इस समस्या के समाधान के लिए अपनी मां के पास पहुंची । जमुना ने अपने तरीके से पता कर लिया कि मामला क्या है ?

विद्या लगभग 27-28 साल की एक विधवा महिला थी । जिसका पास के एक गाँव मे ढाबा था । आनंद का गाँव मे आना जाना था ।

गांव का ढाबा देखने में छोटा रहता है लेकिन वहां पर कई प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध रहती है इसमें से एक सुविधा अंग्रेजी शराब की भी थी । विद्या के ढाबे में खाना बड़ा स्वादिष्ट बनता था । साथ ही अंग्रेजी की व्यवस्था थी । जो आनंद के लिए पिकनिक जैसा मजा देती थी ।

विद्या व्यवहार कुशल जवान महिला थी और आनंद को देखते ही उसके सामने सेवा मे बिछ जाती थी । नौकर को हटाकर खुद खाना परोसती । अपने इस प्रकार के व्यवहार से विद्या ने धीरे-धीरे उसे अपने झांसे में ले लिया.....
पुरुष की रचना ही इस प्रकार की है कि वह शारीरिक सुख के लिए सदैव लालायित रहता है । विवाहित संबंधों में खटास आने का एक प्रमुख कारण पत्नी के द्वारा इस संबंध में उदासीन व्यवहार करना भी है ।

वृंदा उस समय नई नई माँ बनी थी । जब पत्नी मां बनती है तो उसके ऊपर नए प्रकार की जिम्मेदारी आ जाती है । बच्चे के प्रति उसका सहज स्वाभाविक ममता और आकर्षण बहुत ज्यादा होता है । पहले बच्चे के समय यह स्वाभाविक रूप से बहुत प्रबल होता है । उस समय उसके लिए उसका बच्चा ही उसका पूरा संसार हो जाता है । उस समय कई पत्नियां अपने पतियों को बुरी तरह से इग्नोर करने लग जाती है जो कई बार इस प्रकार के परिस्थितियों का कारक होता है । आनंद सामान्य से थोड़ा ज्यादा कामुक प्रवृत्ति का था । वृंदा के इस प्रकार के व्यवहार से वह असंतुष्ट रहने लगा था ।

आनंद विद्या के व्यव्हार से उसकी तरफ आकर्षित होने लगा । विद्या अनुभवी और निपुण महिला थी । उसने आनंद को पूरी तरह से अपने मोह पाश में बांध लिया । ढाबे के साथ ही लगा हुआ विद्या का घर भी था ..... कई बार खाना खाने के बाद आनंद वहां रुकने भी लगा ....

स्त्री का सौंदर्य पुरुष को आकर्षित करता है !

पुरुष को नियंत्रित करने के लिए संबंध और उस समय किए जाने वाले व्यवहार का भी बहुत महत्व होता है ....

विद्या कामकला मे निपुण थी और पुरुष को सुख देने मे पारंगत उस महिला से मिल रहे सुख के आगे वृंदा उसे कूड़े का ढेर लगने लगी थी .....
जिसे वह किसी भी तरह अपनी जिंदगी से निकाल कर बाहर फेंकना चाहता था ....

यह वृंदा के लिए बेहद गंभीर समस्या थी जिसका निराकरण निकालना उसके लिए अत्यंत जरूरी था....
जमुना ने वृंदा को किसी भी तरह उस महिला के बाल या पहने हुए कपड़े के टुकड़े को हासिल करने के लिए कहा ....

वृंदा ने दोनों चीजें हासिल करके जमुना के पास पहुंचा दी । बरसात का मौसम था और यही हरेली का त्यौहार आने वाला था ।

जमुना ने बृंदा को एक जड़ी दी और उसे घिसकर अपने अंगों में लगाकर आनंद के साथ का निर्देश भी दिया ।

उस रात को दोनों के बीच में जो भी हुआ उसके बाद आनंद पूरी तरह से उसके नियंत्रण में आ गया । अब स्थिति यह थी कि वृंदा जो बोलती थी उसे आनंद अस्वीकार नहीं कर पाता था ।

जमुना ने हरेली की रात विद्या के कपड़े के ऊपर कई प्रकार की क्रियाएं संपन्न की । काले मुर्गे की बलि के साथ उसकी पूजा पूरी हुई ...
हरेली की रात को ही विद्या को खून की उल्टी होनी चालू हो गई । रात को ही उसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया लेकिन खून की उल्टियां लगातार आती रही और उसे बचाया नहीं जा सका .....

वृंदा को अपनी मां के टोनही अर्थात काले जादू की जानकार होने का शक जरूर था लेकिन डर के मारे उसने कभी उससे पूछा नहीं .....

तंत्र विद्या का दो पक्ष होता है ।
एक है शुद्ध या सकारात्मक पक्ष

इसके अंतर्गत तमाम प्रकार की सकारात्मक साधना और मंत्र जाप किए जाते हैं। जिसमें व्यक्ति अपने विकास के लिए प्रयत्न करता है या किसी दूसरे के विकास के लिए प्रयत्न करता है। इन साधनों में समय लगता है। परिणाम धीरे-धीरे आते हैं। जो परिणाम आते हैं ,वह काफी समय तक रहते हैं, और उस कुल के विकास में सहायक बनते हैं।

उदाहरण के लिए अगर एक व्यक्ति ने लक्ष्मी साधना की हुई है तो उसके परिवार में आने वाली तीन पीढ़ियों तक धन का प्रवाह आता रहता है।

किसी भी निर्माण में समय लगता है।

जैसे हम घर बनाते हैं तो उसमें कई साल लग जाते हैं। जब घर बन जाता है तो उसमें आराम से दो तीन पीढ़ियां निवास कर लेती हैं। ठीक वैसा ही सकारात्मक साधनाओं के साथ भी होता है।

इसलिए जीवन में हमेशा सकारात्मक साधनाएं ही करनी चाहिए ....

तंत्र विद्या का दूसरा पक्ष होता है नकारात्मक पक्ष , जिसे काला जादू या ब्लैक मैजिक भी कहा जाता है । जिस प्रकार से तंत्र के अस्तित्व को अस्वीकार किया जाता है मंत्र साधनाओं के प्रभाव को अस्वीकार किया जाता है ...ठीक उसी प्रकार काले जादू के अस्तित्व को भी अस्वीकार किया जाता है ।

इसके बावजूद हर समाज में चाहे वह भारतीय हो या पाश्चात्य हो ...
काले जादू के विषय में अनेक प्रकार की कहानियां किस्से प्रचलित हैं ! जो उसके किसी ने किसी अंश में उपस्थित होने की पुष्टि अवश्य करते हैं ।

तंत्र के नकारात्मक पक्ष को हम विध्वंस के एक स्वरूप के रूप में स्वीकार कर सकते हैं । इसमें आमतौर पर दूसरों को परेशान करने उन्हें नुकसान पहुंचाने की क्रियाएं ज्यादा की जाती है । उसके अंतर्गत :-
दो लोगों के बीच में झगड़ा करवा देना ।
किसी का दिमाग फेर देना ।
किसी के चलते हुए दुकान को बंद करवा देना ।
किसी को बीमार कर देना या मृत्यु तुल्य कष्ट पहुंचाना ।

इस प्रकार की नकारात्मक क्रियाये इस प्रकार के तंत्र के तहत की जाती है ...

आप लोगों ने स्वयं देखा होगा कि एक मकान को जहां बनने में सालों लगते हैं । वही उसे तोड़ने में ज्यादा से ज्यादा एक हफ्ते का समय लगता है । यदि आधुनिक मशीनों का उपयोग किया जाए तो कुछ घंटों में ही मकान मलबे में परिवर्तित हो जाता है । यदि थोड़ा और आगे जाएं और विस्फोटक सामग्री का इस्तेमाल हो तो मुश्किल से 5 या 10 मिनट में एक पूरी की पूरी बहुमंजिला इमारत जमीन पर गिरकर मिट्टी के ढेर में बदल जाती है ।

एक और उदाहरण से आप उस बात को थोड़ा और स्पष्ट समझ पाएंगे कि चाकू एक बदमाश भी इस्तेमाल करता है और एक सर्जन भी इस्तेमाल करता है । बदमाश कुछ सेकंड में एक चाकू से किसी का गला काट कर उसकी हत्या कर देता है या उसे गंभीर चोट पहुंचा देता है । इस सारी क्रिया के नकारात्मक होने के कारण बदमाश को कुछ ही समय लगता है क्योंकि उसे यह कोशिश करनी होती है कि वह अधिकतम नुकसान

पहुंचा सके और इसमें किसी बात का ध्यान नहीं रखना होता ।

दूसरी ओर सर्जन घंटों प्रयास करने के बाद किसी व्यक्ति को जीवन दान देने में सक्षम होता है क्योंकि उसे बहुत सारी चीजों को ध्यान में रखना पड़ता है, कोई संवेदनशील अंग धोखे से कट ना जाए कोई नस न कट जाए यह सब ध्यान में रखते हुए बिगड़ी हुई चीज का निर्माण करना होता है । सकारात्मक क्रिया करनी होती है । इसलिए ज्यादा समय देना पड़ता है ।

मेरे ख्याल से आप लोग मेरी बात समझ गए होंगे । बदमाश बनना आसान है !क्योंकि उसमें आपको कुछ समय ही लगेगा ।
लेकिन ....
सर्जन बनने के लिए आपको एक लंबी पढ़ाई की प्रक्रिया और उसके बाद प्रशिक्षण से गुजरना पड़ेगा और एक लंबे अनुभव के बाद ही आप बेहतर सर्जन बन पाएंगे ।

मनुष्य हमेशा से जल्दी से जल्दी चीजों को प्राप्त करने के लिए आतुर रहता है ।

जल्दी से जल्दी धन प्राप्त कर लेना !

जल्दी से जल्दी बड़ा आदमी बन जाना !

जल्दी से जल्दी प्रसिद्धि प्राप्त कर लेना !

यह सब इच्छाएं उसे गलत तरीकों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है और वह उसमें लिप्त होता जाता है ।

बहुत सारे साधक भी जल्दी सफलता प्राप्त कर लेने के चक्कर में इन उपायों का सहारा लेने लगते हैं ।

भूत प्रेत की सिद्धि जैसे उपाय बेहद मुश्किल होते हैं , लेकिन कम समय में इनकी सिद्धि प्राप्त की जा सकती है । मौका लगते ही वे भी परेशान करने का मौका नहीं छोड़ते हैं और इसका नुकसान परिवार के सदस्यों को उठाना पड़ता है ।

मेरे एक परिचित बिजोरी लाल है, मूलतः वे राजस्थान के रहने वाले हैं । उन्होंने एक भूत सिद्ध करके रखा हुआ था । उस भूत से वह कई प्रकार के काम करवाया करते थे ।

जब तक उनकी शादी नहीं हुई थी तब तक सब ठीक-ठाक था । अकेले थे तो भूत के लिए किए जाने वाले सारी चीजें समय अनुसार होती रहती थी ।
जब शादी हुई और उनकी पत्नी लीला घर में आई तो धीरे-धीरे परिस्थितियां बदलने लगी ।

क्रियाओं में समय का हेरफेर होने लगा....
कभी-कभी नागा भी हो जाता ....
भूत प्रेत जैसी योनियाँ नियंत्रण में तभी होती है जब तक कि साधक की क्षमता है या उसकी साधना लगातार प्रबल रहे ।
जैसे ही उस में कमी आती है यह शक्तियां हावी होने लगती है ....
जब दोनों पति पत्नी साथ में होते तो घर में से अजीब अजीब सी आवाजें आने लगती ।

इस विद्या को गोपनीय रखना होता है । इसलिए वह पत्नी को उसके बारे में नहीं बता सकते थे और उस अवस्था में उसे नियंत्रित करने के लिए मंत्रोचार भी नहीं कर सकते थे ।
इसलिए भूत इस प्रकार की मसखरी करता रहता.....

धीरे धीरे पत्नी को भी इसकी आदत होती चली गई और उनके घर में एक बच्चे का जन्म हुआ । बच्चे का नाम था भीम सिंह ।

राजस्थान के लोगों के नैन नक्श काफी तीखे और सुंदर होते हैं । बिजोरी लाल और उसकी पत्नी भी इसका अपवाद नहीं थे । दोनों हट्टे कट्टे और सुंदर थे । बेटा भीम सिंह भी बड़ा प्यारा नटखट सा सुंदर बच्चा था ।

भूत को भी बच्चा बड़ा पसंद था .....

लेकिन भूत तो भूत होता है ....

उसके प्यार करने का तरीका ही अलग था ।

वह आता और बच्चे के गाल पर थप्पड़ मार कर चला जाता ।

बच्चा बुरी तरह से रोता ।

यह हरकतें वह तभी करता जब बिजोरी लाल आसपास नहीं होता....

बिजोरी ने भूत को मुक्त करने की बहुत कोशिश की लेकिन अब उसे भी इस खेल में मजा आने लगा था ।

बच्चे की दिन-ब-दिन बिगड़ती हालत देखकर दोनों मा बाप बुरी तरह से परेशान हो गए । अंत में बिजोरी लाल अपने गुरु के पास पहुंचा और उसे सारी बात बताइ ।

गुरु ने विचार किया और उसे सारी बात समझ में आ गई । उसके पास भी इसका उपाय नहीं था ।
उसने कहा - बिजोरी ! सिद्धि करवाना तो मुझे आता है लेकिन उसे वापस कैसे किया जाता है यह मुझे भी नहीं पता .....

अब बिजोरी लाल के लिए भूत गले में फंसा हुआ लड्डू हो गया था । जिसे ना निगलते बन रहा था ना ही उगलते बन रहा था ।

इधर जब वह अपने गुरु से मिलने गया था तो भूत ने पत्नी पर भी हाथ साफ कर लिया ।
भूत मियां अब और मजे में था । मस्ती करने के लिए छोटा बच्चा और ऐश करने के लिए लीला ....
हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती चली गई ।

बिजोरी लाल धीरे धीरे काला पड़ता जा रहा था ।
पहले मुझे लगा कि कोई बीमारी हो गई होगी । मैंने एक दो बार पूछा पर उसने जवाब देने में दिलचस्पी नहीं दिखाई । तो मैंने भी पूछना छोड़ दिया ।
उस भूत के द्वारा बिजोरी लाल ने कई लोगों का घर उजाडा था और कई प्रकार के कुकृत्य किए थे ।
जिसका परिणाम वापस आ रहा था ....
धीरे-धीरे लीला का शरीर भी सिकुड़ता चला गया ।
ऐसा लगता था जैसे अब उसके शरीर में खून ही नहीं बचा हो । लगभग 2 महीने के बाद उसकी मृत्यु हो गई । इस सदमे में बिजोरी लाल आधा पागल हो गया ।
बात यहीं पर समाप्त नहीं हुई ।

लीला के निधन के लगभग 25 दिन के बाद उसका बेटा रात के समय न जाने कैसे घर के पीछे बने हुए कूये में गिर गया ।
तीन साल का बच्चा रात के समय कुएं में जाकर गिर गया .....
यह किसी को हजम होने वाली बात नहीं थी ।

यह अभी अज्ञात है ....

जमुना का पति पोषण लाल इस्पात संयंत्र में काम करता था । इसके अलावा उसकी जमीन थी जिस पर वह खेती करता था । कुल मिलाकर आर्थिक रूप से सक्षम व्यक्ति था । पोषण की बाईस वर्ष की अवस्था में सोलह साल की जमुना से उसका विवाह हुआ था । अगले वर्ष वृंदा का जन्म हुआ।

जब वृंदा 12 या 13 वर्ष की थी यानि जब पोषण 35 -36 के लगभग था और जमुना 29-30 की ....
तब अचानक वह बीमार पड़ा ....

उसका सारा शरीर पीला पड़ने लगा । पीलिया के शक में उसे अस्पताल लाया गया जहां दो-तीन दिन बाद उसकी स्थिति सुधरने लगी ....

दस दिन के इलाज के बाद वह स्वस्थ होकर घर लौट आया लेकिन घर आने के तीसरे दिन अचानक उसकी मौत हो गई .....

उसका शरीर पूरा पीला पड़ चुका था ।

ऐसा लगता था जैसे किसी ने उसके शरीर से पूरा खून निकाल लिया हो.....

आमतौर पर काले जादू की जानकार या टोनही के शक में बुजुर्ग विधवा या अकेले रहने वाली महिलाओं को प्रताड़ित किया जाता है। इनमें से अधिकांश केस जायदाद हड़पने के ही होते हैं। ऐसी महिलाओं के रिश्तेदार उन्हें बदनाम करके इसी प्रकार वहां से भगाने या मार डालने के प्रपंच रचते हैं.....

जो वास्तविक जानकार महिलाएं होती हैं उनको हाथ लगाना इतना आसान नहीं होता। कई बार वे ऐसे समृद्ध परिवार में होती हैं जहां पर उनके बारे में कोई कुछ बोल भी नहीं सकता .....

जमुना भी इसी बात का फायदा उठा रही थी ....

पति के चले जाने के बाद पूरे जायदाद की वह अकेली मालकिन थी। बड़ा घर था .... उसका अपना अलग कमरा था। जहां वह अपने कार्य को अपने ढंग से कर सकती थी .....

वृंदा बड़ी हो रही थी !

ऐसा लगता था जैसे किसी ने उसके शरीर से पूरा खून निकाल लिया हो.....

आमतौर पर काले जादू की जानकार या टोनही के शक में बुजुर्ग विधवा या अकेले रहने वाली महिलाओं को प्रताड़ित किया जाता है। इनमें से अधिकांश केस जायदाद हड़पने के ही होते हैं। ऐसी महिलाओं के रिश्तेदार उन्हें बदनाम करके इसी प्रकार वहां से भगाने या मार डालने के प्रपंच रचते हैं.....

जो वास्तविक जानकार महिलाएं होती हैं उनको हाथ लगाना इतना आसान नहीं होता। कई बार वे ऐसे समृद्ध परिवार में होती हैं जहां पर उनके बारे में कोई कुछ बोल भी नहीं सकता .....

जमुना भी इसी बात का फायदा उठा रही थी ....

पति के चले जाने के बाद पूरे जायदाद की वह अकेली मालकिन थी। बड़ा घर था .... उसका अपना अलग कमरा था। जहां वह अपने कार्य को अपने ढंग से कर सकती थी .....

वृंदा बड़ी हो रही थी !

उसे बहुत दिन तक अंधेरे में नहीं रखा जा सकता था । इसलिए जमुना ने सोलह साल में ही उसकी शादी करवा दी ।

उसके जाने के बाद जमुना पूरी तरह से निश्चिंत होकर अपना क्रियाकलाप संपन्न कर सकती थी ।

वृंदा को अपनी मां पर शक तो था, लेकिन जमुना ने अपनी तरफ से कभी भी उसे कुछ भी नहीं बताया । आमतौर पर यह विद्या वे अपने बेटियों या बहुओं को सिखाती है ।

जब आनंद को समस्याएं आई तब वृंदा ने अपनी मां के सामने जाकर दुखड़ा रोया....
तब जमुना ने उपाय करने की बात बताई ।
वृंदा ने सारी बात आनंद को बताइ । आनंद तुरंत राजी हो गया .....

जमुना के गांव के पास में घना जंगल था ।
जंगल में एक पेड़ था । जिसे ग्रामीण भाषा मे बेहरा का पेड़ कहा जाता है । यह पेड़ बेहद घना होता है और

लगभग 30 मीटर की ऊंचाई तक लंबा हो सकता है । जिस पेड़ की मैं बात कर रहा हूं वह पेड़ लगभग 20-22 मीटर ऊंचा रहा होगा ।
ऐसा माना जाता है कि इस पेड़ में भूत प्रेत तथा शैतानी शक्तियों का निवास रहता है । सोधीन महिलाएं जिन्हे हम काले जादू की विशेषज्ञ महिला तांत्रिक कह सकते हैं। इस पेड़ पर आकर अपनी पूजा उपासना तथा गतिविधियां संपन्न करते हैं ।

जमुना भी अपनी सिद्धियों के लिए यहीं पर आया करती थी । दिन के समय सब ठीक रहता । रात होते ही वह जंगल की तरफ निकल जाती। वहां पहुंचने के बाद वह निर्वस्त्र हो जाती ....

एक विशेष जड़ी होती है जिसे इस प्रकार के साधक इस्तेमाल करते हैं । वे एक टुकड़ा मुंह में रख लेते हैं और उसे धीरे-धीरे चबाते रहते हैं । इस दौरान एक विशेष मंत्र का उच्चारण भी करते रहते हैं । यह मंत्र बहुत छोटा होता है लेकिन बहुत ज्यादा शक्तिशाली माना जाता है । जड़ी को चबाने के दौरान अगर लार आएगी तो उसे बाहर गिरते रहने देते है उसे अंदर नहीं निगलना होता है ।

मुंह से टपकती हुई लार चमकती है और नीचे गिरते हुए वह किसी आग के गोले की तरह प्रकाश छोड़ती और फिर गायब हो जाती....

इसे टोनही बरना भी कहा जाता है ....
वृंदा के जाने के बाद जमुना इस प्रकार की प्रक्रिया नियमित रूप से करती रहती थी । ऐसी क्रियाएं आमतौर पर कृष्ण पक्ष के समय की जाती हैं ....
वह भी अष्टमी के बाद की तिथियों में ।
जब चंद्रमा का प्रकाश क्षीण हो जाता है ....
चंद्रमा सात्विक शक्तियों का प्रतीक माना जाता है, इसलिए उसकी अनुपस्थिति या उसकी कमजोर अवस्था में इस प्रकार की साधना की जाती है । इन क्रियाओं से काली शक्तियों का प्रभाव बढ़ता जाता है ....

जमुना के पति की मृत्यु के विषय में सभी को पता था , लेकिन उसके बाद क्या हुआ ?
यह जानना बेहद अद्भुत और डरावना होगा ....

इस प्रकार की क्रिया करते समय सोधीन महिलाएं अपने परिवार के अन्य सदस्यों के ऊपर निद्रा प्रयोग करके जाती हैं ।

जिसके कारण उन्हें इतनी गहरी नींद आती है कि वह समझ ही नहीं पाते की रात में क्या हुआ ?
वृंदा उस रात इतनी गहरी नींद में थी कि उसे कुछ पता नहीं चला .....

उधर जंगल में बहरा के पेड़ के पास से गुल्लू के चले जाने के बाद जमुना निर्वस्त्र हो गई और शव को जागृत करने के लिए सन्नद्ध हो गई । जड़ी को मुंह में रखकर वह शव की परिक्रमा करने लगी ।
वह बेहद भयानक दृश्य था ।
घना जंगल !
चारों तरफ दूर-दूर तक फैले हुए बड़े-बड़े पेड़ !
जो ऐसा लगता है जैसे जमीन से आसमान तक पहुंचे हुए हो !!
हर तरफ अंधेरा छाया हुआ था !

इस प्रकार की क्रिया करते समय सोधीन महिलाएं अपने परिवार के अन्य सदस्यों के ऊपर निद्रा प्रयोग करके जाती हैं ।

जिसके कारण उन्हें इतनी गहरी नींद आती है कि वह समझ ही नहीं पाते की रात में क्या हुआ ?
वृंदा उस रात इतनी गहरी नींद में थी कि उसे कुछ पता नहीं चला .....

उधर जंगल में बहरा के पेड़ के पास से गुल्लू के चले जाने के बाद जमुना निर्वस्त्र हो गई और शव को जागृत करने के लिए सन्नद्ध हो गई । जड़ी को मुंह में रखकर वह शव की परिक्रमा करने लगी ।
वह बेहद भयानक दृश्य था ।
घना जंगल !
चारों तरफ दूर-दूर तक फैले हुए बड़े-बड़े पेड़ !
जो ऐसा लगता है जैसे जमीन से आसमान तक पहुंचे हुए हो !!
हर तरफ अंधेरा छाया हुआ था !

आसमान से चांद की रोशनी भी इतनी कम थी कि वह बड़ी मुश्किल से पेड़ के जाल को पार करके जमीन तक पहुंच पा रही थी .....

उस काले अंधियारे जगह पर जमीन पर पड़ा हुआ एक शव .....
उसके चारों तरफ निर्वस्त्र नृत्य करते हुए घूमती हुई उसकी विधवा हो चुकी जवान पत्नी.....

जिसके मुंह से आग झड़ रही थी ।

अगर कोई उस दृश्य को देख ले तो उसका हार्ट फेल हो जाए ...

लगभग आधे घंटे तक यह प्रक्रिया चलती रही ।

पूरा वातावरण भारी हो चुका था ।
चमगादड़ पेड़ के इर्द गिर्द चक्कर काट रहे थे । पेड में बैठे हुए बाकी सारे पक्षी अनहोनी की आशंका में डर के मारे वहां से उड़ चुके थे ...

अजीब अजीब सी चीख चिल्लाहट से पूरा परिसर भयानक होता जा रहा था ।

कभी ऐसा लगता जैसे कोई किसी का गला दबा रहा हो और वह बचने के लिए चिल्ला रहा हो ।

कभी ऐसा प्रतीत होता जैसे किसी स्त्री को बुरी तरह से पीटा जा रहा हो और दर्द के मारे वह कराह रही हो ।

कभी किसी बच्चे के जोर जोर से रोने की आवाज आती है जैसे उसे बहुत ज्यादा दर्द हो रहा हो ।

कभी अट्टहास की आवाज गूंजने लगती तो कभी पूरी शांति हो जाती ।

यानी कुल मिलाकर ऐसी स्थिति थी कि अगर कोई आम इंसान वहां पर खड़ा हो जाए तो डर के मारे उसकी आत्मा शरीर छोड़ कर भाग जाती ....
थोड़ी देर में पेड़ से उतरकर अन्य प्रेत आत्माएं भी जमुना के साथ उस शव के चारों तरफ घूमने लगी ।
ऐसा लग रहा था जैसे अपने सेनापति के पीछे प्रेत आत्माओं की फौज डांस कर रही हो ।

नाचने की तीव्रता बढ़ती जा रही थी और साथ ही चीख चिल्लाहट भी.....

बहरा का पेड़ अंधेरे में धीरे-धीरे जगमगाने लगा ....

ऐसा लग रहा था जैसे पत्तियों के बीच से कोई प्रकाश पुंज निकल रहा हो .....

जमुना अपने साथ एक सूअर भी लेकर आई थी । उसने मंत्र जाप करते हुए कोई इशारा किया और वह सूअर ऊपर की ओर उठा ....
जैसे ही वह ऊपर उठा ! जमुना के पीछे घूमते हुए सारे भूत प्रेत उसकी और लपके !!!
वे उसे खींचते हुए बहरा के पेड़ की ओर ले गए ! वहशी दरिंदों की तरह उन्होंने उसे इतनी बेदर्दी से नोचा कि थोड़ी ही देर में सूअर का नामोनिशान मिट चुका था .....
उनकी पार्टी पूरी हो चुकी थी और वह सारे अपने अपने स्थान को जा चुके थे ।

अब वहां पर केवल पोषण का शव और जमुना मौजूद थे ।

तभी.....

अचानक.....

एक भयानक चीत्कार के साथ पोषण का शव उठ कर बैठ गया ।

उसके उठते ही जमुना ने उसे काले मुर्गे का भोग लगाया ।

दारू पेश किया ....

और कुछ मंत्रों का उच्चारण भी किया ।

अचानक !!!

उसके गुप्त भाग से रक्तस्राव होने लगा ....

उसने उसे एक पात्र में इकट्ठा किया और शव के मुंह से लगा दिया ....

वह पूरा रक्त पी गया .....

अब पोषण का शव तृप्त हो चुका था ।

शव के मुख से आवाज निकली - बोल ?

जमुना ने उससे अपने साथ रहने और सभी कार्य करने का वचन ले लिया ।

शव ने वचन दिया ....

अब पोषण की आत्मा जमुना की गुलाम थी .....

उसी के माध्यम से वह अनेक प्रकार के कार्य संपन्न करती थी ।

विद्या को निपटाने के लिए भी उसने पोषण का ही प्रयोग किया था .....
इस प्रकार की गुलाम आत्मा को नियमित रूप से भोग और मंत्र जाप उपलब्ध कराते रहने से उसकी शक्ति बढ़ती रहती है । इसमें नागा होने से साधक के लिए वह स्वयं परेशानी का सबब बन जाता है ।

किसी विशेष कार्य को करने के लिए ऐसी आत्मा को विशेष प्रकार का भोग अर्पित किया जाता है ।

आमतौर पर यह मुर्गी बकरी या सूअर की बलि के रूप में होता है ।

छोटे-मोटे प्रयोग के लिए देसी अंडे की बलि दी जाती है ।
इसमें ब्रायलर अंडों का प्रयोग नहीं किया जाता क्योंकि उसके अंदर जीव उत्पत्ति की संभावना नहीं होती ।

जटाशंकर के ऊपर प्रयोग करने के लिए भी उसने पोषण को ही भेजा था ।

पोषण ने अपनी शक्ति अनुसार प्रयास किया था लेकिन जटाशंकर सात्विक प्रवृत्ति का जीव था । उसने किसी का नुकसान नहीं किया था । इसलिए उसकी आत्मा पहले ही प्रबल थी ।

चार महीने का उसका भगवान शिव का अनुष्ठान और उसके द्वारा किए गए मंत्र जाप ने उसे प्रचंड मारण प्रयोग की तीव्रता से बचा लिया था ।

अब इसमें आपके मन में यह सवाल भी आ सकता है कि जब उसने साधना की हुई थी तो उसके ऊपर मारण प्रयोग का असर क्यों हुआ ?

इसे मैं बुलेट प्रूफ जैकेट के उदाहरण से आपको समझाना चाहूंगा । बुलेट प्रूफ जैकेट सामान्य गोली को रोकने के लिए बनाया जाता है । वह अपने इस कार्य को पूरी सफलता से संपन्न करता है ।

लेकिन मान लीजिए कि बुलेट प्रूफ जैकेट पहना हुआ व्यक्ति किसी बम विस्फोट का शिकार हो जाए !
या उसके ऊपर किसी विशेष धातु से बनी हुई गोली का प्रहार हो !!
तो उसका पूरी तरह बच पाना मुश्किल होता है ।
हां !
बुलेट प्रूफ जैकेट अपनी शक्ति के अनुसार उस व्यक्ति की रक्षा करने की कोशिश जरूर करता है ।

जटाशंकर के द्वारा किए गए अनुष्ठान ने उसके चारों ओर एक रक्षा चक्र बनाया था । उस रक्षा क्षेत्र की तीव्रता जटाशंकर के मंत्र जाप और उसकी साधना के अनुसार कायम थी ।
जमुना के द्वारा किया गया प्रयोग प्रबल और शक्तिशाली प्रयोग था । जो रक्षा चक्र को भेद कर जटाशंकर को आघात पहुंचाने में सक्षम रहा । वह उसे

बहुत गंभीर चोट नहीं पहुंचा सका, क्योंकि जटाशंकर का रक्षा चक्र अपनी शक्ति के अनुसार इस प्रयोग को रोकने की कोशिश करता रहा और उसकी मारक क्षमता को कम कर दिया ।
अन्यथा उसकी निश्चित मृत्यु हो जाती ....

आमतौर पर छोटे मोटे तांत्रिक प्रयोग जोकि किसी को नुकसान पहुंचाने के लिए या दुकान मकान आदि में परेशानी पैदा करने के लिए आजकल किए जाते हैं , वे सफल इसलिए होते हैं क्योंकि संबंधित व्यक्ति नियमित रूप से किसी प्रकार की साधना या मंत्र जाप के द्वारा अपना सुरक्षा चक्र नहीं बना पाता है ।

भगवान को हाथ जोड़ लेना और अगरबत्ती दिखा देना पर्याप्त है ।
मैं सभी देवी देवताओं पर विश्वास रखता हूं ।
मैं नवरात्रि में मंदिर जाता हूं ।
मंदिर दिखने से प्रणाम कर लेता हूं.....
केवल श्रद्धा से सब कुछ हो जाता है ।
इस प्रकार की गलतफहमी पालने वाले लोग आमतौर पर इस प्रकार के प्रयोगों के शिकार होते हैं ।

इसमें एक और कारण जो आमतौर पर बताया जाता है वह होता है कि हमारे पास समय नहीं है कि बैठकर पूजा पाठ कर सकें.....
इसलिए भगवान को हाथ जोड़ लेते हैं बस !
मन मे श्रद्धा हो तो सब कुछ हो जाता है ....
बाकी भगवान की इच्छा .....

मेरे ख्याल से देश के प्रधानमंत्री से ज्यादा व्यस्त कोई नहीं होता होगा । वह भी अपने पूजा ध्यान आदि के लिए समय निकाल लेते हैं । यहां तक कि विदेश यात्रा में भी अपने नवरात्रि व्रत का पालन कर लेते हैं ....
व्यस्तता आलसियों के बच निकलने का एक बहाना भर है !
वास्तविकता नहीं ।

आप गौर करेंगे तो हमारे देश के सबसे रईस व्यक्ति अंबानी जी भी बेहद धार्मिक प्रवृत्ति के हैं । वे स्वयं मंदिरों में जाते हैं और विभिन्न प्रकार के पूजा अनुष्ठान कराते रहते हैं । यदि इन से किसी प्रकार का लाभ नहीं होता तो शायद वे ऐसा नहीं करते ।

आप अपने शहर की सबसे सफल दुकानों में या प्रतिष्ठानों में चले जाइए । उनमें से 80% में आपको उनके धर्म से संबंधित धार्मिक प्रतीक अवश्य मिलेंगे । जिनका पूजन और नमन किए बिना वह दुकान या प्रतिष्ठान का कार्य चालू भी नहीं करते हैं ।

इसी प्रकार लगभग हर बड़ा व्यवसायी और हर सफल व्यक्ति अपने अपने इष्ट का ! चाहे वह किसी भी धर्म को मानने वाला हो ! पूरी श्रद्धा से और विश्वास के साथ पूजन अवश्य करता है ।
हां ।
कुछ लोग अपवाद हो सकते हैं ।
लेकिन 80% व्यवसायी लोग अपनी नियमित पूजा अवश्य करते हैं ।

मेरी राय यह है कि आप अपने इष्ट के मंत्र का या उनके किसी भी स्तोत्र का नियमित रूप से जाप करते रहे । जैसे जैसे जाप बढ़ता जाएगा । आपके इर्द-गिर्द संबंधित इष्ट देवता की शक्तियां सुरक्षा चक्र के रूप में स्थापित होती जाएंगी । जो आपको इस प्रकार के

किसी भी प्रयोग में सहायता प्रदान करते हुए आप की सुरक्षा भी करेंगे ।
बाकी आपकी स्वयं की इच्छा .....

इधर ...
जटाशंकर के ऊपर किए गए इस प्रहार के बाद पोषण भी शक्तिहीन हो चुका था ।
आध्यात्मिक शक्तियों से युक्त व्यक्ति के ऊपर प्रहार करने से उसका प्रतिफल भोगना पड़ता है ।
शक्तिहीन हो चुके पोषण की शक्तियों को जागृत करने के लिए समय लगता .....

इसलिए अगले प्रयोग को जमुना ने हरेली के दिन तक के लिए टाल दिया था ।

इस दौरान वह नियमित रूप से अपने अनुष्ठान और भोग पदार्थों के द्वारा पोषण की शक्तियों को जागृत करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रही .....

प्रतिदिन वह एक मुर्गे की बलि भी प्रदान करती थी ।
उसके द्वारा किए जा रहे निरंतर कर्मों से पोषण धीरे-धीरे

शक्तिशाली होता जा रहा था और अगले प्रहार के लिए तैयार भी.....

जटाशंकर लगभग स्टेबल हो चुका था ।
डॉक्टरों ने बताया - हम जो कुछ कर सकते थे , वह हम कर चुके हैं । मरीज कोमा में जा चुका है । यह स्थिति ऐसी होती है, जिसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता । कोमा की स्थिति कुछ दिनों की हो सकती है और कुछ महीनों की भी हो सकती है या फिर ऐसा भी हो सकता है कि मरीज कोमा से बाहर ही ना निकले ।

मेडिकल साइंस के हिसाब से डॉक्टरों ने जो कहा था वह सही भी था । कई उदाहरण ऐसे हैं, जहां पर मरीज दस साल से कोमा की स्थिति में पड़ा हुआ है और उसके इंप्रूवमेंट के चांसेस नहीं दिख रहे हैं ।

इन सारी डरावनी बातों ने जटाशंकर की माता जी को बुरी तरह से परेशान कर दिया था और उनका रो रो कर बुरा हाल था ।

मैं इधर अलग चिंता में था ।

मुझे चिंता हो रही थी .....
हरेली को होने वाले संभावित प्रयोग की ।
हरेली अर्थात मारण प्रयोग का सिद्ध दिवस ....
मैं जानता था कि जिसने भी यह प्रयोग संपन्न किया है , वह असफल होने के बाद हरेली के दिन अपनी पूरी शक्ति से प्रहार अवश्य करेगा .....

हरेली को आने में अभी 5 दिन बचे हुए थे । इन 5 दिनों में मुझे जटाशंकर के लिए कुछ करना था .....

जटाशंकर मेरे लिए सिर्फ एक दोस्त नहीं था । वह मेरे भाई के जैसा था । उसके साथ मैंने कई साल गुजारे थे । उसके ऊपर इस प्रकार के प्रयोग का होना मेरे अंतर्मन में बहुत गहरी चोट कर गया था.....

मैं बहुत ज्यादा दुखी था, भावनाएं मेरे अंदर उछाल भर रही थी । मेरे दोस्त के साथ इस प्रकार का कुकृत्य करने वाले व्यक्ति को दंडित करना आवश्यक था ।

सबसे पहले मैंने एक हफ्ते की छुट्टी ले ली ।

जब अति उग्र साधना करनी हो तो समाज से संपर्क कम कर देना चाहिए । उग्र साधना से शरीर में इतनी ज्यादा उर्जा आ जाती है कि थोड़ी-थोड़ी बात पर गुस्सा आ जाता है । जिस कार्यालय में मैं काम करता था वहां पर इस प्रकार का व्यवहार परेशानियों को जन्म दे सकता था ।
इसलिए मैंने छुट्टी ले लेना उचित समझा ।

जब भी कोई विशेष साधना करनी होती है तो उसके पहले गुरु मंत्र का जाप कर लेना चाहिए । इससे साधना में अनुकूलता भी बनी रहती है और उचित मार्गदर्शन भी मिलता है ।

सोमवार का दिन था और शुक्रवार को हरेली पड़ने वाली थी ।
सोमवार प्रातः काल मैंने गुरु मंत्र के ग्यारह हजार मंत्र जाप का अनुष्ठान चालू किया । उस दिन रात लगभग 11 बजे मेरा 11000 मंत्र जाप पूरा हो गया ।
मेरे आगे पीछे कोई नहीं था । अकेला आदमी अपने हिसाब से कुछ भी कर सकता है, जबकि परिवार वाले

गृहस्थ व्यक्ति के लिए इतना जाप एक साथ संभव नहीं होता ।
मंत्र जाप पूरा करने के बाद आसन पर ही मैं ध्यान लगा कर बैठ गया ।

मुझे ऐसा लग रहा था कि मुझे कृत्या साधना या छिन्नमस्ता साधना में से कोई एक साधना करनी चाहिए । इस संबंध में गुरुदेव का मार्गदर्शन चाहता था ।

लगभग दस मिनट के बाद गुरुदेव का बिंब मानस पटल पर स्पष्ट हुआ ।

मैंने उन्हें साष्टांग दंडवत प्रणाम करते हुए अपनी दुविधा रखी .....

मेरा प्रश्न सुनकर गुरुदेव के चेहरे पर हल्की सी मुस्कुराहट उभरी और उसके बाद वह बिना कोई उत्तर दिए लुप्त हो गए.....

मैं सोच में पड़ गया कि इसका क्या मतलब है?

इसका दो अर्थ हो सकता था ।

पहला तो यह कि मुझे स्वयं निश्चित करना था कि इनमें से कौन सी साधना करनी है ।
या फिर दूसरा यह हो सकता था कि इन दोनों को छोड़कर कोई तीसरी साधना करनी थी ।

जो भी हो उस समय स्थिति स्पष्ट नहीं हो पाई ।
इसलिए मैंने सोचा कि अभी सो जाता हूं और अगले दिन सुबह उठकर फिर से प्रयास करूंगा ।
मेरा प्यारा दोस्त बेहद दर्दनाक स्थिति में था । इसलिए मन विचलित था !
काफी देर तक नींद नहीं आई । लगभग एक बजे के आसपास नींद लगी और काफी गहरी नींद लगी ।
वह सुबह 5 या 5:30 बजे का वक्त रहा होगा जब अचानक मुझे तारापीठ के दर्शन हुए ।
और दिखी....
छाया.....
हाँ !
तारापीठ वाली छाया .....
तंत्र साधिका छाया.....

तारापीठ पश्चिम बंगाल के रामपुर नामक जगह पर स्थित है । वहां अपनी साधना के संबंध में मुझे जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था ।
वहीं पर एक अत्यंत उच्च कोटि की तंत्र साधिका से मिलने का भी सौभाग्य मिला था ....

जिसका नाम था छाया ...

छाया वह महिला थी , जिसने मुझे स्त्री के अंदर उस पराशक्ति के अस्तित्व के होने का आभास कराया था ।
वह स्वयं एक अत्यंत ही उच्च कोटि की साधिका थी ।
[उसके विषय में विस्तार से जानने के लिए आप "अघोरानंद और तारापीठ की छाया" पढ़ सकते हैं ....]

ब्रह्म मुहूर्त में इस प्रकार से छाया का दिखना बेहद अद्भुत भी था और सुखद भी ...
क्योंकि !
उसे मैं एक लंबे समय के बाद देख रहा था ....

जीवन में कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनके साथ बहुत कम समय बिताने पर भी उनके साथ गहरी आत्मीयता का आभास होता है ।
उनसे मिलने से आंतरिक खुशी अनुभव होती है .....

बेहद प्रसन्नता के साथ मैंने मन ही मन उसे प्रणाम किया और उसके चेहरे पर वही शरारत भरी हंसी बिखर गई ....

कुछ देर बाद मेरी नींद खुल गई ....

मुझे सपना याद रहा !
मैं इस चिंतन में बैठा था कि छाया के इस प्रकार से दिखने का मतलब क्या है ?

कुछ देर बैठने के बाद जब कुछ समझ नहीं आया तो फिर नित्य कर्म आदि से निवृत्त होकर स्नान किया और अपने पूजा स्थान पर फिर से गुरुदेव के पूजन के लिए बैठ गया ।

पूजन लगभग समाप्त हो गया था । जब अचानक मुझे कमरे में किसी की उपस्थिति का आभास हुआ !

पूजन पूर्ण होने के बाद जब मैं ने आंखें खोली तो मेरी बगल में छाया बैठी हुई थी ....

उसने शरारत भरी नजरों से मेरी तरफ देखा और खिलखिला कर हंस पड़ी ।
महामाया उच्च कोटि के साधकों को इस प्रकार का मायाजाल उपहार में देती है ।
वह कुछ ऐसी हरकत जरूर करते हैं कि देखने वाला सोच में पड़ जाता है कि वास्तव में इसे कुछ आता भी है या नहीं .....

गुरु पूजा समाप्त करके मैंने उसे चाय बना कर पिलाई । चाय पीने के बाद हम दोनों चर्चा करने के लिए बैठे ।
मैंने पूछा - आज दर्शन का सौभाग्य कैसे प्राप्त हुआ ?
छाया बोली - मेरा छिन्नमस्ता साधना करने का विचार है । बाबा प्रचंड नाथ जी से मैंने इस विषय पर बात की थी तो उन्होंने साधना को तुम्हारे साथ करने के लिए कहा है ।
इसलिए मैं यहां पर आई हूं ।

महामाया जब किसी साधक से साधना करवाना चाहती है तो वह हर प्रकार की व्यवस्था और अनुकूलता उसके लिए तैयार कर देती है ।
कुछ ऐसे कारण भी बना देती है जिनके चलते वह उस साधना की ओर प्रवृत्त हो जाता है ।
जटाशंकर की हालत को देखते हुए मुझे हरेली के पहले छिन्नमस्ता साधना कर लेनी थी ।
समय कम बचा था.....

जैसा कि आप लोग पहले भी पढ़ चुके हैं, छाया को वायु गमन सिद्धि प्राप्त है !
वह अपनी इच्छा अनुसार किसी भी स्थान पर आना-जाना कर सकती है । इसलिए वह तारापीठ से यहां दुर्ग तक अपनी उसी सिद्धि के माध्यम से आ गई थी ।
मैंने उसे जटाशंकर के बारे में बताया ।
वह हौले से मुस्कुरा दी - तभी बाबा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है । चलो जैसी महामाया की इच्छा ....

छाया जैसी सिद्ध साधिका से मिलने का सौभाग्य बहुत विरले और बहुत कम समय के लिए ही प्राप्त होता है । साधनाओं के विषय में और महाविद्याओं के विषय में

वह ज्ञान का भंडार है । इसलिए मैंने उससे छिन्नमस्ता के विषय पर प्रकाश डालने के लिए कहा ....

छाया ने बताना प्रारंभ किया - महाविद्याओं को भगवती जगदंबा का दस प्रमुख स्वरूप माना जाता है । उसमें से पहली महाविद्या है भगवती महाकाली । तथा दूसरे क्रम पर आती है महाविद्या छिन्नमस्ता । जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है । छिन्न अर्थात् कटा हुआ , और मस्ता अर्थात मस्तक । यानी एक ऐसी देवी जिसका सिर कटा हुआ है और वह मस्तक विहीन है .... इस विषय पर कई कथाएं प्रचलित हैं उनमें से जो प्रमुख कथा है वह यह है कि भगवती महामाया अपनी सहेलियों जया और विजया के साथ मंदाकिनी नदी में स्नान करने गईं। स्नान करने के बाद भूख से उनका शरीर काला पड़ गया। सहेलियों ने भी भोजन मांगा। देवी ने उनसे कुछ प्रतीक्षा करने को कहा।

काफी देर प्रतीक्षा करने के बाद भी कुछ व्यवस्था नहीं हो पाई और सहेलियों को फिर से भूख लगने लगी तो उन्होंने पुनः कुछ भोजन प्रदान करने का आग्रह किया ।

तो उन्होंने अपनी और दोनों सखियों की भूख मिटाने के लिए अपना सिर काट लिया।

कटा सिर देवी के हाथों में आ गिरा व गले से रक्त की 3 धाराएं निकलीं। एक रक्त की धारा स्वयं उनके कटे हुए मुख में जाकर गिरने लगी ...

अन्य दो धाराओं को अपनी सहेलियों की ओर प्रवाहित करने लगीं।
तभी से उनका यह स्वरूप छिन्नमस्तिका के रूप मे विख्यात हुआ....

शत्रु संहार तथा तंत्र बाधाओं के निवारण के लिए इनसे श्रेष्ठ कोई देवी नहीं है ।
उसने आगे बताया - हमें तीन दिन तक रजरप्पा शक्तिपीठ पर साधना करनी है । उसके बाद बाकी बची हुई साधना मैं तारापीठ में करूंगी । तुम दुर्ग में शिवनाथ तट पर कर सकते हो ....

क्या तुम तैयार हो ?
मैं अब क्या कहता ?

यह तो मेरे लिए "अंधा क्या चाहे - दो आंखें" वाली स्थिति थी ....

कहां मैं संशय की स्थिति में बैठा हुआ था ...

और यहां विधि विधान सहित साधना की संपूर्ण व्यवस्था भी हो जा रही थी !

मैंने तुरंत सहमति में सिर हिलाया ।

मेरे सर हिलाते ही छाया बोली - ठीक है चलो ।

गृहस्थ में कहीं भी निकलते समय बहुत सारी बातों का ध्यान रखना पड़ता है ।

जैसे...

गैस का बटन बंद किया कि नहीं ?

ताला लगाया या नहीं ?

कपड़े बाहर सूखने के लिए पड़े तो नहीं ?

कोई आएगा तो क्या होगा ?

सबसे विशेष कि ...

कैसे जाएंगे ?

और कब आएंगे ?

साधक को निष्ग्रह होना पड़ता है !
अर्थात इन सब चीजों से ऊपर उठना पड़ता है । इसे आप ऐसे भी कह सकते हैं कि भगवती उसे इन सब चीजों से ऊपर उठा देती है ।
समय लगता है ....
लेकिन धीरे-धीरे ऐसा हो जाता है ।

चलना है ! मतलब चलना है ....
जिस अवस्था में है ! उसी अवस्था में.....
बाकी किसी चीज का चिंतन किए बिना .....

छाया ने मेरा हाथ पकड़ा और आंखें बंद कर लेने के लिए कहा ...

आंखें बंद करते ही एक झटका सा मुझे लगा ।
उसके कुछ क्षणों के बाद जब आंखें खुली तो मैं बिल्कुल नई जगह पर खड़ा था ....

सामने था संगम .....
रजरप्पा का तांत्रिक घाट .....

असम के कामाख्या मंदिर के बाद दुनिया का सबसे बड़ा शक्तिपीठ माना जाने वाला रजरप्पा का मंदिर देवी महाविद्या छिन्नमस्ता का जागृत शक्तिपीठ ..... उसका तांत्रिक घाट !!!
जहां स्नान करने के बाद भक्त मंदिर में प्रवेश करते हैं ।

झारखंड की राजधानी रांची से लगभग 80 किलोमीटर की दूरी पर यह मंदिर है। रजरप्पा के भैरवी-भेड़ा और दामोदर नदी के संगम पर स्थित यह मंदिर असम के कामाख्या मंदिर के बाद दुनिया के दूसरे सबसे बड़े शक्तिपीठ के रूप मान्यता प्राप्त है।

रजरप्पा के इस सिद्ध पीठ मे पश्चिम दिशा से दामोदर तथा दक्षिण दिशा से भैरवी नदी का प्रवाह आता है । दामोदर और भैरवी नदी के संगम स्थल के समीप ही मां छिन्नमस्तिका का मंदिर स्थित है। मंदिर की उत्तरी दीवार के साथ रखे एक शिलाखंड पर दक्षिण की ओर मुख किए माता का दिव्य रूप अंकित है।

ऐसा माना जाता है कि मंदिर का निर्माण 6,000 वर्ष पहले हुआ था ....

वहीं कुछ लोगों की मान्यता के अनुसार इसे महाभारत युग का मंदिर माना जाता है ।

महाविद्या छिन्नमस्ता मंदिर में प्रातःकाल 4 बजे माता का दरबार सजना शुरू होता है। भक्तों की कई किलोमीटर लंबी लाइन लग जाती है।

मंदिर के अंदर स्थित शिलाखंड में देवी को त्रिनेत्रा दिखाया गया है .... अर्थात तीन आंखों वाली ।

बायां पांव आगे की ओर बढ़ाए हुए वे कमल पुष्प पर खड़ी हैं। जहां अन्य उग्र महाविद्याये शव के ऊपर विराजमान दिखाई जाती हैं वहीं इनके अद्भुत स्वरूप के पांव के नीचे विपरीत रति मुद्रा में कामदेव और रति हैं। यह अत्यंत गोपनीय महाविद्या है जिसकी साधना बहुत कम लोग ही कर पाते हैं ।

छिन्नमस्ता महाविद्या का गला सर्पमाला तथा मुंडमाला से सुसज्जित है।
खुले केश सर्प की तरह चारों ओर बिखरे हुए हैं , जिह्वा बाहर, इन आभूषणों से सुसज्जित देवी पूर्ण नग्नावस्था

में अपने भयानक और दिव्य रूप में हैं। उनके दाएं हाथ में तलवार तथा बाएं हाथ में अपना ही कटा मस्तक है । कटे हुए गले से रक्त की तीन धाराएं बह रही हैं । इनके अगल-बगल जया और विजया, जिन्हे डाकिनी और शाकिनी भी कहा जाता है , खड़ी हैं ! जिन्हें वे रक्तपान करा रही हैं और स्वयं भी रक्तपान कर रही हैं।

भगवती छिन्नमस्तिका काली कुल की महाविद्याओं में से एक है और इन्हें उग्र महाविद्याओं में गिना जाता है । उग्र महाविद्याओं की साधना में बलि का भी विशेष स्थान होता है । इसलिए उनके मंदिरों में बलि की भी व्यवस्था रहती है ...

इस मंदिर में भी इसकी व्यवस्था है जहां पर भक्त अपनी श्रद्धानुसार बलि चढ़ाते हैं ....

दामोदर के द्वार पर बने हुए घाट को तांत्रिक घाट कहा जाता है, जो लगभग 20 फुट बाई 200 फुट के आकार का होगा ।

मैं वहीं पर छाया के साथ खड़ा था ....

दामोदर और भैरवी नदी का संगम स्थल अत्यंत मनोहारी है । प्रकृति का सौंदर्य सब तरफ बिखरा हुआ था ।
भैरवी नदी स्त्री नदी मानी जाती है.....
जबकि दामोदर को पुरुष ।

देवी का स्वरूप तो बेहद ही विचित्र और साथ ही भयानक भी है लेकिन उसमें जो सबसे महत्वपूर्ण स्थिति है वह है रति और कामदेव की विपरीत रति मुद्रा में स्थिति ....

संगम स्थल पर भैरवी नदी अर्थात स्त्री शक्ति ऊपर से नीचे की ओर दामोदर नदी अर्थात पुरुष शक्ति के ऊपर विपरीत रति मे गिरती है । कहा जाता है कि जहां भैरवी नदी दामोदर में गिरकर मिलती है वह स्थान इतना गहरा है कि उस स्थल की गहराई अब तक किसी को पता नहीं है।
जितनी रहस्यमयी महाविद्या है छिन्नमस्ता !
उतना ही अद्भुत और रहस्यमय उनका शक्तिपीठ है ।
छिन्नमस्ता मंदिर तथा शक्तिपीठ के उस प्रांगण में या उस सिद्ध पीठ में कहीं भी छिन्नमस्ता मंत्रों से सिद्ध किए गए अक्षत यदि किसी तांत्रिक ने किसी के नाम से दे

दिए तो फिर उस व्यक्ति विशेष के लिए बेहद कठिन परिस्थितियां निर्मित हो जाती है । यदि वह किसी प्रकार के गलत कर्म के द्वारा भक्त को पीड़ित कर रहा होता है तो उसका पतन अवश्यंभावी है ।

इस प्रकार के प्रयोग की काट केवल और केवल छिन्नमस्ता साधक ही कर सकता है बाकी सभी प्रयोग इसके सामने निष्फल हो जाते हैं....

छाया ने मुझे चलने के लिए कहा और फिर हम लोग धीरे-धीरे नदी के साथ आगे बढ़ने लगे.....
तांत्रिक घाट से थोड़ी दूर पर नदी के किनारे किनारे हम लोग एक गुफा जैसी जगह पर पहुंचे ।
वही हमारा साधना स्थल था .....

गुफा के मुहाने से अंदर घुसने के लिए जगह थी ।
जिसमें से 3 या 4 लोग आराम से अंदर जा सकते थे ।
वहां से अंदर घुसने के बाद काफी अंधेरा हो गया क्योंकि सूरज की रोशनी अब दिखाई नहीं दे रही थी ।

छाया ने अपनी थैली में हाथ डाला और उसमें से टॉर्च निकाल ली । उसे जलाते ही नीचे की तरफ जाती हुई सीढ़ियां दिखाई देने लगी ....

सीढ़ियां काफी पुरानी थी और पत्थरों को काट कर बनाई गई थी । ऐसा लग रहा था जैसे पत्थरों को काटकर नीचे की तरफ रास्ता बनाया गया हो । लगभग दस फुट नीचे जाने के बाद एक गलियारे जैसा दिखाई दिया ! जो काफी सकरा था । जिसमें से एक समय में एक आदमी ही जा सकता था ।
वह गलियारा करीब-करीब एक डेढ़ किलोमीटर लंबा रहा होगा । उसे पार करने में लगभग आधे घंटे का समय लगा । उसमें चलते समय यह पता नहीं चल रहा था कि हम ऊपर की तरफ चल रहे हैं या नीचे की तरफ जा रहे हैं ।

लगभग आधे घंटे के बाद उसका दूसरा छोर दिखाई देने लगा ! जो प्रकाश के आने से दिखाई दे रहा था .....

वह भी लगभग उतना ही सकरा था ! जितना गलियारा था । जब हम उस गलियारे से बाहर निकले तो वहां

ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियां बनी हुई थी । जब हम सीढ़ियां चढ़कर ऊपर पहुंचे तो एक गोल दालान में पहुंचे ! उस दालान के बीचो बीच महाकाली की भव्य मूर्ति स्थापित थी ।

मूर्ति लगभग चार फुट के आसपास ऊंची रही होगी । वह काले रंग के पत्थर से बनी हुई थी । दालान के चारों तरफ गोल घेरा बना हुआ था, जो बिल्कुल वैसा ही लग रहा था ! जैसे... चौसठ योगिनी मंदिरों में होता है । उस दालान का व्यास लगभग 50 फीट के आसपास रहा होगा ।

चारों तरफ बनी हुई गोल दीवाल में खाचे बने हुए थे । उन खाचों के अंदर पत्थर की बनी हुई मूर्तियां लगी हुई थी ।
सारी मूर्तियां काले पत्थरों से बनी थी और देखने से ऐसा प्रतीत होता था जैसे काफी पुरानी हो .....

काली की मूर्ति के पास एक बलि यूथ भी बना हुआ था अर्थात वह जगह जहां पर बलि दी जाती है ।

काली की मूर्ति लगभग चार फुट ऊंची थी और बेहद चमकदार ! ऐसा लगता था जैसे काले रंग के पत्थर के ऊपर पॉलिश लगाकर अच्छे से घिसाई कर दी गई हो ! पत्थर की उस मूर्ति में ग्रेनाइट जैसी चमक थी ....

उसकी आंखें चांदी की बनी हुई थी जो अलग से चमक रही थी । आमतौर पर आंखों को चांदी या सोने से बनाते समय ऊपर से चिपकाया जाता है जो अलग से दिखाई देता है ...
लेकिन इस मूर्ति की विशिष्टता यह थी कि उसकी चांदी की बनी हुई आंख थी और उसके बीच का हिस्सा बिल्कुल सुर्ख लाल रंग का था । देवी की मूर्ति तीन आंखों वाली थी । उसकी तीसरी आंख भी ठीक वैसी ही थी ....
चांदी की आंख और बीच का जो काला हिस्सा होता है वह बिल्कुल सुर्ख लाल रंग का .....
उसे देखने मात्र से भय की अनुभूति होती थी...
मूर्ति की जीभ बाहर की तरह लपलपाती हुई दिखाई दे रही थी ....
वह भी किसी लाल रंग के पदार्थ से रंगी हुई थी ...

ऐसा लग रहा था जैसे खून से सनी हुई जीभ हो !!!

गले में खोपड़ियों की माला पड़ी हुई थी जो संभवतः संख्या में 10 या 11 रही होगी ।

मैं उसे अद्भुत इमारत कहूं या मंदिर कहूं या संरचना कहूं ....

जो भी था .....

अद्भुत था .....

उस अद्भुत 64 योगिनी मंदिर के स्वरूप को मैं देखता रह गया । बहुत सारे मंदिरों में मैं गया था लेकिन मैंने इतनी सुंदर मूर्तियां कहीं नहीं देखी थी । ऐसा प्रतीत होता था मान लो अभी नीचे उतर कर चल पड़ेंगी ....

जब मैं उस दायरे के पास गया ... तब मुझे समझ में आया कि यह केवल योगिनी मंदिर नहीं है...

बल्कि यहां तो 10 महाविद्याओं की भी प्रतिष्ठा की हुई है !

वहां काली की मूर्ति बिल्कुल मध्य में स्थापित थी और 8 दिशाओं में 8 महाविद्याओं की स्थापना की गई थी । महाविद्याओं की संख्या कुल 10 है !

1. काली ।
2. छिन्नमस्ता ।
3. षोडशी ।
4. भुवनेश्वरी ।
5. त्रिपुर भैरवी ।
6. बगलामुखी ।
7. धूमावती ।
8. तारा ।
9. मातंगी और
10. कमला ।

उसमें से केवल 8 महाविद्याये दीवाल मे बने हुए आलो में विराजमान थी ....
और बीच में महाकाली !!!

इस प्रकार से कुल 9 महाविद्याओं की मूर्तियां वहां पर थी, परंतु दसवीं महाविद्या छिन्नमस्ता वहां पर मौजूद नहीं थी ।
यह एक अजीब सी बात थी ....
शक्तिपीठ देवी छिन्नमस्ता का है !

वहां बने हुए इस अद्भुत मंदिर में केवल उसी महाविद्या की मूर्ति मौजूद नहीं थी ।

ऐसी सोच में चारों तरफ देखता हुआ घूम रहा था तभी ! मुझे पीछे से छाया का स्वर सुनाई दिया - तुम यहां मूर्तियां देखने आए हो या साधना करने आए हो ?

उसके कटाक्ष पूर्ण वाक्य को सुनकर मैं वापस यथार्थ के धरातल पर आ गया और तुरंत उसके पास पहुंच गया ।

वह महाकाली की मूर्ति के सामने बैठी हुई थी । उसके सामने पूजन सामग्री बिखरी हुई थी । मेरे बैठते ही उसने पूजन प्रारंभ कर दिया ।

देवी काली का ध्यान उसके सुमधुर कंठ से उच्चरित हो रहा था । जैसा कि मैंने आपको तारापीठ की छाया में भी बताया था कि उसकी आवाज बहुत मीठी थी ! उसे सुनकर एक अलग ही आध्यात्मिक अनुभूति होती थी !!
ऐसा लगता था जैसे किसी स्वर्गीय संगीत को सुन रहे हो !!!

महाकाली का ध्यान पूर्ण हो जाने के बाद वह आंखें बंद करके बैठ गई ।
मैं भी आंखें बंद कर कर बैठा हुआ था ।

लगभग आधे घंटे तक हम दोनों उसी अवस्था में बैठे रहे ....

जब आँख खुली तो दृश्य बदल चुका था ....
हम दोनों एक बंद गोल कमरे में बैठे हुए थे !
जो लगभग उसी आकार का था, जिस आकार का पहले वाला मंदिर था । इस मंदिर में भी उसी प्रकार की गोलाकर दीवाल थी, फर्क सिर्फ इतना था कि ऊपर में छत भी थी ।
चारों तरफ बने हुए आलों में युगल मूर्तियां मौजूद थी जो अलग-अलग मुद्राओं में थी ।
इस कक्ष के बीच वाले भाग में देवी छिन्नमस्ता की नीले रंग के पत्थर से बनी हुई लगभग डेढ़ फुट ऊंची प्रतिमा रखी हुई थी ।
उनके अगल बगल में खड़ी हुई उनकी सखियों की प्रतिमा एक सफेद थी और एक काले रंग के पत्थर से बनी हुई थी .....

भगवती छिन्नमस्ता की मूर्ति नीले रंग के पत्थर से बनी थी जो बहुत कुछ नीलम के जैसे दिख रही थी ।
मूर्ति के अंदर से हल्का नीला प्रकाश निकल रहा था !
जिससे मूर्ति स्वयं प्रकाशित महसूस हो रही थी ।

वह बहुत कुछ आज के लेजर शो के द्वारा बनाई जाने वाली होलोग्राफी इमेज के जैसी दिख रही थी ।
होलोग्राफी वाली इमेज नीले रंग की दिखती है लेकिन वह वास्तव में होती नहीं है बल्कि लेजर किरणों के द्वारा हवा में आकृति का निर्माण किया जाता है ....
लेकिन वह पत्थर से बनी हुई थी !
बल्कि यह कहना ज्यादा उचित होगा कि किसी रत्न से बनी हुई थी ।
दुर्लभ पदार्थों से बने हुए विग्रह का विशेष महत्व होता है !
जितने ज्योतिर्लिंग स्थापित है.....
उनके विषय में यह भी माना जाता है कि वहां स्थापित शिवलिंग वास्तव में ब्रह्मांड के किसी सुदूर क्षेत्र से आए हुए पिंड है । जिनके अंदर विशेष ऊर्जा का प्रवाह मौजूद है ।

अभी तक इस विषय में बहुत ज्यादा अध्ययन नहीं हुआ है ! लेकिन आने वाले समय में जब सनातन धर्म के लोग अपने प्रतीकों का सम्मान करना सीख जाएंगे तो संभव है कि इनके ऊपर भी विशेष रिसर्च होगी । जिस प्रकार से बाबा रामदेव ने आयुर्वेद को पुनर्स्थापित किया है ! योग को पुनर्स्थापित किया है ! उसी प्रकार से हमारे मंदिर उसके अंदर में स्थित विग्रह और उसकी संरचना की विशिष्टता भी वैज्ञानिक समझ पाएंगे ! उसकी व्याख्या करेंगे और उसके महत्व को लोग जान पाएंगे ।

भारत में एक से बढ़कर एक दुर्लभ संरचनाओं वाले मंदिर भरे पड़े हैं ! खासतौर से दक्षिण भारत के मंदिरों की बात ही कुछ और है ! वहां की शिल्प कला अपने आप में अद्वितीय है । इन मंदिरों में ढेर सारे रहस्य छुपे पड़े हैं । जो समय के साथ लुप्त होते चले गए .....

इसका एक उदाहरण पद्मनाभ स्वामी का मंदिर है जो केरल के तिरुअनंतपुरम नामक जगह में है । इस मंदिर के तहखाने में छह कक्ष हैं । जिसमें से पांच कक्षो को संभवत: खोला गया है । पांच कक्षो में जितना सोना

निकला है वह पूरे विश्व के किसी भी सोने के भंडार से ज्यादा है ।

छठवां कक्ष सबसे बड़ा है लेकिन उसे खोलने का निषेध किया गया है । ऐसा माना जाता है कि जिस दिन वह कक्ष खुलेगा उस दिन कुछ भयानक विपत्ति आएगी । इस खजाने की संपत्ति भी सरकार हड़पने की फिराक में है । यह बेहद दुखद है कि सनातन धर्म के प्रतिष्ठानों पर सरकारी कब्जा बढ़ता जा रहा है और वास्तविक कर्मकांड और पूजन धीरे-धीरे दिखावे में बदलते जा रहे हैं।

आप स्वयं सोचें .....

आज के युग में जब बहुत सारी मशीनें मौजूद है , उसमें भी टनो मट्टी और पत्थरों को छाना जाता है । तब जाकर 1 किलो सोना बनता है ।

प्राचीन काल में इतना सारा सोना कैसे खोजा गया ? वह सारा का सारा सोना एक मंदिर विशेष में जमा कैसे हो गया ?

कौन सी ऐसी तकनीक थी जिसके माध्यम से भारतीय इतना सारा सोना बना लेते थे ?
पूरे विश्व में किसी मंदिर में इतना व्यापक मात्रा में सोना नहीं पाया जाता है ।

इसी प्रकार के खजानो के लालच में लुटेरे भारत पर आक्रमण करते रहे चाहे वह मुगल आतताई हो या फिर ब्रिटिश डकैत ! जिन्होंने व्यापार के नाम पर इस देश को गुलाम बनाया । जिसमें हमारे कुछ लालची देशवासियों ने अपने हितों को देखते हुए सहयोग भी किया ।
अन्यथा किसी विदेशी की मजाल नहीं थी कि वह भारत की अस्मिता के साथ खिलवाड़ कर पाता ।

आज भी कमोबेश वही स्थिति देखने को मिलती है ।
भारत में आज भी विदेशी धर्म प्रचारकों के द्वारा अलग-अलग धर्मों का प्रचार किया जाता है । जिसमें यहां के लोग पैसे के लालच में सहयोग करते हैं । पैसे के लालच में अपना धर्म भी बदल लेते हैं .....

सनातन धर्म में जितनी विशिष्ट व्याख्या की गई है , उतनी किसी धर्म में मौजूद नहीं है । अगर आप देखें तो

जो भी आपकी दृष्टि में आता है, चाहे वह सूर्य हो ! चंद्र हो ! नक्षत्र हो ! सभी चीजों की गणना और उनकी शक्ति के अनुसार उन्हें एक विशिष्ट देव पद दिया हुआ है ।

हर देवी या देवता का या यूं कह लीजिये हर शक्ति का एक मंत्र भी है । मंत्र अलग-अलग देवताओं के लिए अलग-अलग प्रकार के हैं । इन्हें हम उस शक्ति को डिकोड करने का पासवर्ड समझ सकते हैं । जो निरंतर जाप के बाद उस शक्ति को मनुष्य के शरीर में जागृत कर देता है या उसके इर्द-गिर्द उस शक्ति का आभामंडल बना देता है । जिससे उसे अपने कार्य में मदद मिलती है ।

इसी वजह से कहा गया है कि
" मंत्राधीनाश्च देवता"

अर्थात सभी देव शक्तियां मंत्रों के अधीन है और मंत्रों के द्वारा आह्वान करने पर वे स्थूल या सूक्ष्म रुप में उपस्थित होते हैं और आपका कार्य संपन्न करते हैं ।
खैर.....

यह एक अलग विषय है !
इस पर चर्चा फिर करेंगे ।
ध्यान के बाद जब मेरी आंख खुली तो हम लोग एक अंधेरे कक्ष में थे ....

जिसमें नीले रंग की भगवती छिन्नमस्ता की मूर्ति रखी हुई थी और उसके अगल-बगल उनकी शक्तियों की मूर्तियां भी थी .....
मूर्ति अत्यंत भव्य थी !
उसमें से नीले रंग का बेहद सुकून देने वाला प्रकाश निकल रहा था !
इसके वर्णन के लिए मेरे पास शब्द नहीं है ...
जैसे हल्की धूप बिखरी हो और आप किसी घास के बड़े मैदान में अकेले लेटे हो .....
उस समय आसमान को और उसमे छाए हुए बादलों को आप शांति से देखेंगे तो आपके मन में जो भाव उत्पन्न होगा ....
कुछ-कुछ वैसा ही भाव उस मूर्ति को देखने से उत्पन्न हो रहा था ।

देवी छिन्नमस्ता अत्यंत उग्र देवताओं में से मानी जाती है । उनकी साधना करने वाले बेहद विरले होते हैं और उनकी साधना को जटिल माना जाता है । इसके अलावा उनको गुप्त महाविद्या कहा जाता है शायद इस वजह से ऊपर वाले कक्ष में उनकी मूर्ति नहीं थी । नौ महाविद्यायें वहां पर मौजूद थी और संभवत उसके ठीक नीचे वाले इस कक्ष में ! जहां हम इस समय मौजूद थे ! देवी छिन्नमस्ता की वह दिव्य मूर्ति विराजमान थी ।

मूर्ति कक्ष के बीचो-बीच बनी हुई थी । कक्ष के फर्श पर एक यंत्र बना हुआ था जिसमें एक गोला था । उसी गोले के अंदर यह मूर्ति रखी हुई थी । उसके ऊपर एक त्रिकोण था और फिर गोले बने हुए थे और अष्टदल कमल तथा द्वार भी था ।
वह संभवतः छिन्नमस्ता देवी का गोपनीय यंत्र बना हुआ था । जिसके केंद्र भाग में वह दिव्य मूर्ति विराजमान थी ।

तांत्रिक यंत्रों में ऐसा माना जाता है कि जब यंत्र के मध्य भाग में मंत्रों के द्वारा बिंदु का अंकन किया जाता है तब

वहां शक्ति स्थापित होती है । फिर वह यंत्र चमत्कारी प्रभाव पैदा करता है । उसके पहले तक वह तांबे का टुकड़ा होता है । जैसे ही उस बिंदु पर शक्ति अंकन हो जाता है ! वह चैतन्य हो जाता है !

उस दृष्टि से वह एक अद्भुत चैतन्य यंत्र था ! जिसके मध्य में साक्षात भगवती छिन्नमस्ता का विग्रह बिंदु के स्थान पर अंकित था !
आमने-सामने के दो त्रिकोण में एक में मैं बैठा हुआ था और दूसरे त्रिकोण में छाया बैठी हुई थी ।

छाया ने मुझसे कहा - मेरे साथ मंत्र को दोहराओ ।

उसने देवी छिन्नमस्ता के मूल मंत्र का उच्चारण करना प्रारंभ कर दिया ।
मंत्रों का उच्चारण धीरे-धीरे बढ़ता गया !
मध्यम स्वर में हम दोनों मंत्र जाप कर रहे थे ...
मंत्र जाप चलता रहा और उसी के साथ मैं ध्यान की अवस्था में चला गया था ....

बहुत सारे लोग ध्यान करने का उपाय बताते हैं । मस्तक के बीच वाले जगह पर जोर लगा कर देखेंगे तो वहां पर कुछ दिखने लगेगा....

या किसी भी लाल रंग के बिंदु पर या काले बिंदु पर या सफेद बिंदु पर ध्यान केंद्रित करेंगे तो ध्यान लग जाएगा.....

या किसी संगीत को सुनने से ध्यान लग जाएगा लेकिन यह सब वास्तविकता से परे है ।

ध्यान एक सहज प्रक्रिया है और वह अपने आप लगती है । उसके लिए आपको मेहनत करने या कष्ट करने की जरूरत नहीं है ।

सिर्फ मस्तिष्क को स्वतंत्र छोड़ना है ...

मुक्त करना है ।

आपकी मानसिक स्थिति और आपका भाव प्रबल है तो आप गाना गाते गाते ध्यान की अवस्था में जा सकते हैं ....

आप बातें करते करते ध्यान की अवस्था में जा सकते हैं ....

और आप मंत्र जाप करते करते भी ध्यान की अवस्था में जा सकते हैं ।

इसका सबसे सहज स्वरूप ओशो (आचार्य रजनीश) का ध्यान है । उनके "संभोग से समाधि तक" वाले स्वरूप को लोगों ने ज्यादा हाईलाइट किया जिसकी वजह से आज भी हम उनकी किताबें पढ़ने से झिझकते हैं ।
उनकी किताबें पढ़ें तो आप पाएंगे कि सनातन धर्म के बारे में आपकी दृष्टि ज्यादा विनम्र और तार्किक हो जाएगी ।
आपकी श्रद्धा भी बढ़ेगी....

अभी हम एक ऐसे कालखंड से गुजर रहे हैं जहां अधिकांश गुरु भी वह बता रहे हैं जो

उन्होंने पढ़ा है या सुना है ...

पढ़कर या सुनकर दूसरों को बताना बहुत सरल है ।
स्वयं साधना करके ! ध्यान करके ! कष्ट उठाकर अनुभव प्राप्त करने में काफी श्रम भी लगता है !
शारीरिक पीड़ा भी सहन करनी पड़ती है ....

कई प्रकार के अन्य प्रपंच का सामना भी करना पड़ता है .....

इसलिए स्वयं अनुभव करके बताने वाले गुरुओं की संख्या बहुत कम ! लगभग नहीं के बराबर रह गई है । ऐसे गुरु तो और भी कम रह गए हैं जो अपने शिष्य को भी इस प्रकार के अनुभव करा सकें ।

जब आप नियमित रूप से पूजन करते हैं !
गाना गाते हैं !
भजन गाते हैं !
ध्यान करते हैं !
योग करते हैं !
या कुछ भी करते हैं जो आपको बहुत ज्यादा अच्छा लगता है तो अचानक आप एक ऐसी स्थिति में पहुंच जाते हैं जहां से निकलने की आपकी इच्छा नहीं होती .....
यह स्थिति जिसमें मैं ! तू !! वह !!! कुछ भी नहीं होता वही ध्यान का प्रारंभ है.....

वह कुंड नीले रंग के पानी से भरा हुआ था ! अचानक उस पानी में लहरें उठने लगी ! लहरें समुद्र में उठने वाली लहरों के जैसी थी !
मंत्रों का स्वर मैं अभी भी सुन सकता था और उसकी तीव्रता बढ़ती जा रही थी .....

मैं भी ध्यान से लहरों को देखकर कारण समझने की कोशिश कर रहा था ....
लेकिन वहां समझने जैसा कुछ भी नहीं था ।
लहरें अपने उद्दाम यौवन को प्रदर्शित करती हुई सभी सीमाओं का उल्लंघन करने को आतुर हो रही थी .....
ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे किनारों को तोड़कर बाहर निकल जाना चाहती हैं .....

कुंड के किनारे, बेहद मजबूत, नीले रंग के पत्थरों से बने हुए थे ... जिन से टकराने के बाद वह लहरें वापस लौट जाती थी ।

काफी देर तक ऐसा ही चलता रहा ....
अचानक लहरों के बीच से देवी छिन्नमस्ता का स्वरूप प्रकट होने लगा .....

सद्य: छिन्न शिरा अर्थात ताजे कटे हुए मुंड को अपने बाएं हाथ में धारण करने वाली महामाया महाविद्या छिन्नमस्ता....

जिसका गर्दन वाला भाग ऐसा लग रहा था जैसे अभी अभी इसी तलवार के वार से कटा हो ...

कटे गर्दन के किनारों से खून बह कर नीचे की तरफ आ रहा था .....
बहते हुए खून की धाराएं गले से बहती हुई उत्तुंग स्तनों के ऊपर से बह रही थी और कमर तक जा रही थी .....

गर्दन से किसी पाइप से निकलने वाले पानी की तरह रक्त की तीन फुहारे निकल रही थी .....

जो उनके स्वरूप वर्णन के अनुसार ही तीन लपलपाती जिह्वाओं पर जाकर गिर रही थी.....

धीरे धीरे पूरा बिंब कुंड के जल से लगभग एक फुट की ऊंचाई तक उठकर रुक गया ....

जल के ऊपर नीले रंग का एक विशालकाय कमल था ....

जो बेहद स्निग्ध और ताजा-ताजा खिला हुआ दिख रहा था.....

उसकी पंखुड़ियों का रंग उसी प्रकार के हल्के नीले रंग का था, जिस रंग की मूर्ति उस यंत्र के मध्य में रखी हुई थी .....

उस दिव्य कमल के ऊपर विपरीत रति की मुद्रा में रति और कामदेव विराजमान थे ....

जिनके ऊपर अपना पदाघात करती हुई अद्भुत
तेजस्विता युक्त महाविद्या छिन्नमस्ता देवी ....
पूर्ण उन्मुक्त भाव से ....
नग्न अवस्था में दिखाई दे रही थी .....

उस अद्भुत तेजस्वी स्वरूप मे ....
शांति !

क्षुधा !!

तेजस्विता !!!

और चैतन्यता !!!

सब एक साथ दिख रही थी ....

तो तृप्ति का आभास भी हो रहा था ।
उनकी सहायिकाओं के मुख मंडल पर भी शोणित को पी लेने के बाद तृप्त हो जाने वाली मंद मंद मुस्कान बिखरी हुई थी ....

मैं उस दृश्य को देखकर अभिभूत था !
स्तब्ध था !!
और निशब्द भी...

जो मैं देख रहा था वह कल्पना से परे था !
एक ऐसा अद्भुत दृश्य जहां साक्षात महामाया अपने सहज स्वाभाविक वर्णित स्वरूप में सामने विराजमान थी !!
वह दृश्य मेरे मानस पटल पर पत्थर की लकीर की तरह अंकित हो गया !!!

तेजस्विता !!!

और चैतन्यता !!!

सब एक साथ दिख रही थी ....

तो तृप्ति का आभास भी हो रहा था ।
उनकी सहायिकाओं के मुख मंडल पर भी शोणित को पी लेने के बाद तृप्त हो जाने वाली मंद मंद मुस्कान बिखरी हुई थी ....

मैं उस दृश्य को देखकर अभिभूत था !
स्तब्ध था !!
और निशब्द भी...

जो मैं देख रहा था वह कल्पना से परे था !
एक ऐसा अद्भुत दृश्य जहां साक्षात महामाया अपने सहज स्वाभाविक वर्णित स्वरूप में सामने विराजमान थी !!
वह दृश्य मेरे मानस पटल पर पत्थर की लकीर की तरह अंकित हो गया !!!

आज भी एकांत के क्षण में जब मैं भगवती के स्वरूप का ध्यान करता हूं और उस दिन के उस दिव्य दर्शन की अनुभूति आती है तो शरीर थरथरा उठता है ! हृदय प्रफुल्लित हो जाता है !! महामाया के उस कृपा कटाक्ष को याद करके ....

मैं उस स्वरूप को देख रहा था और अपने आप को भूल कर खोया हुआ था ...
तभी !
मुझे एक झटका लगा ... और मैं वापस अपनी सामान्य अवस्था में आ गया ।

मैं उसी कमरे में बैठा हुआ था !
देवी के उस नीले विग्रह के सामने.....

मुझे लग रहा था कि तकरीबन 12 घंटे का समय बीत चुका था !
सामने स्थित विग्रह में चमक आती जा रही थी ...

पहले जितनी चमक थी अब उससे लगभग डेढ़ गुना चमक उस मूर्ति में आ चुकी थी !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उस मूर्ति से प्रकाश की किरणें निकल रही हो ....
नीली नीली शीतलता से भरी हुई ....
ह्रदय को अंदर तक भिगोती हुई !!!

लगभग दस पंद्रह मिनट तक उस चमकते हुए विग्रह को देखता हुआ मंत्र जाप करता रहा ...
उसके बाद फिर से ध्यान लग गया !

ध्यान एक बेहद अद्भुत चीज है !
इसकी प्रारंभिक अवस्था में आपको ऐसा एहसास होगा कि आप दुनिया से कट गए हैं ...
लेकिन आसपास की चीजें आपको महसूस होती रहेंगी....
धीरे-धीरे आसपास की चीजों का महसूस होना कम होता चला जाएगा .....
और एक ऐसी स्थिति आएगी जब आपको विचार शून्यता की अवस्था भी प्राप्त हो जाएगी !
इसका समय कम रहता है !
लेकिन !

जैसे जैसे यह समय बढ़ता जाएगा आपका ध्यान भी प्रबल होता जाएगा और आप समाधि की ओर अग्रसर होने लगेंगे ....

समाधि को ब्रह्मानंद कहा गया है !
अर्थात एक ऐसा अद्भुत आनंद जो परिभाषाओं से परे है...
जिसे प्राप्त कर लेने के बाद यह संसार निस्सार लगने लगता है ।
इसलिए बड़े-बड़े सिद्ध पुरुष गुफाओं में, कंदराओं में, पेड़ों की छांव में, जंगलों में....
इसी समाधि का अभ्यास करते बैठे रहते हैं ।
उन्हें दीन दुनिया से कोई लेना देना नहीं होता.....

अब आप ऐसा सोच सकते हैं कि यह तो काल्पनिक बात है ....
ऐसा नहीं होता है...
विभिन्न प्रकार के तर्क भी कर सकते हैं ।
इन सब का कोई मतलब नहीं है !

आध्यात्मिकता को आप तर्क से नहीं समझ सकते...

ध्यान को भी आप तर्क से नहीं समझ सकते ....
और समाधि को तो बिल्कुल भी नहीं !!!

सरल भाषा में अगर मैं कहूं कि हम अपने जीवन में इस समाधि के एक बहुत ही छोटे से अंश का अनुभव करते हैं !
तो....
आप शायद उसे स्वीकार नहीं करेंगे ।
लेकिन मेरी बात अगर आप पढ़े तो शायद आपको उसका एहसास अवश्य होगा।

यदि आपने विवाह किया है !
या किसी विपरीत लिंगी के साथ संबंध बनाए हैं !
और उन संबंधों के दौरान चरम स्थिति तक पहुंचे हैं !
तो.....
आपको एहसास होगा कि उस क्षण के सौवें हिस्से में एक असीम आनंद आपके अंदर किसी अज्ञात स्तोत्र से फूटता है ।
उसी आनंद की पुनः प्राप्ति के लिए आप इस प्रकार के संबंधों के लिए लालायित होते हैं ।

वह अल्प से भी अल्प समय का जो आनंद ! आपके अंदर से निकलता है ! वही आनंद आपको पुनः पुनः उसकी ओर खींचता है ।

वही आनंद उस ब्रह्मानंद का एक अंश है !
उसे ब्रह्मानंद सहोदर कहा गया है । अर्थात उस परम आनंद का जो की समाधि के समय प्राप्त होता है , उसका एक अंश मात्र है सहवास के समय चरम अवस्था पर पहुंचने से मिलने वाला क्षणिक आनंद !!!

आप थोड़ा सा सोचेंगे तो आप पाएंगे कि यह संपूर्ण संसार उसी आनंद के पीछे सक्रिय है ...
यदि जन्म की बात करें तो उसी आनंद को प्राप्त करने के लिए किए जाने वाली सहवास क्रिया का बायप्रोडक्ट है संतान !

किसी भी स्त्री पुरुष को शायद ही कभी एहसास होता होगा कि वह एक संतान की प्राप्ति के लिए इस क्रिया में रत हो रहे हैं !!

वे अपने अपने आनंद के लिए इस ओर सक्रिय होते हैं । कई बार की उस क्रिया के किसी सफल चरण में गर्भाधान होकर एक संतान उत्पन्न हो जाती है ! अर्थात संतानोत्पत्ति उस क्रिया का मूल नहीं होता बल्कि उस आनंद को या उस चरम सुख को प्राप्त करना ही इस क्रिया का उद्देश्य होता है ।

जब संतान उत्पन्न हो जाती है तो उसके बाद वह अपने आप को योग्य बनाने के लिए प्रयत्न करती है । इस योग्यता को प्राप्त करने के पीछे का मूल कारण भी सहयोगी की प्राप्ति है । सहयोगी की प्राप्ति का उद्देश्य पुनः उसी आनंद की प्राप्ति है जो उसके स्वयं के जन्म का कारण बनी ....
अर्थात वही ...
ब्रह्मानंद सहोदर....

यदि आप उस क्षणिक आनंद को सहवास की क्रिया में से हटा दें ...
तो.....
यकीन मानिए कि आधे से ज्यादा संसार पेड़ के नीचे बैठा हुआ ....

या कहीं आलस्य से पसरा हुआ दिखाई देगा !
संसार में जो सक्रियता विद्यमान है...
वह समाप्त हो जाएगी ।

माना जाता है कि ब्रह्मा ने सृष्टि की उत्पत्ति की !
उन्होंने अपने मानस अर्थात मानसिक शक्ति के द्वारा संतान की उत्पत्ति की और उनको संसार आगे बढ़ाने के लिए निर्देशित किया ।
वह सारी सन्तानें अपने अपने जप और ध्यान में मगन हो गए और उन्होंने ब्रह्मा जी के संसार बढ़ाने के निर्देश पर कोई ध्यान नहीं दिया !!
जब ब्रह्मा जी ने काफी कोशिश कर ली और कुछ नहीं हुआ तो वह भगवान शिव के पास इस समस्या का समाधान करने के लिए पहुंचे ।

जगतगुरु ! मेरे आराध्य !! भगवान शिव !!!
देवताओं में एक ऐसे देवता हैं जो गंभीर समस्या उत्पन्न होने पर ही याद किए जाते हैं ।
जहां उन्होंने समस्या समाधान की पहल की तो यह निश्चित होता है कि कुछ ना कुछ समाधान वे निकाल ही देंगे !

तो ....

ब्रह्मा जी भी अपनी समस्या का हल निकालने के लिए उनके पास पहुंचे !

भगवान शिव ने अपने अर्धनारीश्वर स्वरूप को प्रकट करते हुए अपने आधे भाग अर्थात अर्धांग से स्त्री स्वरूप की उत्पत्ति का रहस्य भगवान ब्रह्मा को समझाया ....

उसके बाद भगवान ब्रह्मा ने पुरुष और स्त्री दोनों की रचना करके इस मैथुनि सृष्टि की शुरुआत की ....

उसी दौरान इस सूक्ष्म ब्रह्मानंद सहोदर वाले तत्व को सहवास के साथ जोड़कर दोनों शरीरों में स्थापित कर दिया गया ताकि दोनों के बीच आकर्षण रहे और वह सहवास के लिए लालायित रहे ....

उस समय इन्स्टाल किया गया यह सॉफ्टवेयर तब से आज तक लगातार काम कर रहा है !

मजे की बात यह है कि इसकी समझ जितनी पढ़े-लिखे बुद्धिमान लोगों को होती है....

उतनी ही समझ अफ्रीका के जंगलों में रह रहे आदिवासियों को भी होती है....

आचार्य रजनीश या ओशो के द्वारा लिखी गई किताब "संभोग से समाधि तक" का मूल भी यही था ! उन्होंने इसी तत्व को समझाने का प्रयास किया था और काफी विस्तार से समझाने की कोशिश की थी ।

लेकिन समय के हिसाब से वह काफी पहले था ! यह संभव है कि अगर ओशो आज के समय में होते तो उनकी बात को लोग ज्यादा बेहतर ढंग से समझ पाते ! आज से 30-40 साल पहले लोगों की मानसिकता और आज के लोगों की मानसिकता में जमीन आसमान का फर्क आ चुका है ।

उनका पूरा चिंतन था कि ...

जहां पर आप उस ब्रह्मानंद सहोदर वाले अनुभव को या समाधि के अंश को महसूस करते हैं ...

उस बिंदु को ...

या उस काल को...

जितना लंबा खींच सकें ....

उनके अनुसार उस स्थिति को जितना ज्यादा समय तक मेंटेन कर सकें....

उतना आपकी आध्यात्मिक ऊर्जा बढ़ेगी !

उतना आपके अंदर सकारात्मक चिंतन बढ़ेगा !!
उतना आपका शरीर ऊर्जावान होगा !!!
उतना आपका शरीर चैतन्य होगा !!!!

ओशो ने यह बात समझाने की कोशिश की थी....
लेकिन उनकी बातों को केवल सेक्स से जोड़ दिया गया
और समाधि वाले हिस्से को नकार दिया गया ।

तंत्र विशेष रूप से वाममार्गी तंत्र इस रहस्य को सदियों
से जानता है !
इस समाधि की अवस्था को प्राप्त करने के लिए दोनों
स्त्री और पुरुष एक साथ मिलकर साधनाएं करते हैं ।
इसलिए आप देखेंगे कि प्राचीन मंदिरों में पुरुष और स्त्री
की एक साथ प्रतिमाएं लगी हुई है.....
वह भी विभिन्न मुद्राओं में !!

इसके पीछे का एक चिंतन यह भी हो सकता है कि
जो चीज, किसी साधक को सबसे ज्यादा विचलित
करती है उसी चीज के सानिध्य में अगर उसे रखा जाए
तो धीरे-धीरे वह उस वस्तु से या काम से प्रभावित नहीं
होगा ।

ज्यादा धैर्य पूर्वक ज्यादा सरलता से ज्यादा सहजता से और ज्यादा समय तक साधनाएं कर पाएगा....

गृहस्थ जीवन में भी आप इसका प्रभाव देख सकते हैं !

जिन विवाहित जोड़ों का यौन जीवन ज्यादा सुखद होता है ....

उनका व्यवहार भी ...

और उनका व्यक्तित्व भी ....

ज्यादा विकसित, संतुलित और आकर्षक होता है ।

अस्तु....

स्त्री पुरुष के युगल स्वरूप का साधनाओं में भी विशेष महत्व है ।

उधर मैं फिर से ध्यान की अवस्था में जा चुका था ।

ध्यान की अवस्था में इस बार कुंड की जगह पूरा समुद्र दिखाई दे रहा था....

समुद्र का जल लाल था !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे रक्त का समुद्र हो !!

समुद्र के बीचो-बीच एक टापू बना हुआ था और उस टापू की विशेषता यह थी कि वह सोने का बना हुआ दिख रहा था !

बिल्कुल उसी प्रकार से चमचमाता हुआ !
किसी अज्ञात स्रोत से आ रही प्रकाश किरणे उससे टकरा रही थी और उसकी चमक को बढ़ा रही थी ।
उसकी स्वर्णिम आभा अपने पूर्ण यौवन पर बिखरी पड़ी थी ....
इतनी चमक थी कि आंखें चौंधिया जा रही थी । धीरे-धीरे उस द्वीप से निकल रहा प्रकाश बढ़ता चला गया और ऐसा महसूस होने लगा जैसा दोपहर के सूर्य को देखने से महसूस होता है ।
भयंकर प्रकाश होते हुए भी....
कुछ भी दिखाई ना देने वाली स्थिति ...
यह स्थिति कुछ देर रही होगी ।
अचानक अंधेरा छाने लगा ....
वह सोने का द्वीप धीरे-धीरे समुद्र में डूबता जा रहा था और उसी के साथ रोशनी भी समाप्त होती जा रही थी ।

धीरे-धीरे....
वह पूरा का पूरा सुनहरा द्वीप समुद्र में डूब गया और प्रकाश समाप्त हो गया ।
अब सिर्फ गहरा काला रंग दिखाई दे रहा था ।

सब कुछ अंधकारमय लग रहा था ।
जल के हिलने से होने वाली आवाज ...
लहरों की थिरकन सुनाई जरूर दे रही थी ....
लेकिन दिखाई नहीं दे रही थी ।

काफी देर तक वैसा ही अंधकार छाया रहा । फिर धीरे-धीरे मंत्र की ध्वनियां सुनाई देने लगी । छिन्नमस्ता देवी का मंत्र उसी प्रकार से गुंजरित हो रहा था ...
ऐसा लग रहा था जैसे मैं भी उसके साथ स्वर मिलाकर मंत्र जाप कर रहा हूं ....
मुझे ऐसा लग रहा था जैसे सारी दिशाएं मंत्र जाप कर रही है ....

हर चीज से मंत्र की ध्वनि उच्चरित हो रही है ऐसा मुझे प्रतीत हो रहा था .....
मैं भावविभोर होकर बैठा हुआ था ।
समय का आभास मेरे लिए जैसे शून्य सा हो गया था ।
काफी देर तक वैसी ही स्थिति रही !

अचानक....

उस समुद्र के भीतर से एक आग का गोला सा बाहर की ओर निकलता हुआ प्रतीत हुआ ।

पहले उसका एक हल्का सा भाग दिखाई दिया ।

रोशनी फिर चारों तरफ बिखर गई ॥

धीरे-धीरे वह जल से ऊपर निकलने लगा और एक स्तंभ के रूप में ऊपर बढ़ने लगा !

धीरे-धीरे उसकी ऊंचाई इतनी ज्यादा हो गई कि उसका ऊपरी छोर दिखाई देना बंद हो गया !!

अब वह एक गोल पिल्लर या खंबे के रूप में दिखाई दे रहा था...

जिसमें से प्रकाश की अजस्त्र किरणें हर तरफ बिखरी हुई थी ...

पूरा समुद्र उसके प्रकाश से प्रकाशित हो रहा था । उस पिलर का व्यास लगभग पचास मीटर के आसपास रहा होगा । सुर्ख नारंगी रंग का वह स्तंभ या पिलर उसी तरह से प्रकाश की वर्षा करता हुआ सामने विद्यमान था ।

चारों तरफ से देवी छिन्नमस्ता के मंत्र की ध्वनियाँ गुंजरित हो रही थी ....

उस समुद्र के भीतर से एक आग का गोला सा बाहर की ओर निकलता हुआ प्रतीत हुआ ।

पहले उसका एक हल्का सा भाग दिखाई दिया ।

रोशनी फिर चारों तरफ बिखर गई ॥

धीरे-धीरे वह जल से ऊपर निकलने लगा और एक स्तंभ के रूप में ऊपर बढ़ने लगा !

धीरे-धीरे उसकी ऊंचाई इतनी ज्यादा हो गई कि उसका ऊपरी छोर दिखाई देना बंद हो गया !!

अब वह एक गोल पिल्लर या खंबे के रूप में दिखाई दे रहा था...

जिसमें से प्रकाश की अजस्त्र किरणें हर तरफ बिखरी हुई थी ...

पूरा समुद्र उसके प्रकाश से प्रकाशित हो रहा था । उस पिलर का व्यास लगभग पचास मीटर के आसपास रहा होगा । सुर्ख नारंगी रंग का वह स्तंभ या पिलर उसी तरह से प्रकाश की वर्षा करता हुआ सामने विद्यमान था ।

चारों तरफ से देवी छिन्नमस्ता के मंत्र की ध्वनियाँ गुंजरित हो रही थी ....

मुझे पता नहीं चला कि कितना समय गुजर गया ! मेरे मुख से भी मंत्रों का उच्चारण लगातार जारी था ।

काफी समय गुजरने के बाद ....

मुझे फिर से झटका सा लगा ....

और सारा दृश्य सामने से गायब हो गया ।

मैंने आँखें खोली तो मैं वापस उसी कक्ष में बैठा हुआ था । सामने छाया बैठकर मंत्र जाप कर रही थी ।

उसकी स्थिति भी मेरे जैसे ही प्रतीत हो रही थी ।

लगभग एक डेढ़ घंटे तक उसी अवस्था में बैठकर मैं भी मंत्र जाप करता रहा ...

तभी ...

एक लंबे ओंकार के उच्चारण के साथ छाया ने अपने मंत्रोच्चार को विराम दिया और अपने स्थान से उठ कर खड़ी हो गई .....

उसे खड़ा होता देखकर मैंने भी खड़ा होना चाहा लेकिन उसने मुझे मना कर दिया ।

अब तक उस नीली मूर्ति की रोशनी काफी तेज हो चुकी थी !

पूरा कमरा नीले रंग के प्रकाश से चमक रहा था !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उस मूर्ति के अंदर कोई प्रकाश का स्त्रोत अपने आप जागृत हो गया हो !

या....

वह मूर्ति अपने आप में किसी अज्ञात उर्जा से प्रकाशित हो रही हो ....

सब तरफ नीला प्रकाश फैला हुआ था ।

कमरे मे बने हुए उस यंत्र के मध्य भाग में वह मूर्ति रखी हुई थी !

उस यंत्र मे बने हुए त्रिकोण के एक तरफ में बैठा था और दूसरी तरफ छाया बैठी हुई थी ।

छाया अपने आसन से उठ कर मेरी तरफ आ रही थी ।

वह मेरे पास पहुंची और मुझ पर आरूढ़ हो गई ....

मंत्र जाप अभी चालू था.....

उसी अवस्था में मंत्रोचार चलता रहा...

लगभग एक डेढ़ घंटे तक हम दोनों उसी अवस्था में रहे...

हम दोनों की आंखें बंद थी !

संभवत: दोनों ही ध्यानावस्था में देवी छिन्नमस्ता का मंत्र जाप कर रहे थे ।

ध्यान की अवस्था में मुझे फिर से वह रक्तिम समुद्र दिखाई देने लगा ...

समुद्र के भीतर से गुलाबी रंग का कमल बाहर की तरफ आने लगा ।

पुनश्च !

भगवती छिन्नमस्ता देवी और उनके दोनों सखियों का स्वरूप उसी प्रकार बिम्बात्मक स्वरूप मे प्रकट होने लगा ।

मैं अभिभूत होकर उनका दर्शन कर रहा था !

दर्शन करते करते मेरी नजर धीरे-धीरे नीचे की तरफ चली गई !

जब मैंने विपरीत रति में रत कामदेव और रति के चेहरों की तरफ देखा.....

तो !

मुझे एक जोर का झटका लगा ....

क्योंकि.....

वह तो मेरे और छाया के चेहरे जैसी दिख रही थी ...

मैं आश्चर्यचकित था !

यह कैसे संभव है ?

जहां पर रति और कामदेव होने चाहिए वहां पर मैं और छाया कैसे दिख रहे हैं ?

कहीं यह मेरा भ्रम तो नहीं है ?

इस प्रकार से कैसे हो सकता है ?

अचानक....

मेरी नजर छाया के ऊपर गई...

वह नीला वाला जो विग्रह यंत्र के मध्य में था वह धीरे धीरे ऊपर की तरफ उठ रहा था....

दिलचस्प बात यह थी कि उनके इर्द-गिर्द खड़ी हुई दोनों सखियां दिखाई नहीं दे रही थी ।

केवल माता का विग्रह ऊपर की तरफ उठ रहा था अपने कटे हुए शीर्ष के साथ ....

वह नीली मूर्ति लगभग 4 या 5 फुट ऊपर उठी होगी...

तभी ...

मुझे लगा कि मेरे सर की तरफ कोई खड़ा है !

मैंने पलट कर देखा !!

महामाया की मूर्ति के साथ जो दो अन्य मूर्तिया थी ....

उसमें से काले रंग वाली मूर्ति....

मेरे सर के पास.....

जीवित रूप में खड़ी थी ।
मैंने नीचे पाँवों की तरफ देखा तो सफेद रंग वाली मूर्ति वहाँ खड़ी थी !
दोनों ने हमें उसी अवस्था में उठाकर यंत्र के बीच के वृत्ताकार भाग मे लिटा दिया !
अब हम यंत्र के मध्य में मौजूद थे !
हमें लिटाने के बाद वे दोनों भी हम दोनों के ऊपर आरूढ हो गई ...

एक सर की तरफ...
और एक पाँव की तरफ .....

तभी ...
मुझे अपने जमीन से उठने जैसा आभास होने लगा !
वह यंत्र जो पत्थर पर उकेरा हुआ था !
वह अचानक एक कमल के रूप में परिवर्तित होकर धीरे से उसी प्रकार ऊपर उठने लगा जिस प्रकार जल के भीतर से कमल का फूल बाहर की तरफ निकलता है ...

धीरे-धीरे उठता हुआ वह कमल उस स्थिति तक पहुंच गया जहां पर वह देवी मूर्ति हम दोनों से स्पर्श होने को थी .....

लगभग चार इंच का फासला रहा होगा !
उसकी शीतलता का आभास होने लगा था !!
ठीक वैसे ही जैसे बर्फ के पास जाने से होता है ....

कुछ क्षणों तक वही स्थिति रही और फिर अचानक से वह दिव्य नील वर्णी मूर्ति छाया की पीठ पर स्थापित हो गई !
जैसे ही वह उसकी पीठ पर स्थापित हुई .....
बिजली का जोरदार झटका लगा !
हम दोनों का पूरा शरीर थरथरा गया !!

वह झटका कुछ कुछ ऐसा था जैसे अचानक बिजली के तार पर हाथ पड़ जाने पर लगता है ।

झटका लगते ही हम दोनों फिर से शून्य की अवस्था में चले गए !

वह स्थिति कुछ आधा एक घंटे की रही होगी !

उसके बाद फिर से सब कुछ सामान्य हो गया ।
धीरे धीरे जब हम ने आंखें खोली तो हम वापस उसी महाकाली की मूर्ति के सामने खुले हुए दालान में बैठे हुए थे ...
मंत्र जाप उसी प्रकार से चालू था !
महाकाली की वह काले रंग की मूर्ति नीले रंग से प्रकाशित हो रही थी ...
उस दिव्य प्रकाश को देखता हुआ बैठा हुआ था ।
मंत्र जाप उसी प्रकार से जारी था ...

याद नहीं आ रहा था कि जो हुआ वह ...
सत्य था ?
स्वप्न था ??
या क्या था ???

धीरे-धीरे भगवती महाकाली की मूर्ति का रंग वापस काला होने लगा ।
जब वह पूरी तरह से काला हो गया तब छाया के मुख से पुनः देवी काली की स्तुति उच्चरित होने लगी ....

विरञ्च्यादिदेवास्त्रयस्ते गुणास्त्रीम ,

समाराध्य कालीम प्रधाना बभूवुः ।
अनादिम सुरादिम मखादिम भवादिम,
स्वरुपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥ 1 ॥

जगंमोहनीयम तु वाग्वादिनीयम,
सुह्रित्पोषिणी शत्रुसन्हारिणीयम् ।
वचस्स्तम्भनीयम् किमुच्चाटनीयम्,
स्वरुपम् त्वदीयम् न विन्दति देवाः ॥ 2 ॥

इयम् स्वर्गदात्री पुनः कल्पवल्ली,
मनोजास्तु कामान्यथार्थ प्रकुर्यात् ।
तथा ते कृतार्था भवंतीति नित्यम्,
स्वरुपम् त्वदीयम् न विन्दन्ति देवाः ॥ 3 ॥

सुरापानमत्ता सुभक्तानुरक्ता,
लसत्पूतचित्ते सदाविर्भवस्ते ।
जपध्यानपूजासुधाधौतपङ्काः,
स्वरुपम् त्वदीयम् न विन्दन्ति देवाः ॥ 4 ॥

चिदानन्दकन्दम हसन्मन्दमन्दम ,
शरच्चन्द्रकोटिप्रभापुञ्जबिम्बम् ।

मुनीनाम् कवीनाम् ह्रदि द्योतयन्तम्,
स्वरुपम् त्वदीयम् न विन्दन्ति देवाः ॥ 5 ॥

महामेघकाली सुरक्तापि शुभ्रा,
कदाचिद्विचित्राकृतिर्योगमाया ।
न बाला, न वृध्दा, न कामातुरापि,
स्वरुपम् त्वदीयम् न विन्दन्ति देवाः ॥ 6 ॥

क्षमस्वापराधं महागुप्तभावं,
मयि लोकमध्ये प्रकाशीकृतं यत् ।
तव ध्यानपूतेन चापल्यभावात्,
स्वरुपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥ 7 ॥

यदि ध्यानयुक्तम पठेद्यो मनुष्य-
स्तदा सर्वलोके विशालो भवेच्च ।
गृहे चाष्टसिध्दिमृते चापि मुक्तिः,
स्वरुपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥ 8 ॥

क्षमा प्रार्थना समाप्त होते-होते मूर्ति अपने स्वाभाविक रुप में आ चुकी थी .....

मेरी आंखों में आंसू थे ...

और छाया की आंखों में भी !

संभवत: ...

उस अभूतपूर्व अनुभव से गुजरने के आनंद की वजह से हो ...

लगभग दस पंद्रह मिनट तक हम दोनों मौन प्रकृति के अद्भुत सानिध्य में बैठे रहे....

उसके बाद छाया उठ कर खड़ी हो गई !

और साथ में मैं भी !!

मैंने उसे प्रश्नवाचक निगाहों से देखा ...

वह बोली - भगवती ने पूजन स्वीकार किया है । अब हमको इस मंत्र का ग्यारह हजार जाप अपने स्थान पर करना है ! मैं अपना पूजन तारापीठ पर संपन्न करूंगी ।

उसके मुख से अनुकूल जानकारी ने वास्तव में ह्रदय में उल्लास पैदा कर दिया ।

भगवती की कृपा प्राप्त होना जीवन का सौभाग्य होता है । वह भी एक ऐसे समय में मिल रहा था जब मेरा सबसे करीबी ! मेरा जिगरी दोस्त !! गंभीर संकट में था ।

उसके संकट का समाधान भगवती की आराधना से ही निकलने वाला था ....

इसका मातलब था कि तीन दिन निकल चुके थे ।
समय के निकलने का इस साधना के दौरान आभास नहीं हुआ था । ऐसा लग रहा था जैसे अभी बैठे हो और अभी उठ रहे हो । इसका कारण संभवतः गुरुदेव के द्वारा करवाई गई देह सिद्धि साधना भी हो सकती है । जिसकी वजह से शरीर इस प्रकार से लंबे समय तक बैठने का अभ्यस्त हो जाता है .....

उस समय शाम के 3 या 4 बजे होंगे क्योंकि सूरज पूरी तरह से डूबा नहीं था ।
उसकी किरणें बिखरी हुई थी....
जो दोपहर के बाद के समय का आभास करा रही थी .....
यह अद्भुत और अविस्मरणीय था !
अब जो होने वाला था वह भी संभवतः जीवन का एक अलग ही अनुभव था....

जिस प्रकार से मुझे छाया लेकर आई थी ठीक उसी प्रकार से उसने मुझे वापस घर भी छोड़ दिया ।
कामिया सिंदूर की एक डिबिया मुझे देकर वह अल्प क्षण में वहां से गायब भी हो गई ...

कामिया सिंदूर तांत्रिक सिंदूर होता है । जो विशेष प्रकार के रक्षा प्रयोग में काम आता है ।

संभवत: उसने जटाशंकर के लिए वह दिया होगा ।

मुझे सबसे ज्यादा उत्सुकता जटाशंकर के स्वास्थ्य को लेकर थी ...

इन 3 दिनों में उसके साथ क्या हुआ यह जानना जरूरी था ।

अभी इतना समय भी नहीं था कि मैं अस्पताल जाकर उसे देख सकूं ।

उससे ज्यादा जरूरी था, बचे हुए मंत्र जाप को पूरा करना....

ताकि....

हरेली की रात को उसके ऊपर किए जाने वाले प्रयोग की काट संपन्न कर सकूं ...

मैंने अपना फोन चेक किया ...

उसमें ढेर सारे मिसकॉल पड़े हुए थे । जो अधिकांश वैशाली के ही थे ।

मैं सोच ही रहा था कि उससे फोन करके पता करूं कि जटाशंकर की हालत कैसी है ?

तभी !

फोन की घंटी बजने लगी ।
मैंने फोन उठाया तो दूसरी तरफ वैशाली ही थी ।

वह बोली - आप 3 दिन से कहां गायब हो गए थे ?
जटाशंकर जी की हालत के बारे में आपको बिल्कुल ध्यान नहीं रहा क्या ?

महिलाओं के साथ यह एक बहुत बड़ी दिक्कत होती है । वह फोन मिलाते ही चमकाना चालू कर देती है । शिकायतों का पूरा पिटारा खोल देती है ।
लगभग पंद्रह मिनट तक उसने अपनी कहानी सुनाइ ।
सोमवार से जटाशंकर की हालत में सुधार हुआ था लेकिन मंगलवार से उसे फिर दिक्कत होने लगी थी ।
मंगलवार की रात को उसको इतनी जोर जोर से हिचकियां आई थी कि वह बिस्तर से आधा बाहर गिर गया था ...
नर्स ने समय पर देख लिया वरना वह जमीन पर गिर जाता ....

लगभग 1 घंटे के बाद उसकी हालत में सुधार होने लगा था और रात गुजर गई ....

बुधवार की सुबह से उसे पेशाब में खून जाने लगा था ....

खून की मात्रा इतनी ज्यादा थी कि पेशाब गाढे लाल रंग का दिखाई देता था जैसे पूरा खून हो ....

यह सब देखकर डॉक्टर भी परेशान हो चले थे !

माता जी का रो रो कर बुरा हाल था !

वैशाली अकेली सब कुछ संभाल रही थी ।

बुधवार का पूरा दिन जटाशंकर के पेशाब से खून जाता रहा । डॉक्टरों ने सावधानी बरतते हुए चार बोतल खून उसे चढ़ा दिया .....

उसे एम आर आई करने के लिए ले जाया गया लेकिन जांच में कुछ भी नहीं निकला ....

बुधवार रात होते-होते जटाशंकर की हालत और ज्यादा खराब होने लगी ।

ऐसा लग रहा था जैसे वह गुरुवार का सूरज शायद ही देख पाए ....

वैशाली ने बताया - मैं भगवान से प्रार्थना कर रही थी कि कुछ रास्ता निकालें ! मेरी आंखों से आंसुओं की

धारा बह रही थी और मैं भगवान शिव को पूरे हृदय से याद कर रही थी .....

रात के लगभग 4 बजे के आसपास का समय रहा होगा जब अचानक कमरे में एक नीले रंग की रोशनी का छोटा सा गोला प्रकट हुआ ...

जो छत में चिपका हुआ था ।

वह गोला धीरे-धीरे जटाशंकर की ओर बढ़ रहा था .....

मैं डर के मारे अपनी कुर्सी से चिपकी हुई थी.....

जो हो रहा था वह मेरी सोच से परे था ।

वह नीले रंग का गोला धीरे-धीरे जटाशंकर के पास तक पहुंच गया !

उसके माथे के भाग में स्पर्श करता हुआ थोड़ी देर रुका रहा ...

उसके बाद उस गोले ने जटाशंकर के शरीर के चारों तरफ एक घेरा लगाया ...

और.....

जिस प्रकार से अचानक आया था उसी प्रकार से लुप्त भी हो गया !!

यह सब देख कर डर के मारे मैं बेहोश हो गई । सुबह नर्स के बुलाने पर मेरे होश वापस लौटे । उसने मुझे दवा की एक स्लिप दी जिसे लाना था ।
मैंने पेशाब की थैली की ओर देखा तो उसका रंग पीला हो चुका था ....
यानी खून जाना बंद हो चुका था ।

मेरी नजरें नर्स से टकराई तो वह मुस्कुराई और बोली कि खून जाना बंद हो गया है ....

उसके बाद स्थिति काफी संभल गई थी , दोबारा वह नीला प्रकाश मुझे दिखाई नहीं दिया । आज पूरे दिन स्थिति पहले से बेहतर रही ।
जटाशंकर को अब भी बीच-बीच में हिचकियों के दौरे पड़ रहे थे ।
हां!
यह अच्छा था कि दस पंद्रह मिनट मे हिचकियां बंद हो जाती थी । पहले की तरह लगातार लंबे समय तक चालू नहीं रहती थी ।
जिसे डॉक्टर हालत में सुधार मान रहे थे ।
अभी भी उसे होश नहीं आया था ....

मैं समझ गया कि भगवती ने जटाशंकर को अपनी सुरक्षा घेरे में ले लिया है और अब वह बच जाएगा । मुझे निर्धारित कार्य तो करना ही था । जिसके लिए लंबे समय तक साधना करनी जरूरी थी....
यह सोचकर मैं थोड़ा सा विश्राम करने के लिए अपने बिस्तर पर पसर गया और लेटते ही जोरदार नींद आ गई ।
जब नींद खुली तो रात के दस बज चुके थे ।
वह गुरुवार का दिन था .....
अगले दिन शुक्रवार था ।
और हरेली भी !

यानी मेरे पास लगभग 24 घंटे का समय था जिसमें मुझे 11000 मंत्र जाप पूरा कर लेना था .....

स्नानादि से निवृत्त होकर मैं अपने पूजन कक्ष में बैठ गया ।

किसी भी प्रकार की साधना में पहले गुरु पूजन तथा गुरु मंत्र का जाप कर लेने से वह साधना निर्विघ्न रुप से संपन्न होती है ।

गुरुदेव का पूजन मंत्र जाप आदि संपन्न करने के बाद
मैंने छिन्नमस्ता मंत्र का जाप लगभग रात के 11 बजे के
आसपास प्रारंभ कर दिया .....
एक घंटे का जाप हुआ होगा ...
जब अचानक...
मेरे मानस पटल पर एक दृश्य दिखाई देने लगा ।
उस दृश्य में तीन महिलाएं नग्न अवस्था में एक पेड़ के
चारों तरफ बने हुए घेरे में खड़ी हुई थी ....
तीनों के सामने विचित्र प्रकार की पूजन सामग्रियों के
अलावा मुर्गे !
जो कि काले रंग के थे !
रखे हुए थे ।
वहां से कुछ दूरी पर एक और महिला निर्वस्त्र अवस्था में
दूसरी तरफ मुंह करके खड़ी हुई थी !
उसके पास एक काला बकरा बंधा हुआ था ।
मैं समझ गया कि यह जटाशंकर के लिए जमुना के द्वारा
किए जा रहे प्रयोगों का दृश्य है ....
तीनों के सामने एक एक खोपड़ी रखी हुई थी ।
खोपड़ी की साइज देखकर ऐसा लगता था जैसे वह
छोटे बच्चे की खोपड़ी हो ....

खोपड़ियों पर काजल लगा हुआ था ।
जिस के ऊपर कोई काले रंग की चीज रखी हुई थी ।
जिसमें से हल्का हल्का धुआं निकल रहा था ...

यह देख कर मेरा मन थोड़ा सा विचलित हुआ , लेकिन फिर मैंने अपने आप को संभाल लिया और मंत्र जाप में लग गया....

रात भर अनेक प्रकार की आवाजें आती रही और विभिन्न प्रकार के परीक्षण भी चलते रहे लेकिन किसी प्रकार से रात गुजर गई ....
अगले दिन शाम के लगभग 6 बजे मेरा मंत्र जाप पूरा हो गया ...

मैंने क्षमा प्रार्थना आदि संपन्न करके सीधे अस्पताल की ओर जाने का विचार बनाया ...
कपड़े बदल कर मैंने जैसे ही मोटरसाइकिल निकाली ....
तो पूरा टायर बैठा हुआ था . ..

मामूली पंचर होगा सोच कर मैंने उसे धकेल कर पास ही पंचर की दुकान तक ले जाने के विषय में विचार किया ।

जब मैंने टायर को चेक किया तो वह मामूली पंचर नहीं था ।

ऐसा लग रहा है जैसे किसी ने उसे चाकू से फाड़ दिया हो । लगभग 2 इंच के भाग से टायर फटा हुआ था ।

अब यह आश्चर्य की बात थी कि घर में रखा रखा टायर इतना बड़ा कैसे फटा....

तंत्र साधना के द्वारा और तांत्रिक शक्तियों के द्वारा कुछ भी किया जा सकता है ...

मेरे पास दूसरी गाड़ी नहीं थी ...

इसलिए मैंने ऑटो करके अस्पताल जाने का विचार बनाया । मैं जल्दी से घर से बाहर निकला और एक ऑटो पकड़ कर हॉस्पिटल की ओर रवाना हो गया ।

घर से हॉस्पिटल मुश्किल से 4 किलोमीटर की दूरी पर था ... पैदल भी जा सकता था !

समय कम था और जटाशंकर के पास जल्दी से जल्दी पहुंचना जरूरी था ।

इसलिए ऑटो में बैठकर मैं निश्चिंत हो गया कि समय पर पहुंच जाऊंगा ...

मुश्किल से एक डेढ़ किलोमीटर चलने के बाद ऑटो अचानक झटके के साथ रुक गया ....

यह बड़ी अजीब सी बात थी कि अच्छा खासा चल रहा ऑटो अचानक रुक गया ...

मैं अपने चिंतन में डूबा हुआ था अचानक इस प्रकार रुक जाने से मुझे झटका लगा ।

मैंने ड्राइवर से पूछा - क्या हुआ ?

वह बोला - साहब ! टायर पंचर हो गया है ।

अब यह एक नई मुसीबत सामने आ गई थी जो यह बताने के लिए पर्याप्त थी कि कोई तो ऐसा था जो मुझे जटाशंकर के पास पहुंचने से रोक रहा था ...

मैंने उससे पूछा - स्टेपनी है ?

उसने कहा - हां है ।

मैं स्कूटर से नीचे उतर गया । तब तक वह अपना पाना और स्टेपनी बाहर निकाल चुका था ...

वह बोला - बिल्कुल पहुंचा दूंगा साहब ! लेकिन थोड़ा सा समय ज्यादा लगेगा । वापसी में मैं इसे मैकेनिक के पास दिखा लूंगा ।

मैंने राहत की सांस ली क्योंकि जाते समय मैकेनिक को दिखाने की कोशिश करने पर और ज्यादा समय लग सकता था ....

लुढ़कते लुढ़कते आखिरकार ऑटो हॉस्पिटल तक पहुंच गया ।

इन सारे प्रपंचों के कारण 15 मिनट का सफर 1 घंटे का हो गया था ....

शाम के साढ़े सात बजे मैं अस्पताल पहुंच चुका था । अस्पताल में वैशाली और जटाशंकर की माताजी दोनों मौजूद थे । मुझे देख कर दोनों खुश हुई । माताजी ने मुझसे पूछा - तीन दिन कहां गायब रहे ?

अब मैं उनको क्या बताता कि मैं कहां गया था इसलिए मैंने मौन रहना बेहतर समझा ।

मैंने दोनों को घर जाने के लिए कहा तथा आश्वासन दिया कि रात भर मैं यहीं पर रहूंगा । काफी बोलने के बाद वैशाली तो चली गई लेकिन माताजी जाने

वह बोला - बिल्कुल पहुंचा दूंगा साहब ! लेकिन थोड़ा सा समय ज्यादा लगेगा । वापसी में मैं इसे मैकेनिक के पास दिखा लूंगा ।

मैंने राहत की सांस ली क्योंकि जाते समय मैकेनिक को दिखाने की कोशिश करने पर और ज्यादा समय लग सकता था ....

लुढ़कते लुढ़कते आखिरकार ऑटो हॉस्पिटल तक पहुंच गया ।

इन सारे प्रपंचों के कारण 15 मिनट का सफर 1 घंटे का हो गया था ....

शाम के साढ़े सात बजे मैं अस्पताल पहुंच चुका था । अस्पताल में वैशाली और जटाशंकर की माताजी दोनों मौजूद थे । मुझे देख कर दोनों खुश हुई । माताजी ने मुझसे पूछा - तीन दिन कहां गायब रहे ?

अब मैं उनको क्या बताता कि मैं कहां गया था इसलिए मैंने मौन रहना बेहतर समझा ।

मैंने दोनों को घर जाने के लिए कहा तथा आश्वासन दिया कि रात भर मैं यहीं पर रहूंगा । काफी बोलने के बाद वैशाली तो चली गई लेकिन माताजी जाने

को राजी नहीं हुई । बड़ी मुश्किल से उनको समझा-बुझाकर मैंने घर भेजा....

मैं जानता था कि आज की रात जटाशंकर पर भारी पड़ने वाली है और उसके साथ रहने वाले के ऊपर भी खतरा हो सकता है ।

इसलिए मैं चाहता था कि माताजी वहां ना रहे । उसके लिए अलग से कमरा एलॉट हो चुका था और रात में बुलाने पर ही नर्स का डॉक्टर आते थे क्योंकि इस प्रकार के मरीजों को दी जाने वाली दवाइयां निर्धारित होती है और वह धीरे-धीरे चढ़ती रहती हैं ....

जटाशंकर के शरीर में भी ग्लूकोस की बोतल पाइप आदि की व्यवस्था लगी हुई थी ।

मैंने कामिया सिंदूर की डिबिया खोली और उसमें से थोड़ा सा निकालकर जटाशंकर के माथे पर लगा दिया । महाकाली के रक्षा मंत्र से उसके बिस्तर को चारों तरफ से घूम कर आबद्ध किया ...

उसके बाजू में कुर्सी पर बैठ गया ...

कुर्सी की पुश्त पर सर टिकाते ही मुझे नींद आने लगी क्योंकि मैं रात भर का जागा हुआ था.....
नींद एक ऐसी चीज है जो जब आ जाए तो अच्छे अच्छों को नहीं छोड़ती .....
कई बार तो गाड़ी चलाते ड्राइवर इसके आगोश में आकर बड़ी-बड़ी दुर्घटनाएं कर बैठते हैं ।
मैंने काफी कोशिश की कि नींद से बच सकूं लेकिन काफी कोशिश करने के बाद भी आधे घंटे बाद मुझे झपकी लग ही गई ।

लगभग पाँच दस मिनट की नींद हुई होगी !
जब कानों में अचानक सरसराहट की आवाज सुनाई देने लगी ... और मैं एक झटके में उठ बैठा ।
एक छोटा सा जुगनू के आकार का बिंदु कमरे में घूम रहा था और जटाशंकर के शरीर के पास आने की कोशिश कर रहा था ...
जब भी वह उसके बिस्तर के पास आता तो किसी अदृश्य दीवार से टकराकर वापस हो जाता । गुस्से से उसकी सनसनाहट बढ़ जाती थी ...

उसे देखते ही मैं समझ गया कि यह अवश्य जटाशंकर के लिए चलाया गया बाण है !
जो उसे नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर रहा है ।
लेकिन....
रक्षा चक्र में आबद्ध होने की वजह से उसके पास तक नहीं पहुंच पा रहा है ।
रक्षा चक्र भी एक प्रकार की शक्ति से बनाया हुआ बंधन होता है ...
उसकी भी एक सीमा होती है...
किसी भी शक्ति से टकराने पर रक्षा चक्र की शक्ति भी धीरे-धीरे क्षीण होती जाती है ।
वह बाण यही प्रयास कर रहा था कि जैसे ही रक्षा चक्र की शक्ति क्षीण हो !
वह अंदर प्रवेश करके जटाशंकर पर आक्रमण कर दे !!
इस प्रकार का कोई भी आक्रमण जटाशंकर के लिए प्राण घातक हो सकता था !!!

मैंने महाकाली रक्षा मंत्र का उच्चारण करते हुए फिर से कामिया सिंदूर उनको समर्पित कर दिया । इससे रक्षा चक्र की शक्ति पुनः तीव्र हो गई वह अग्निबाण

भी लगभग दस पंद्रह बार टकराने के बाद क्षीण होकर विलुप्त हो गया ।
उसके गायब होते ही मैंने थोड़ी सी राहत की सांस ली ।
इस घटना ने मेरी आंखों की नींद उड़ा दी !
मैं पूरी तरह से तैयार होकर रक्षा की मुद्रा में आ गया ।
मुझे समझ में आ गया कि अभी किसी भी प्रकार की गफलत में रहना खतरनाक हो सकता है । सामने वाला पक्ष भी शक्तिशाली और तंत्र विद्या में निपुण है ।
जिस प्रकार का प्रयोग उसने किया था वह वास्तव में शक्तिशाली प्रयोग था ।
महाकाली रक्षा चक्र का प्रयोग करने के बाद आमतौर पर एक या दो बार टकराने से ही इस प्रकार के प्रयोग शांत हो जाते हैं ! लेकिन वह करीब करीब 15 से 20 बार टकराने के बाद शांत हुआ था ।
जो उसके शक्तिशाली होने का प्रमाण था ।

जटाशंकर को फिर से हिचकियां आने लगी ।
उसी प्रकार की जोरदार पूरे बिस्तर को हिला देने वाली हिचकियां !
देखने वाले के दिल को दहला देने वाली हिचकियां !!

उसकी हिचकियां की आवाज सुनकर नर्स भी दौड़ती हुई आई ।
लेकिन उसके हाथ में भी कुछ नहीं था...
उसने पास आकर चेक किया और मेरी तरफ से निराशा भरी नजरों से देखा और कहा - चिंता मत करो थोड़ी देर में ठीक हो जाएगा !
ज्यादा देर चलेगा तो बताना, डॉक्टर को बुलाएंगे ।

मैं समझ गया कि इसकी देखभाल बहुत दिनों से करते-करते इनको भी यह बात समझ में आ गई थी कि इसे इस प्रकार के दौरे बीच में पडते रहते हैं जिसका कोई इलाज नहीं है।

मैंने भी सहमति में सिर हिलाया और उसके जाने के बाद जटाशंकर के पावों की तरफ बैठ गया और छिन्नमस्ता मंत्र का जाप करना प्रारंभ कर दिया ।
लगभग दस पंद्रह मिनट मैंने जाप किया होगा ।
जटाशंकर की हिचकियां धीरे-धीरे कम होती हुई शांत हो गई और वह फिर से सामान्य दिखने लगा । अभी भी उसे होश नहीं आया था ।

उसके शांत होते ही मैं वापस अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गया ...

किसी अपने को इस प्रकार अस्पताल में विवश अवस्था में पड़े देखना ... बेहद दुखद होता है !

मैं भी जटाशंकर के साथ बीते हुए अपने अतीत के क्षणों को याद कर रहा था और सोच रहा था कि इतना हंसमुख और जिंदादिल इंसान आज किस प्रकार से विवश और बदहाल स्थिति में पड़ा हुआ है । समय बहुत बलवान होता है ! उसके सामने किसी की नहीं चलती ।

अच्छा खासा हृष्ट पुश्ट जवान !

करोड़ों की संपत्ति का इकलौता मालिक !!

बिस्तर पर निस्सहाय अवस्था में पडा हुआ था ।

वह भी उसी अस्पताल में जिसका एक ट्रस्टी वह स्वयं भी था !

यानी उस अस्पताल का एक मालिक !

इतनी सारी सुविधाओं के होते हुए भी कोई उसके लिए कुछ भी नहीं कर पा रहा था।

जो दृश्य मुझे साधना के दौरान दिखाई दिया था ! ठीक उसी प्रकार जमुना अपने दो साथियों के साथ जंगल में एक पेड़ के इर्द-गिर्द बने हुए घेरे में मंत्र जाप करते हुए प्रयोगों को अंजाम दे रही थी ।

आज उसके साथ उसकी बेटी वृंदा भी थी । जब जमुना के प्रयोग से जटाशंकर अस्पताल में भर्ती हुआ तो वृंदा को तंत्र की शक्ति का आभास हुआ ...
उसने अपनी मां से सीखने की इच्छा प्रकट की !

इस प्रकार की विधियां माताए अपनी बेटियों को सिखाती है या अपनी बहुओं को सिखाती है ।
इसमें कुछ गोपनीय और विचित्र प्रक्रियाओं का पालन करना पड़ता है !
जो इस प्रकार के करीबी संबंधियों के बीच आसानी से संभव होता है .....

जो भी हो...
इस क्रिया में वृंदा भी शामिल थी ।

चौथी महिला !

जो बकरा लेकर खड़ी थी !

वह वृंदा थी ।

उसे डर भी लग रहा था !

विद्या सीखने और अपने मनोवांछित कार्य के हो जाने का लालच कम आकर्षक नहीं था...

वह इस प्रकार की शक्तियों को हासिल करने के लिए लालायित भी थी ।

जमुना तथा उसकी दोनों सहयोगियों नीला और सुखबती ने मंत्र जाप प्रारंभ कर दिया था ।

सुखबती ने अपने सामने रखे हुए काले मुर्गे को काटकर उसकी बलि सामने रखे हुए नरमुंड पर प्रदान की ...

तभी उसमें से एक अग्नि पुंज निकलकर.....

जटाशंकर की ओर बढ़ा ....

जिसका विवरण मैंने पहले दिया था ...

जैसे ही अस्पताल में वह अग्निबाण शिथिल हो कर गिरा ....

सुखबती को इसका आभास हो गया । इस प्रकार के प्रयोग में प्रयोग करने वाले साधक की प्राणशक्ति भी सम्मिलित रहती है । इसलिए उसे अपने प्रयोग के असफल होने का आभास हो जाता है और असफल प्रयोग स्वयं तांत्रिक को भी कमजोरी का एहसास करा देते हैं ।
संभवत जमुना को इस प्रकार की अपेक्षा रही होगी तभी उसने अपने साथ सहयोगियों को भी इस कार्य के लिए तैयार करके रखा हुआ था ।

इसके बाद नीला ने अपना मंत्र जाप पूर्ण किया और अपने सामने रखे हुए मुंड के ऊपर उसी प्रकार से मुर्गे की बलि प्रदान की ....

पुनः एक अग्नि पुंज अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आगे की ओर बढ़ा !
इधर मैं भी तैयार बैठा हुआ था ...

वह अग्निबाण सनसनाता हुआ खिड़की पर नजर आया ! खिड़की के कांच को तोड़ता हुआ कमरे के अंदर प्रवेश कर गया !

और !

तभी ....

मैंने कृत्या मंत्र का उच्चारण करते हुए, उस को लक्ष्य करके अपनी हथेली पर रखे हुए कामिया सिंदूर को उसकी ओर उड़ा दिया ...

जैसे ही वह सिंदूर उससे टकराया .....

एक जोरदार आवाज हुई ....

ऐसा लगा जैसे कोई बेहद जोर से दर्द के मारे कराहा हो .....

वह आवाज किसी औरत की दर्द भरी आवाज थी ।

जितनी तेजी से वह आया था.....

उस से दुगनी तेजी से वापस लौट गया ...

जंगल में पहुंच कर वह सीधा नीला के सामने रखते हुए नरमुंड से टकराया ...

बड़े जोर से फटाक की आवाज आई और उस मुंड के टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गए .....

वहां लगभग 2 फीट गहरा गड्ढा हो गया ।

ऐसा लग रहा था जैसे किसी बड़े हथौड़े से वहां प्रहार कर दिया गया हो ...

उस पुंज के टकराते ही नीला भी जमीन पर लुढ़क गयी .....
जमीन पर गिरते ही बार छटपटाने लगी....
ऐसा लग रहा था....
जैसे किसी मछली को पानी से निकालकर सूखी तपती जमीन पर फेंक दिया गया हो ....
उसकी नाक से खून बहने लगा ।
थोड़ी देर में उसके मुंह से भी खून की धार निकलने लगी .....

उसकी हालत देखकर सुखबती भयभीत हो गई और जमुना को भी थोड़ी सी घबराहट होने लगी ।

किसी को मारने पीटने या नुकसान पहुंचाने वाला आदमी तभी तक बहादुर रहता है .....
जब तक उसे विश्वास हो कि ....
पीड़ित उसे वापस नहीं मारेगा ।

अगर उसे पता हो कि जिसे मारने की वह कोशिश कर रहा है .....
वह उसके प्राण ले सकता है ....
तो.....
वह भूल कर भी उसकी तरफ कोई गलत प्रयास नहीं करेगा ।

अपनी जान सबको प्यारी होती है !

यह बात हर क्षेत्र में लागू है ...
इसलिए तंत्र क्षेत्र में भी लागू है ...

दो-दो प्रयोगों की असफलता ने जमुना के अंदर भी भय पैदा कर दिया था चोट खाए हुए दोनों सहयोगी अपनी जान की खैर मना रहे थे ...

महाविद्याओं की साधना करने से सबसे बड़ा लाभ यह है कि, सामने वाला तांत्रिक आपकी शक्तियों को भाँप नहीं पाता है !

खासतौर से नकारात्मक शक्तियों की आराधना करने वाले तांत्रिक इसे समझ नहीं पाते हैं ...

यही गलतफहमी !
उन्हें आखिर में ले डूबती है.....

इधर वृंदा को जमुना ने दूसरी तरफ देख कर बैठने के लिए कहा हुआ था ।

नीला की कराह और चीख सुनकर वह भी अपने आप को पीछे मुड़कर देखने से नहीं रोक पाई और उसके नाक मुंह से बहते हुए खून को देखकर उसकी हालत भी पतली होने लगी....
जमुना ने उसे ज़ोर की डांट लगाई और वापस दूसरी तरफ देख कर बैठने के लिए कहा ।

वृंदा घबराकर अपना मुंह दूसरी तरफ करके बैठ गई ....
उस के पास जो काला बकरा बंधा हुआ था ....
वह भी घबराकर अपनी जगह पर उछल कूद मचाने लगा और उसके बाद ज़ोर ज़ोर से मिमियाने और अजीब तरह की आवाज निकालने लगा !
ऐसा प्रतीत हो रहा था जो सुबह अपने गले में बंधी हुई रस्सी को तोड़ कर वहां से किसी प्रकार भाग निकलना चाह रहा हो ....

उसकी घबराहट और अजीब अजीब सी आवाज निकालने की वजह से वहां का वातावरण और ज्यादा डरावना हो गया.....

अब तक जमुना की आंखें गुस्से से लाल हो चुकी थी ....

ऐसा लग रहा था ....

जैसे उसकी आंखों की जगह में ...

दो लाल-लाल अंगारे हो !

जमुना ने बकरे को गुस्से से देखकर कुछ इशारा किया और ऐसा लगा जैसे बकरे ने किसी भयानक जानवर को देख लिया हो और वह डरकर पालतू बिल्ली की तरह बैठ गया ।

यह देखकर वृंदा को थोड़ा सा साहस भी आया और अपनी मां की शक्तियों पर विश्वास भी हुआ !

लेकिन अंदर ही अंदर उसे जोरों से डर लग रहा था ।

अपनी दो सहेलियों के द्वारा किए गए प्रयोगों को विफल होता देखकर जमुना भी थोड़ा सा विचलित

अवश्य हुई । लेकिन.... वह पुरानी खिलाड़ी थी । उसे अपनी क्षमता पर पूरा विश्वास था ।

अबकी बार उसने मंत्रों का जाप किया और मुर्गे को काट कर उस मुंड पर समर्पित किया ...
एक पैशाचिक शक्ति प्रकट हुई और उसने उस मुर्गे को ग्रहण कर लिया ...
यह पोषण था ...
उसका पति ....
जो अब उसका गुलाम था !

जिसे उसने स्वयं मृत्यु के हवाले करके उसकी आत्मा को अपना गुलाम बना कर रखा हुआ था ।
पिछले कई दिनों से वह उसे बलि प्रदान कर करके तथा विभिन्न यत्नों के द्वारा शक्तिशाली बनाने का प्रयास कर रही थी ...
और....
उसमें सफल भी रही ।

पोषण पहले की तरह शक्तिशाली हो चुका था और अगले हमले के लिए तैयार था .....

उसने मुर्गे को झिंझोड़ कर उदरस्थ किया .....
और अपनी भूखी निगाहों से काले बकरे की ओर देखा !

जमुना ने कहा - काम होने के बाद वह तेरा है । नाकाम होकर मत लौटना .....

यह सुनते ही पोषण का प्रेत और ज्यादा उत्साहित होकर तेजी से अपने लक्ष्य अर्थात जटाशंकर की ओर बढ़ गया ।

मेरे पास रुद्राक्ष की एक माला थी !
जो मैंने विशेष रुप से जटाशंकर के लिए छिन्नमस्ता के मंत्रों से सिद्ध करके रखी थी !
उस माला को मैंने जटाशंकर को पहना दिया !

शिव पुराण मे जो प्रसंग है उसके अनुसार :-

भगवान शिव पार्वती जी से कहते हैं – हे महेश्वरी ! हे शिवे ! मैं तुम्हारे प्रेमवश भक्तों के हित की कामना से रुद्राक्ष की महिमा का वर्णन करता हूँ ।

पूर्वकाल की बात है, मैं मन को संयम में रखकर हजारों दिव्य वर्षों तक घोर तपस्या में लगा रहा । एक दिन सहसा मेरा मन क्षुब्ध हो उठा ...
उस समय मैंने अपने दोनों नेत्र खोले ।
नेत्र खोलते ही मेरे नेत्रपुटों से कुछ आंसुओं की बूँदें गिरी । आँसू की उन बूंदों से वहां रुद्राक्ष नामक वृक्ष पैदा हो गया ।

सार यह है कि ---
रुद्राक्ष को भगवान शिव के नेत्रों से उत्पन्न माना जाता है !
रुद्र = शिव और अक्ष = नेत्र

रुद्राक्ष भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है !
उस से बनी हुई माला को सर्व कार्य सिद्धि में प्रयोग किया जा सकता है ... अर्थात किसी भी प्रकार की साधना में आप रुद्राक्ष की माला का प्रयोग कर सकते हैं ....

यह तो उसका एक पक्ष है .....
इसका दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष भी है ...

जिसके बारे में लोगों को कम जानकारी है ।

रुद्राक्ष के मनको में किसी भी प्रकार के तांत्रिक प्रयोग को समाप्त करने की शक्ति भी होती है ।

शिवपुराण मे भगवान शिव रुद्राक्ष की महिमा मे आगे कहते हैं कि - रुद्राक्ष की माला धारण करने वाले पुरुष को देखकर भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी तथा जो अन्य द्रोह्कारी राक्षस आदि हैं, वे सब-के-सब दूर भाग जाते हैं । जो कृत्रिम अभिचार (अर्थात तांत्रिक प्रयोग या किसी प्रकार का टोना टोटका या ऊपरी बाधा या किया कराया) आदि होते हैं, वे सब रुद्राक्षधारी को देखकर भयभीत होकर दूर भाग जाते हैं ।
हे पार्वती ! रुद्राक्ष-मालाधारी पुरुष को देखकर मैं शिव, भगवान विष्णु, देवी दुर्गा, गणेश, सूर्य तथा अन्य देवता भी प्रसन्न हो जाते हैं ।

कुल मिलाकर आप यह मानकर चलें कि रुद्राक्ष में अदभुत अध्यात्मिक शक्ति विद्यमान होती है ।

अगर आप मंत्र जाप करते हैं और रुद्राक्ष या रुद्राक्ष की माला धारण करते हैं तो आपका रुद्राक्ष या रुद्राक्ष की माला धीरे-धीरे शक्तिशाली होती जाती है ।
वह आपको किसी भी प्रकार के प्रयोग से सुरक्षा प्रदान करती है ।

कई बार तो ऐसा भी होता है कि यदि बहुत गंभीर किस्म का तांत्रिक प्रयोग हो तो इस प्रकार के रुद्राक्ष अपने आप टूट भी जाते हैं लेकिन धारण करने वाले की रक्षा कर देते हैं ....

यह जरूरी नहीं है कि इसके लिए आप बहुत महंगे रुद्राक्ष खरीदें ... या एक मुखी रुद्राक्ष खरीदें ...
बाजार मे आसानी से उपलब्ध 5 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से भी इस प्रकार की सुरक्षा बराबर प्राप्त होती है ।

आप किसी ज्योतिर्लिंग या सिद्ध शिवलिंग पर स्पर्श कराने के बाद इस प्रकार का रुद्राक्ष या रुद्राक्ष की माला धारण करते हैं तो उसका प्रभाव 100 गुना बढ़ जाता है .....

इस प्रकार के शिवलिंग से स्पर्श कराने का अवसर ना मिले तो आप उसे पारद शिवलिंग या नर्मदेश्वर शिवलिंग से स्पर्श कराकर भी पहन सकते हैं ...

यह भी ना मिले तो आप किसी भी ऐसे शिव मंदिर में जहां निरंतर पूजन होता रहता हो.....
या जहां पर मेला लगता हो.....
ऐसे शिव मंदिर के शिवलिंग में स्पर्श कराकर आप पहन सकते हैं ...
यदि यह भी संभव नहीं हो तो आप अपने सामने उस रुद्राक्ष को या रुद्राक्ष की माला को रखकर 108 बार "ॐ नमः शिवाय" मंत्र का जाप करके पहन सकते हैं ।
कुल मिलाकर सार यह है कि रुद्राक्ष धारण करने से किसी भी प्रकार के गलत सलत प्रयोगों से आपकी सुरक्षा होती रहती है ।
इसका प्रभाव तब और बढ़ जाता है जब आप उसे पहनकर या सामने रखकर मंत्र जाप भी करते हैं ....

रुद्राक्ष की महिमा के विषय में मुझे गुरुदेव ने विस्तार से बताया था .....
उनके पास एक माला थी ।

जिसमें एक से लेकर इक्कीस मुखी तक रुद्राक्ष गूँथे हुए थे । इस प्रकार की माला को इंद्राक्षी माला कहा जाता है ....

जिस व्यक्ति के पास यह माला होती है वह इंद्र के समान यशस्वी होता है ....

सभी शक्तियां उसके अनुकूल होकर चलती है ...

पूरे विश्व में बहुत कम लोगों के पास इस प्रकार की माला होती है ।

गुरुदेव रुद्राक्ष के बहुत बड़े जानकार थे । वर्तमान में मध्य प्रदेश के भोपाल स्थित साधना सिद्धि विज्ञान पत्रिका के संस्थापक गुरुदेव स्वामी सुदर्शन नाथ जी रुद्राक्ष के दुर्लभ रहस्य को जानने वाले विद्वान है ।

मुझे गुरु कृपा से इस रहस्य की जानकारी थी । इस जानकारी का सदुपयोग करते हुए मैंने मंत्र जाप के दौरान एक रुद्राक्ष की माला भगवती के चरणों में रख दी थी और वही माला मैंने जटाशंकर को पहना दी थी ....

अब जटाशंकर के गले में रुद्राक्ष की माला पड़ी हुई थी ....

जैसे ही पोषण का प्रेत अस्पताल के करीब आया !

कमरे का वातावरण अचानक भारी होने लगा !!

ऐसा लगने लगा वातावरण में हवा की कमी हो गई हो !!

सांस लेने में दिक्कत होने लगी !!!

अस्पताल के उस कमरे में प्रवेश करते ही पोषण का प्रेत तेजी से जटाशंकर की तरफ लपका ....

लेकिन....

रक्षा चक्र और उसके गले में पड़ी हुई रुद्राक्ष की माला की वजह से उस तक पहुंच नहीं पाया ।

मैं इस बार किसी प्रकार का रिस्क नहीं लेना चाहता था ....

इसलिए मैंने डोम बाबा से प्रेत को पकड़ने की विधि भी पूछ रखी थी !

इस बार पोषण को मैं जाने नहीं देना चाहता था । जैसे ही वह कमरे के अंदर आया ....

मैंने सुरक्षा मंत्रों से उस कमरे को चारों तरफ से बांध दिया ....

सुरक्षा मंत्रों से बने हुए घेरे को आप कुछ कुछ वैसा ही मान लीजिए जैसा फिल्मों में कीमती हीरों की सुरक्षा के लिए लेजर आदि के द्वारा इंतजाम किए जाते हैं । यदि

कोई चोर उससे टकरा जाए तो वह निश्चित मृत्यु को प्राप्त हो जाता है ।
ठीक वैसे ही मंत्रों के द्वारा बने हुए सुरक्षा चक्र से अगर कोई शक्ति टकरा जाए तो उसको चोट पहुंचती है और उसकी समाप्ति की संभावनाएं भी बढ़ जाती है ।

पोषण अपनी पूरी ताकत लगा कर जटाशंकर तक पहुंचने की कोशिश कर रहा था ...
जिसमें वह अंततः कामयाब भी हो गया !
लेकिन ....
तब तक उसकी शक्ति बहुत कम हो चुकी थी.....
यह मेरे लिए एक शुभ संकेत था ...
जितना शक्तिशाली प्रेत होता है उसे नियंत्रित करना उतना ही कठिन होता है । सुरक्षा घेरे से टकरा टकरा कर पोषण का प्रेत अपनी शक्ति का बहुत बड़ा अंश हो चुका था । इसलिए जैसे ही वह उसके पास पहुंचा मैंने उसे मंत्रों से बांध दिया ।
अब वह विवश हो चुका था ।

पहले से जेब में रखे हुए डब्बे को मैंने बाहर निकाला और मंत्रों से बंधे हुए पोषण को उस डब्बे में डालकर बंद कर दिया ।

अब जमुना का सेनापति मेरी कैद में था ....
यू समझिए कि जमुना का जो सबसे बड़ा हथियार था वह अब मेरे कब्जे था .....
उसे मैंने सुरक्षित करके अपने पास रख लिया था ।

प्रेत को नियंत्रित करना बहुत कठिन प्रक्रिया होती है .....
इसमें अगर थोड़ी भी चूक हो जाए तो प्रेत का आक्रमण सहन करना पड़ता है .....

जिसमें कभी-कभी तांत्रिक को गंभीर चोट लग सकती है और कभी कभी उसके शरीर का कोई अंग काम करना बंद कर देता है .....

यहाँ तक कि तांत्रिक का मानसिक संतुलन बिगड़ने से लेकर मौत तक का खतरा रहता है .....
यह सब तामझाम होते-होते रात के 11:30 बज चुके थे ।

जमुना को पोषण के कैद हो जाने का पता चल चुका था ।

यह उसके लिए एक बहुत बड़ी चोट थी ...

क्योंकि पोषण उसका ब्रह्मास्त्र था ।

उसने उसे ताकतवर बना कर रखा हुआ था ... वह उसका लगभग हर काम वह आसानी से सिद्ध कर देता था ।

अपने सेनापति का इस प्रकार से कैद हो जाना उसके लिए एक बहुत बड़ा झटका था.....

शायद उसने मुझे आंकने में भूल कर दी थी ।

यह बात उसे काफी देर से समझ में आई थी ....

जो भी हो....

वह उस रास्ते पर आगे बढ़ चुकी थी....

जहां से वापस आना संभव नहीं था .....

सुखबती डर के मारे कांप रही थी और नीला की हालत नाक से बहते हुए खून के कारण बेहद खराब हो चुकी थी ।

जमुना के लिए अब यह करो या मरो वाली स्थिति हो चुकी थी !

वह इतनी आसानी से हार मानने वाली नहीं थी ।

उसने वृंदा और सुखबती को नीला को वापस ले जाने के लिए भेज दिया...

वह अपने अंतिम प्रहार के लिए तैयार हो गई !

हर तांत्रिक यह सोचता है कि वह दुनिया में सबसे शक्तिशाली है....

लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं होता ....
सेर को सवा सेर कहीं ना कहीं मिल ही जाता है ।
इसलिए इस प्रकार का अहंकार किसी को भी नहीं करना चाहिए ।

दिक्कत यह होती है कि जब शक्तियां पास में आती है तो मानव अपने आप को इतना ताकतवर समझ लेता है कि उसका अहंकार अपने सामने हर किसी को तुच्छ समझने लगता है ....

यह सोच कई बार विनाश का कारण बनती है ।
जमुना के साथ भी यही हो रहा था ।
जमुना ने अनेक लोगों के ऊपर मारण और अन्य नुकसान पहुंचाने वाले प्रयोग किए थे और उनमें से अधिकांश प्रयोग में वह सफल भी रही थी ।
जिसकी वजह से उसे ऐसा लगने लगा था कि उसकी टक्कर का कोई तांत्रिक इस दुनिया में है ही नहीं .....

वह जिसे चाहे खत्म कर सकती है....

जिसे चाहे नुकसान पहुंचा सकती है ।

भगवती महामाया किसी को भी इस प्रकार का शक्तियों का नग्न तांडव करने की अनुमति नहीं देती है.....

हर चीज की एक सीमा होती है !

जहां सीमा का उल्लंघन होता है तो कोई ना कोई अंकुश लगाने के लिए महामाया के द्वारा निमित्त बनकर प्रस्तुत हो ही जाता है .....
संभवत: जमुना के लिए मैं महामाया का वह तुच्छ निमित्त था ।

तीनों लोगों को घर भेज देने के बाद जमुना अपने अंतिम प्रहार के लिए तैयार हो गई ।

बेहरा का वह पेड़ उसके देवता का निवास था । जहां उसने उसे सिद्ध करके प्रसन्न करके रखा हुआ था । कभी भी उसे अपने देवता के सामने गुहार लगाने की जरूरत नहीं पड़ी थी क्योंकि उसके प्रयोग इतने प्रबल हुआ करते थे कि उसका काम हो जाता था।

यह पहली बार हो रहा था जब उसे अपनी कमजोरी का एहसास हो रहा था । उसने अंतिम प्रयास के रूप में अपने देवता को प्रसन्न करने का मन बनाया ।

अर्ध रात्रि का समय करीब आता जा रहा था जोकि देवता के प्रकट होने का सबसे श्रेष्ठ समय था ।
उसने आह्वान के लिए मंत्र का उच्चारण करना प्रारंभ कर दिया.....
मंत्रों के उच्चारण के साथ-साथ उस सुनसान जंगल की नीरवता बढ़ती चली गई !
रात होने के बावजूद आसपास के पेड़ों से पक्षी उड़ कर जाने लगे !!

चमगादडों के झुंड उस पेड़ के चारों तरफ चक्कर लगाने लगे ....

छोटे-छोटे उल्लू न जाने कहां से आकर इस घेरे के चारों तरफ बैठ गए ।

जंगल का वातावरण ऐसे ही भयानक होता है !

जंगल में जिस प्रकार की बैठक वहां सजी हुई थी अगर कोई सामान्य व्यक्ति देख ले तो न जाने उसकी क्या हालत हो ....

उस भयानक जंगल में !

जमुना !

एक अकेली महिला !

पूरी क्षमता के साथ बैठी हुई थी ।

वह भी अपने आप में एक अद्भुत बात थी ।

अपने तीन तीन प्रयोगों के असफल हो जाने के बाद !

अपने सबसे सक्षम पिशाच के कैद हो जाने के बाद भी !

संघर्ष के लिए तैयार रहने का उसका जज्बा यह बता रहा था कि वह कितनी आत्मविश्वास से लबरेज महिला थी ।

ऐसे ही लोग वास्तव में तंत्र विद्या को आगे ले जाते हैं ।

चाहे वह सकारात्मक तंत्र हो या नकारात्मक ! क्योंकि दोनों में ही प्रबल इच्छा शक्ति और प्रचंड आत्मविश्वास दोनों होना चाहिए ।

जंगल का वातावरण धीरे-धीरे भारी होता जा रहा था ! कुछ कुछ वैसा ही !
जैसा श्मशान में पहुंचने पर प्रतीत होता है ! वातावरण में शव के जलने जैसी गंध आने लगी !

वैसे ही गंध जैसे मांस और बालों के जलने की वजह से शमशान के वातावरण में बिखरी रहती है !

जमुना ने बकरे को अपने पास रख लिया था...

वह उस प्रयोग को करना चाहती थी ...

जो कभी असफल नहीं होता .... क्योंकि उसके पीछे उसके देवता की शक्तियां काम करती हैं ।
उसी शक्ति को जागृत करने के लिए वह प्रयासरत थी ....
उसका मंत्र जाप जारी था ...

वह वृक्ष अचानक थरथराने लगा ।
बिजली कड़कने लगी !

तेज हवाएं चलने लगी !

पेड़ की डालियां इतनी तेजी से हिल रही थी कि जैसे अभी टूट कर नीचे ही गिर जाएगी !

जो लंबे लंबे वृक्ष थे , वह तिनकों की तरह इधर-उधर झूम रहे थे !

इतने भयानक वातावरण के बीच में बैठकर जमुना मंत्र जाप कर रही थी ....

तभी ...

उस पेड़ के अंदर से देवता का बिंब प्रकट हुआ और भयंकर अट्टहास करने लगा ...

उसे सुनते ही जमुना ने अपनी आंखें खोली !

विशेष विधि से उनको प्रणाम किया और काले बकरे को उनको समर्पित कर दिया ।

वह बकरा हवा में उठा और उसका सिर धड़ से अलग हो गया ।

धड़ से अलग हुआ वह सिर उस विशालकाय देवता के मुंह में चला गया और अगले कौर में उसने बकरे का सामने का पैर और उससे जुड़ा हुआ हिस्सा उदरस्थ कर लिया ...

तीसरे कौर तक लगभग तीन चौथाई बकरा अंदर जा चुका था ।

तभी ....

बचा हुआ टुकड़ा उछलकर घेरे के बाहर जा गिरा ।

बाहर बैठे हुए सारे उल्लू और चमगादड़ भयानक आवाज निकालते हुए उस पर टूट पड़े !

थोड़ी देर में वहां पर उस बकरे का नामोनिशान तक गायब हो चुका था .....

देवता प्रसन्न हो चुका था !

जमुना ने अपने पास रखी हुई दारू की बोतल भी प्रस्तुत की और अपनी मनोकामना व्यक्त की .....

प्रसन्न हुआ देवता जमुना के सामने रखी खोपड़ी के अंदर प्रवेश कर गया .....

जमुना ने पुनः मंत्रों का उच्चारण किया और जटाशंकर के नाम से उस मारण पात्र को रवाना कर दिया .....

वह छोटा नरमुंड हवा में उठा और तेजी से अस्पताल की ओर बढ़ चला ।

मैं भी पूरी तरह से तैयार था !

मैंने गुरुदेव का ध्यान किया ।
उनको मानसिक रूप से पंचोपचार पूजन समर्पित किया ।
तदुपरांत छिन्नमस्ता देवी के उस विश्वरूप का ध्यान किया, जिसका मैंने उनके शक्तिपीठ मे दर्शन किया था ।
उन्हें भी उसी प्रकार से मानसिक रूप से पंचोपचार पूजन प्रस्तुत किया ....

मानस पटल पर उनका दिव्य बिम्ब स्मित हास्य के साथ प्रकट हुआ । उनके मुखमंडल पर जो मुस्कान बिखरी

थी वह इस बात का संकेत थी कि उन्होंने मेरे पूजन को स्वीकार किया था ....

वह मंद स्मित मेरे लिए यह बताने के लिए पर्याप्त था कि उन का वरद हस्त मेरे सिर पर है !

जिसके सिर पर भगवती महामाया का वरद हस्त हो तो उसे किसी से डरने की जरूरत नहीं है ।

मैंने छिन्नमस्ता के कवच का पाठ करते हुए जटाशंकर के पूरे शरीर को पैर से लेकर सिर तक स्पर्श कर लिया ....

कवच भी एक प्रकार का लंबा मंत्र होता है जिसके द्वारा शरीर के अलग-अलग अंगों में देवी या देवता के स्वरूप को रक्षा करने के लिए आह्वान कर स्थापित किया जाता है । देवी छिन्नमस्ता के इसी प्रकार के मंत्रों का प्रयोग करके जटाशंकर के शरीर को सुरक्षित किया ।

उसके बाद हनुमान जी जिस मुद्रा में बैठते हैं उसी वीर मुद्रा में जमीन पर बैठ गया और भगवती का मंत्र प्रारंभ कर दिया ।

तभी !

छन्न !
की आवाज के साथ खिड़की का कांच टूटा और वह नरमुंड कमरे के अंदर प्रवेश कर गया।
नरमुंड के अंदर स्थापित देवता अपनी पूरी प्रचंडता के साथ जटाशंकर की ओर बढ़ा .....

जटाशंकर तक पहुंचने से पहले ही भगवती छिन्नमस्ता कवच से बना हुआ रक्षा चक्र उसके सामने आ चुका था ।

यह स्थिति उसके लिए भी बहुत ज्यादा परेशानी पैदा करने वाली थी ! क्योंकि सृष्टि की संचालनी शक्ति को महामाया कहा गया है और उनके 10 स्वरूपों को महाविद्या कहा गया है ।
इन्हीं में से सबसे उग्र महाविद्याओं में से एक है भगवती छिन्नमस्ता !
उनके सामने छोटे-मोटे देवताओं की कोई बिसात ही नहीं थी।

जैसे ही वह नरमुंड उस सुरक्षा चक्र से टकराया , एक भयानक विस्फोट जैसी आवाज हुई , खिड़की के पर्दे में आग लग गई और वह खोपड़ी एक तरफ जा गिरी ..... जमुना का देवता झुलसी हुई अवस्था में नीचे की तरफ जा गिरा तभी मैंने एक सूक्ष्म नीले रंग की किरण को शून्य से प्रकट होते हुए देखा !

जो उस देवता के ऊपर जाकर गिरी और एक भयंकर आवाज के साथ वह भस्म हो गया ! देवी छिन्नमस्ता के शक्ति चक्र ने उस देवता को भस्म कर दिया था ।

आग लगने के साथ ही फायर अलार्म बजने लगा । उसकी आवाज को सुनकर नर्स और डॉक्टर दौड़ते हुए अंदर आए । उनके साथ में सिक्योरिटी के लोग भी थे । जैसे ही उन्होंने कमरे में लगी हुई आग को देखा आनन-फानन में जटाशंकर को स्ट्रेचर में डाल कर बाहर निकाला गया ।

उसे दूसरे वार्ड में शिफ्ट किया गया, तब तक उसका कमरा आधे से ज्यादा जल चुका था । वहां रखे हुए सारे उपकरणों में आग लग चुकी थी । यहां तक कि उसके अगल बगल वाले कमरों में भी आग लगी हुई थी । फायर ब्रिगेड को बुलाया गया और लगभग आधे

घंटे की मेहनत के बाद वे लोग आग बुझाने में कामयाब रहे .....

आग कैसे लगी ?
क्यों लगी ?
यह मेरे और जमुना के सिवा किसी को भी नहीं पता था ।
उसका सत्य मैं किसी को बता भी नहीं सकता था ।
इसलिए वह आग भी अन्य रहस्यमय आगजनी की घटनाओं की तरह ही शॉर्ट सर्किट से लगी हुई आग की श्रेणी में शामिल मान ली गई ।
किसी के जान माल का नुकसान नहीं हुआ था ,
इसलिए सब धीरे-धीरे शांत हो गया ।

जैसे ही देवता भस्म हुआ !
जंगल में बहरा के पेड़ में आग लग गई !
उसे देखकर जमुना को समझ में आ गया कि बहुत बड़ा संकट आने वाला है ।
वह अपना सामान समेटकर तेजी से घर की ओर रवाना हो गई ।

देवता के निकल जाने के बाद वह नरमुंड जमीन पर गिर गया था । उसे मैंने अपने थैले में डाल दिया था । उसे लेकर अस्पताल के पीछे के सुनसान मैदान की ओर निकल गया सारे लोग आग बुझाने में लगे हुए थे ....

वापस घर जाने का समय नहीं था और इतने समय में जमुना दुबारा कोई प्रयोग करके जटाशंकर के लिए दिक्कत पैदा कर सकती थी ! जिसका अवसर मैं उसे नहीं देना चाहता था ...

उस शैतानी नरमुंड को अपने पास रखना उचित नहीं था और उसे वापस भेज देना ही सर्वश्रेष्ठ था । श्मशान में से कभी भी कोई वस्तु अपने घर पर नहीं लानी चाहिए ! चाहे वह कितनी भी आकर्षक क्यों ना दिख रही हो ! इससे आप दिक्कत में पड़ सकते हैं ।

यह तो साक्षात शैतानी नरमुंड था !
उसे अपने पास रखना खतरे से खाली नहीं था ।

तंत्र प्रयोगों में दो प्रकार से शांति की जा सकती है । एक प्रकार की शांति में तंत्र प्रयोग शांत हो जाता है

लेकिन जिसने इस प्रकार का तंत्र प्रयोग किया है उसका अहित नहीं होता ....

दूसरा प्रकार का तंत्र शांति प्रयोग वह होता है जिसमें नकारात्मक तंत्र को वापस लौटा दिया जाता है । इससे उसकी प्रहारक क्षमता बढ़ जाती है और जिसने प्रयोग किया हो, उसके लिए गंभीर परेशानी पैदा हो जाती है ! जमुना के द्वारा किए गए कृत्य उसे माफ करने के दायरे से बाहर निकाल चुके थे .....

महिला होने के नाते उसे क्षमा कर देने का मतलब किसी और निर्दोष को प्रताड़ित करने का अवसर प्रदान करना होता.....

ऐसी स्थिति में कठोर होना पड़ता है । मैंने भी अपने मन को कठोर किया और उस नरमुंड को वापस भेजने के लिए तैयार हो गया ....

अपने पास रखे हुए कामिया सिंदूर को मैंने अपनी हथेली पर रखा और उसे छिन्नमस्ता मंत्रों से अभिमंत्रित करके खोपड़ी के ऊपर छिड़क दिया ।

जैसे ही मैंने उसे खोपड़ी के ऊपर छिडका ...

खोपड़ी से बच्चे के चीखने की आवाज आई और वह खोपड़ी सनसनाती हुई ऊपर चली गई ।

जमुना समझ चुकी थी कि उसका प्रयोग विफल हो चुका है और यह खतरे की बात है ....
जंगल में रहना ज्यादा खतरनाक हो सकता था इसलिए जमुना तेजी से अपने घर की ओर लौट रही थी.....
लेकिन जंगल पार करने से पहले ही वह मुंड उसके पास पहुंच चुका था .....
जो सीधे उसके सीने से जा टकराया !
जमुना के पूरे शरीर में आग लग गई और वह झुलस कर वहीं मृत्यु को प्राप्त हो गई ...
उसका शव जलकर काला पड़ गया था, उसे देख कर ऐसा लगता था जैसे उसके ऊपर आसमानी बिजली गिर गई हो ।

अगले दिन गांव वालों को उसका जला हुआ शव प्राप्त हुआ और उसे आसमानी बिजली का शिकार मान लिया गया ।
हां !

कुछ गांव वालों को उसके ऊपर संदेह जरूर था ! जो वे दबी जबान में अफवाहों के रूप में इधर-उधर बताते रहे लेकिन वास्तव में क्या घटा था यह केवल जमुना जानती थी ...

वह जंगल क्यों गई ?

यह उसके अलावा सिर्फ चार लोग जानते थे !

सुखबती,नीला, वृंदा और रमेश !!

यह चारों अपनी जुबान पर ताला लगा कर रखे हुए थे क्योंकि कुछ भी कहने का मतलब था अपने प्राण को संकट में डालना ....

जमुना के इस प्रकार के भयानक अंत का सदमा सुखबती के ऊपर पड़ा और उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया और ट्रेन की चपेट में आने से उसकी मौत हो गई ।

नीला की नाक से खून का बहना दो दिन तक जारी रहा .....

आखिर में उसे अस्पताल में एडमिट कराया गया । जहां डॉक्टरों ने बताया कि उसके सिर में अंदरूनी चोट लगी है । जिसमें से खून का रिसाव हो रहा है । बहुत सारा खून

मस्तिष्क के इर्द-गिर्द भी जमा हो गया है । ऐसी स्थिति में ऑपरेशन ही एकमात्र उपाय है । उसमें भी बचने की संभावना 50% ही बची । परिवार वालों ने काफी सोच विचार करके ऑपरेशन करवा लिया ।
ऑपरेशन के तीसरे दिन से खून का बहना बंद हो गया । जिससे डॉक्टर भी काफी प्रसन्न हुए कि उन्होंने मरीज की जान बचा ली.....

लेकिन.....
लगभग एक माह के बाद फिर से नाक से खून आने लगा और दूसरे दिन उसकी मौत हो गई ।

वृंदा इन सारी घटनाओं को अपनी आंखों से देख चुकी थी ...
जिसकी वजह से वह डिप्रेशन में चली गई !
उसकी स्थिति लगातार बिगड़ती चली गई और उसे मानसिक चिकित्सालय में भर्ती करा दिया गया !
लगभग 6 महीने के इलाज के बाद वह काफी हद तक ठीक हो गई और उसे रमेश वापस घर ले आया !
साल भर तक सब ठीक-ठाक रहा .....

फिर एक दिन अचानक उनके घर में आग लग गई । जिसमें वृंदा रमेश और उनकी बच्ची तीनों जलकर मर गए । बाद में जांच में यह पता चला की सिलेंडर के पाइप को खोल दिया गया था ....
उसे किसने खोला ?
और क्यों खोला ?
यह रहस्य कभी नहीं खुल पाया ।

जमुना के मरने के साथ ही जटाशंकर के ऊपर जो प्रयोग हुआ था वह भी धीरे-धीरे शांत होने लगा ।
मैंने वैशाली को उसके नाम से सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र जाप करने के लिए कहा जो उसने पूरी श्रद्धा के साथ 15 दिन में पूरा कर लिया ....

उन पंद्रह दिनों में जटाशंकर की हालत काफी सुधर गई और उसे वापस घर ले आए । महीने भर के बाद उसे होश आ गया ।

जटाशंकर की मां और वैशाली ने इस दौरान जटाशंकर की भरपूर सेवा की । जटाशंकर की मां वैशाली के सेवा भाव से बहुत ज्यादा प्रभावित थी और एक दिन

उन्होंने जटाशंकर के सामने अपने मन की बात कह दी । जटाशंकर भी वैशाली की सेवा टहल से अभिभूत था.....

फिर भी उसने सौजन्यवश मुझसे राय ली ।

अब मैं उसे क्या बताता कि यह तो भगवान शिव की इच्छा है कि वे दोनों साथ रहे...
मैंने इसे एक अच्छा रिश्ता बताया और वैशाली को सर्वथा उसके अनुकूल बताया ।
जो भी हो !
दोनों लोग राजी थे !
जटाशंकर ने मुझसे विवाह कराने के लिए कहा , और जिद कर बैठा कि विवाह मुझे ही संपन्न कराना पड़ेगा .....
दोस्त था ! जिद करने का हक था ...

मैं ठहरा अघोरी ! अब गृहस्थ व्यक्ति का विवाह कराने के लिए जो संस्कारों की जानकारी होनी चाहिए वह तो मुझे नहीं थी । इसलिए मैं इससे बचने की भरपूर कोशिश करता रहा !

मैंने उसे स्पष्ट कहा - मुझे इस सब की जानकारी नहीं है ।

जटाशंकर बोला - तू जैसा विवाह करा देगा ! हम उसे ही विवाह मान लेंगे ।

मैंने अपनी तरफ से उसे काफी समझाया । लेकिन काफी समझाने के बाद भी नहीं माना तो मुझे हामी भरनी पड़ी ...

उसकी शादी के पहले 16 संस्कारों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया तो पता चला कि सनातन धर्म में जीवन के सोलह संस्कार माने गए हैं । वह हैं :-

1. गर्भाधान
2. पुंसवन
3. सीमन्तोन्नयन
4. जातकर्म
5. नामकरण
6. निष्क्रमण
7. अन्नप्राशन
8. चूड़ाकर्म
9. विद्यारम्भ
10. कर्णवेध

11. यज्ञोपवीत
12. वेदारम्भ
13. केशान्त
14. समावर्तन
15. विवाह
16. अन्त्येष्टि

गर्भाधान

हमारे शास्त्रों में मान्य सोलह संस्कारों में गर्भाधान पहला है। गृहस्थ जीवन में प्रवेश के उपरान्त प्रथम कर्त्तव्य के रूप में इस संस्कार को मान्यता दी गई है। उत्तम संतति की इच्छा रखनेवाले माता-पिता को गर्भाधान से पूर्व अपने तन और मन की पवित्रता के लिये यह संस्कार करना चाहिए।

यदि वर्तमान समय के हिसाब से इसकी व्याख्या करूं तो जब आप संतान उत्पत्ति के लिए सहवास में लिप्त हो उस समय आपके मन में एक इच्छा और विचार होना चाहिए कि मेरे इस सहवास से एक श्रेष्ठ और पवित्र आत्मा मेरे घर में पुत्र के रूप में या पुत्री के रूप में जन्म ले ....

पुंसवन

गर्भस्थ शिशु के मानसिक विकास की दृष्टि से यह संस्कार उपयोगी समझा जाता है। गर्भाधान के दूसरे या तीसरे महीने में इस संस्कार को करने का विधान है। पुंसवन संस्कार का प्रयोजन स्वस्थ एवं उत्तम संतति को जन्म देना है।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के अंदर कई प्रकार के ऐसे यंत्र हैं जो गर्भस्थ शिशु के विकास और उसके अंदर हो रहे बदलावों की स्पष्ट सूचना देने में समर्थ है । इसके अनुसार 3 माह की अवधि में गर्भस्थ शिशु के सारे अंग बन चुके होते हैं । यहां तक कि वह अंगूठा चूसना और हिचकियां लेना भी प्रारंभ कर देता है ।
हमारे मनीषियों के अनुसार यह समय वह होता है जब शिशु के अंदर चेतना का प्रादुर्भाव हो जाता है । वह किसी भी प्रकार के ज्ञान को लेने में सक्षम हो जाता है । इसका एक उदाहरण हम महाभारत के अभिमन्यु वाले प्रसंग में देखते हैं । जिसमें गर्भस्थ अभिमन्यु को चक्रव्यूह का ज्ञान उसकी गर्भावस्था में ही अर्जुन ने दिया था .....

यदि गर्भस्थ शिशु की माता कुछ पढ़ती या सीखनी है तो गर्भस्थ शिशु के अंदर उसका प्रभाव पड़ता है । वह ज्यादा बुद्धिमान पैदा होता है । यदि माता ऐसा करने में अक्षम है तो पिता उसकी बगल में बैठकर शिशु को सुनाने के अंदाज में ज्ञानवर्धक बातें कथाएं आदि सुना सकता है । उसे ज्यादा प्रबुद्ध बना सकता है ।

सीमन्तोन्नयन

सीमन्तोन्नयन को सीमन्तकरण अथवा सीमन्त संस्कार भी कहते हैं । सीमन्तोन्नयन का अभिप्राय है सौभाग्य संपन्न होना । गर्भपात रोकने के साथ-साथ गर्भस्थ शिशु एवं उसकी माता की रक्षा करना भी इस संस्कार का मुख्य उद्देश्य है। इस संस्कार के माध्यम से गर्भिणी स्त्री का मन प्रसन्न रखने के लिये सौभाग्यवती स्त्रियां गर्भवती की मांग भरती हैं। यह संस्कार गर्भ धारण के छठे अथवा आठवें महीने में होता है।

इसे आप गोद भराई की रस्म का वास्तविक रूप समझ सकते हैं । जो माताएं या सौभाग्यशाली स्त्रियां होती है । उनके अंदर दैवी तत्व जागृत होता है क्योंकि उन्होंने एक शिशु को जन्म दिया है । इसलिए ऐसे अवसर

पर नई माता को वह अपने उस दैवीय तत्वों के द्वारा आशीर्वाद प्रदान करती हैं कि वह भी एक उच्च कोटि की माता बने । उसके गर्भ से एक श्रेष्ठ शिशु का जन्म हो ऐसी मंगल कामना करने के लिए यह संस्कार करने का विधान है । आज के परिवेश में इसकी मूल भावना कहीं गुम हो गई है और दिखावा ज्यादा हो गया है ।

जातकर्म

नवजात शिशु के नालच्छेदन से पूर्व इस संस्कार को करने का विधान है। इस दैवी जगत् से प्रत्यक्ष सम्पर्क में आनेवाले बालक को मेधा, बल एवं दीर्घायु के लिये स्वर्ण खण्ड से मधु एवं घृत वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ चटाया जाता है। यह संस्कार विशेष मन्त्रों एवं विधि से किया जाता है। दो बूंद घी तथा छह बूंद शहद का सम्मिश्रण अभिमंत्रित कर चटाने के बाद पिता यज्ञ करता है तथा शिशु के बुद्धिमान, बलवान, स्वस्थ एवं दीर्घजीवी होने की प्रार्थना करता है। इसके बाद माता बालक को स्तनपान कराती है।

वर्तमान परिवेश में अगर आप देखें तो यह होना लगभग असंभव है ! क्योंकि अधिकांश बच्चे अस्पताल में पैदा

होते हैं ! पैदा होने के साथ ही उनकी नाल काट कर बच्चे को माता को सौंप दिया जाता है । ऐसी स्थिति में आप शिशु के जन्म के साथ उसके नाम से पूजन या हवन संपन्न करवा सकते हैं ।

नामकरण

जन्म के ग्यारहवें दिन यह संस्कार होता है । हमारे धर्माचार्यो ने जन्म के दस दिन तक अशौच (सूतक) माना है । इसलिये यह संस्कार ग्यारहवें दिन करने का विधान है । महर्षि याज्ञवल्क्य का भी यही मत है, लेकिन अनेक कर्मकाण्डी विद्वान इस संस्कार को शुभ नक्षत्र अथवा शुभ दिन में करना उचित मानते हैं । कई परिवारों में ज्योतिष के आधार पर निकले हुए जन्माक्षर को आधार बनाकर नाम रखा जाता है । किसी भी बच्चे का या व्यक्ति का नाम उसके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण भाग होता है क्योंकि उसी से उसकी पहचान होती है । उस लिहाज से देखें तो यह एक महत्वपूर्ण संस्कार है ।

मेरे विचार में जब आप अपने बच्चे का नाम रखें तो ऐसा नाम रखें ! जिसका कुछ सकारात्मक अर्थ निकलता हो

। इसके लिए आप गूगल सर्च के द्वारा हजारों नामों में से अपने बच्चे के लिए नाम ढूंढ सकते हैं ।

निष्क्रमण

दैवी जगत् से शिशु की प्रगाढ़ता बढ़े तथा ब्रह्माजी की सृष्टि से वह अच्छी तरह परिचित होकर दीर्घकाल तक धर्म और मर्यादा की रक्षा करते हुए इस लोक का भोग करे, यही इस संस्कार का मुख्य उद्देश्य है ।

निष्क्रमण का अभिप्राय है बाहर निकलना।

इस संस्कार में शिशु को सूर्य तथा चन्द्रमा की ज्योति दिखाने का विधान है। भगवान् भास्कर के तेज तथा चन्द्रमा की शीतलता से शिशु को अवगत कराना ही इसका उद्देश्य है।

इसके पीछे मनीषियों की शिशु को तेजस्वी तथा विनम्र बनाने की परिकल्पना होगी। उस दिन देवी-देवताओं के दर्शन तथा उनसे शिशु के दीर्घ एवं यशस्वी जीवन के लिये आशीर्वाद ग्रहण किया जाता है।

जन्म के चौथे महीने इस संस्कार को करने का विधान है । तीन माह तक शिशु का शरीर बाहरी वातावरण यथा तेज धूप, तेज हवा आदि के अनुकूल नहीं होता है

। इसलिये प्राय: तीन मास तक उसे बहुत सावधानी से घर में रखना चाहिए । इसके बाद धीरे-धीरे उसे बाहरी वातावरण के संपर्क में आने देना चाहिए। इस संस्कार का तात्पर्य यही है कि शिशु समाज के सम्पर्क में आकर सामाजिक परिस्थितियों से अवगत हो।

अभी भी हम इस नियम का सामान्यत: पालन करते हैं । अधिकांश शिशुओं को दो-तीन महीने तक घर के अंदर ही रखा जाता है ताकि उसको किसी प्रकार का इन्फेक्शन आदि ना हो । इस दौरान उसे मां का दूध पिलाया जाता है ! असामान्य परिस्थितियों की बात अलग है ! लेकिन प्रयास यही किया जाता है कि वह माता के दूध से पोषित हो और उसके अंदर का इम्यून सिस्टम एक्टिव हो जाए । जब यह हो जाता है तब उसे हम धीरे-धीरे बाहर निकालते हैं ।

थोड़ी देर के लिए धूप दिखाना !

सुबह की हल्की धूप में !

थोड़ी देर के लिए घुमाना !

यह सब क्रियाएं उसे समाज से और परिवेश से धीरे-धीरे मिलाने की प्रक्रिया का एक हिस्सा है ...

अन्नप्राशन

अन्न = भोजन , प्राशन = खिलाना

अन्नप्राशन का अर्थ है अन्न खिलाना !

इसका उद्देश्य है शिशु जो अब तक पेय पदार्थों विशेषकर दूध पर आधारित था । अब अन्न ग्रहण कर शारीरिक व मानसिक रूप से अपने को बलवान व प्रबुद्ध बनाए।

तन और मन को सुदृढ़ बनाने में अन्न का सर्वाधिक योगदान है। पौष्टिक आहार से ही तन स्वस्थ रहता है । इसलिये इस संस्कार का हमारे जीवन में विशेष महत्व है।

सनातन धर्म में अन्नप्राशन के लिये जन्म से छठे महीने को उपयुक्त माना गया है । छठे मास में शुभ नक्षत्र एवं शुभ दिन देखकर यह संस्कार करना चाहिए। खीर और मिठाई से शिशु के अन्नग्रहण को शुभ माना गया है।

कहा गया है कि :-

"अमृत: क्षीरभोजनम्"

खीर को ग्रहण करने को अमृत के समान उत्तम माना गया है । इसीलिए शरद पूर्णिमा की रात जब ऐसा

माना जाता है कि चंद्रमा से अमृत वर्षा होती है खीर ही बनाई जाती है ।

नन्हे शिशु को भोजन के प्रारंभ के रूप में खीर देकर उसे अमृत प्रदान करने की भावना की जाती है ! ताकि वह पुष्ट हो और भोजन में से अमृत तत्व को निकालने की कला से संपन्न हो सके ! उस अमृत के द्वारा अपने शरीर को पुष्ट और शक्ति संपन्न बना सके ।

समुद्र मंथन से निकले हुए अमृत के विषय में हम बहुत चर्चा करते हैं या सोचते हैं लेकिन अभी इस विषय पर विचार नहीं करते कि हमारे शरीर में भी अमृत बनता है । जो कुछ भी हम खाते हैं उसके अंदर का अमृत तत्व निकालने के बाद शरीर उसे मल में परिवर्तित कर देता है । उसमें से निकला हुआ अमृत ही हमारे शरीर को पोषण प्रदान करता है और हम मृत से अमृत अर्थात जिंदा रह पाते हैं ।
यूं समझिए कि हमारे शरीर में सदैव एक समुद्र मंथन चलता रहता है । जिसमें से निकला हुआ अमृत हमें जीवित रहने की क्षमता प्रदान करता है ।

चूड़ाकर्म

माना जाता है कि चंद्रमा से अमृत वर्षा होती है खीर ही बनाई जाती है ।

नन्हे शिशु को भोजन के प्रारंभ के रूप में खीर देकर उसे अमृत प्रदान करने की भावना की जाती है ! ताकि वह पुष्ट हो और भोजन में से अमृत तत्व को निकालने की कला से संपन्न हो सके ! उस अमृत के द्वारा अपने शरीर को पुष्ट और शक्ति संपन्न बना सके ।

समुद्र मंथन से निकले हुए अमृत के विषय में हम बहुत चर्चा करते हैं या सोचते हैं लेकिन अभी इस विषय पर विचार नहीं करते कि हमारे शरीर में भी अमृत बनता है । जो कुछ भी हम खाते हैं उसके अंदर का अमृत तत्व निकालने के बाद शरीर उसे मल में परिवर्तित कर देता है । उसमें से निकला हुआ अमृत ही हमारे शरीर को पोषण प्रदान करता है और हम मृत से अमृत अर्थात जिंदा रह पाते हैं ।
यूं समझिए कि हमारे शरीर में सदैव एक समुद्र मंथन चलता रहता है । जिसमें से निकला हुआ अमृत हमें जीवित रहने की क्षमता प्रदान करता है ।

चूड़ाकर्म

चूड़ाकर्म को मुंडन संस्कार भी कहा जाता है। हमारे आचार्यों ने बालक के पहले, तीसरे या पांचवें वर्ष में इस संस्कार को करने का विधान बताया है। इस संस्कार के पीछे शुचिता और बौद्धिक विकास की परिकल्पना हमारे मनीषियों के मन में होगी। मुंडन संस्कार का अभिप्राय जन्म के समय उत्पन्न बालों को हटाकर बालक को प्रखर बनाना है।

विद्यारम्भ

विद्यारम्भ का अभिप्राय बालक को शिक्षा के प्रारम्भिक स्तर से परिचित कराना है । प्राचीन काल में जब गुरुकुल की परम्परा थी तो बालक को वेदाध्ययन के लिये भेजने से पहले घर में अक्षर बोध कराया जाता था । माँ-बाप तथा गुरुजन पहले उसे मौखिक रूप से श्लोक, पौराणिक कथायें आदि का अभ्यास करा दिया करते थे ताकि गुरुकुल में कठिनाई न हो ।

शास्त्र की उक्ति है :-

"सा विद्या या विमुक्तये"

अर्थात् विद्या वही है ! जो मुक्ति दिला सके ।

विद्या अथवा ज्ञान ही मनुष्य की आत्मिक उन्नति का साधन है। वर्तमान दृष्टिकोण से देखें तो संपूर्ण व्यवस्था ही विद्या या शिक्षा पर निर्भर है। शिक्षा व्यवस्था का बाजारीकरण तो हो गया है लेकिन फिर भी शिक्षा महत्वपूर्ण तो है ही ....

शुभ मुहूर्त में ही विद्यारम्भ संस्कार करना चाहिये। इसके लिए वसंत पंचमी तथा विजयादशमी दो विशिष्ट मुहूर्त है। इसके अलावा भी किसी अच्छे मुहूर्त में बच्चों का विद्यारंभ किया जा सकता है।

इसके लिए केसर या चंदन से बच्चे के जीभ पर सरस्वती बीज मंत्र "ऐं" का अंकन करके उसके बाद उसे अक्षरों का ज्ञान कराया जाता है।

कर्णवेध

कर्णवेध या कान छेदने के संस्कार में बालक की शारीरिक व्याधि से रक्षा ही इस संस्कार का मूल उद्देश्य है। प्रकृति प्रदत्त इस शरीर के सारे अंग महत्वपूर्ण हैं। कान हमारे श्रवण अंग हैं। कर्ण वेधन से व्याधियां दूर होती हैं तथा श्रवण शक्ति भी बढ़ती है।

अस्थमा जैसे रोगों की रोकथाम के लिए कई वैद्य कान छेदने जैसे प्रयोग करते हैं । जिसमें कई लोगों को लाभ होता है । संभवत इसी प्रकार के लाभ के लिए कर्णवेध संस्कार की व्यवस्था की गई होगी ।

वर्तमान समय में कई लोग अपने कान छेद वाकर उसमें विभिन्न प्रकार के आभूषण धारण करते हैं । इसमें लड़कियों और स्त्रियों के साथ-साथ लड़के और लगभग सभी आयु के पुरुष भी शामिल हैं । कानों में आभूषण हमारे सौन्दर्य बोध का परिचायक भी है।

यज्ञोपवीत

जनेऊ तीन सफेद रंग के धागों से बना होता है । इसे यज्ञोपवीत भी कहते हैं । यज्ञोपवीत अथवा उपनयन बौद्धिक विकास के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार है। क्योंकि इसके बाद ही बालक शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाता है ।

यज्ञोपवीत धरण करने के मंत्र में ही इसके महत्व का वर्णन किया गया है :-

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेज़: ।।

यज्ञोपवीत (के सूत्र) अत्यन्त पवित्र हैं , (यत्)
जो (पुरस्तात्) आदिकाल से (प्रजापते: सहजं)
प्रजापति / सृष्टा के साथ जन्मा है ।
वह (आयुष्यं) दीर्घायु को देने वाला (अग्र्यं)आगे ले
जाने वाला (प्रतिमुंच) बंधनों से छुड़ाए ।
ऐसा (यज्ञोपवीतं) यज्ञोपवीत (शुभ्रं) शुभ्रता अर्थात्
चरित्र की उज्ज्वलता या पवित्रता (बलं) शक्ति और
(तेज़) तेजस्विता वाला हो ।
अर्थात् इन गुणों को प्रदान करने वाला होवे ।

सरल शब्दों मे ----
ऐसी मान्यता है कि प्रजापति अर्थात् सृष्टा के साथ ही
यज्ञ का प्रादुर्भाव हुआ उसी के साथ यज्ञोपवीत का भी
आविर्भाव हुआ । अर्थात् आदिकाल से यज्ञोपवीत ब्रह्मा
का सहजात है , और इसलिये अत्यन्त पवित्र है ।

ये यज्ञोपवीत दीर्घायु , उज्ज्वल चरित्र , शक्ति और
तेजयुक्त हो ।

आगे ले जाने से तात्पर्य है कि उत्कर्ष की ओर ले जाने वाला हो । तभी तो उस यज्ञोपवीत को धारण करने वाला इन गुणों को प्राप्त कर सकेगा ।
यहाँ "बल" को त्रिविध बल अर्थात् मानसिक , शारीरिक और आध्यात्मिक बल प्रदान करने वाला हो । अभिप्राय ये है कि बालक के लिये यज्ञोपवीत इन सभी उपरिलिखित गुणों के साथ सिद्ध होकर, उसे भी ये गुण प्रदान करे । यज्ञोपवीत संस्कार को करने का यही मूल उद्देश्य था । कालांतर में गुरुकुल परंपरा के समाप्त होने के साथ यज्ञोपवीत संस्कार भी धीरे-धीरे समाप्त होता चला जा रहा है । केवल विवाह के पहले एक अनिवार्य रस्म अदायगी के रूप में कुछ लोग उसका पालन अवश्य करते हैं । यह केवल रस्म अदायगी है यज्ञोपवीत संस्कार का मूल उद्देश्य उससे पूरा नहीं होता है ।

प्राचीन काल में जब गुरुकुल की परम्परा थी । उस समय प्राय: आठ वर्ष की उम्र में यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हो जाता था। इसके बाद बालक विशेष अध्ययन के लिये गुरुकुल जाता था।

वेदारम्भ

इसे आप एक प्रकार से ज्ञान प्राप्ति का आरंभ भी कह सकते हैं...

ज्ञानार्जन से सम्बन्धित है यह संस्कार।

वेद का अर्थ होता है ज्ञान !

यज्ञोपवीत के बाद बालकों को वेदों का अध्ययन एवं विशिष्ट ज्ञान से परिचित होने के लिये योग्य आचार्यों के पास गुरुकुलों में भेजा जाता था । वेदारम्भ से पहले आचार्य अपने शिष्यों को ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने एवं संयमित जीवन जीने की प्रतिज्ञा कराते थे तथा उसकी परीक्षा लेने के बाद ही वेदाध्ययन कराते थे । इस दौरान ब्रह्मचारी विभिन्न प्रकार के शास्त्रों वेद तथा अन्य विद्याओं का ज्ञान प्राप्त करता था ।

केशान्त

गुरुकुल में वेदाध्ययन पूर्ण कर लेने पर आचार्य के समक्ष यह संस्कार सम्पन्न किया जाता था । वेद-पुराणों एवं विभिन्न विषयों में पारंगत होने के बाद बालों की सफाई की जाती थी ।

इसे एक प्रकार से गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने की तैयारी का संस्कार भी मान सकते हैं । जब ब्रह्मचारी वापस गृहस्थ के रूप में जाने के लिए अपने बाह्य वेश को समाज के अनुरूप बनाता है ।

समावर्तन

गुरुकुल से विदाई लेने से पूर्व शिष्य का समावर्तन संस्कार होता था । इसमें सुगन्धित पदार्थों एवं औषधादि युक्त जल से स्नान करने का विधान है। यह स्नान विशेष मन्त्रोच्चारण के साथ होता था।

इसके बाद ब्रह्मचारी मेखला व दण्ड को छोड़ देता था । जिसे यज्ञोपवीत के समय धारण कराया जाता था । इस संस्कार के बाद उसे विद्या स्नातक की उपाधि आचार्य देते थे।

अब वह गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का अधिकारी हो जाता था। सुन्दर वस्त्र व आभूषण धारण करता था तथा आचार्यों एवं गुरुजनों से आशीर्वाद ग्रहण कर अपने घर के लिये विदा होता था।

विवाह

प्राचीन काल से ही स्त्री और पुरुष दोनों के लिये यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार है । लगभग पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य का व्रत का पालन करने के बाद युवक परिणय सूत्र में बंधता था ।

आज भी कमोबेश यही स्थिति है ! अधिकांश युवक 25-26 वर्ष की अवस्था के बाद ही सेटल होते हैं और विवाह के बारे में प्लानिंग करते हैं । यह अलग बात है कि हमारा जटाशंकर तीस पार कर चुका था ।

विवाह संस्कार के बारे में सभी लोग जानते हैं क्योंकि आज भी यह अपने मूल स्वरूप में विद्यमान हैं और इसके तहत होने वाले पाणिग्रहण कन्यादान और सप्तपदी जैसे प्रक्रम आज भी किए जाते हैं ।

अन्त्येष्टि

जीवन यात्रा का अंतिम चरण होता है मृत्यु !

मृत शरीर को ससम्मान पंचतत्व में विलीन कर देने का संस्कार है !

अंत्येष्टि या अंतिम संस्कार ।

धर्म शास्त्रों की मान्यता है कि मृत शरीर की विधिवत् क्रिया करने से जीव की अतृप्त वासनायें शान्त हो जाती हैं।

हमारे शरीर को पांच तत्वों से बना हुआ माना जाता है । यह पांच तत्व है भूमि,जल,अग्नि,वायु और आकाश ! इन पांच तत्वों से बने हुए शरीर को समुचित क्रिया कर्मों के बाद उन्ही पांच तत्व में विलीन कर देने की प्रक्रिया है अंतिम संस्कार ।

भौतिक देह का परित्याग करने के बाद भी आत्मा उसके इर्द-गिर्द मंडराती रहती है ! जैसे ही उसकी भौतिक देह वापस पंचतत्व में विलीन हो जाती है आत्मा भी अपने अपने कर्मों के अनुसार संबंधित लोक को प्रस्थान कर जाती है, ऐसा माना जाता है ....

तो जटाशंकर के विवाह के चक्कर में मैंने इतना सारा ज्ञान हासिल किया और उसके बाद विवाह संस्कार की एक किताब भी मैंने खोज निकाली ।

कुछ महीने के बाद जटाशंकर जब पूरी तरह से स्वस्थ हो गया तो विवाह के लिए मुहूर्त निकालने की बारी आई ।

मैंने सोचा कि दो शिव भक्तों के लिए विवाह का मुहूर्त स्वयं जगद्गुरु भगवान शिव के विवाह मुहूर्त शिवरात्रि से बेहतर क्या होगा ?

मैंने उनको शिवरात्रि के अवसर पर विवाह का सुझाव दिया ।

जिसे दोनों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया ....

अगली शिवरात्रि के दिन वैशाली और जटाशंकर का विवाह संपन्न हो गया।

------समाप्त------

अन्य रचनाएँ :-

- तांत्रिक अघोरानंद ।
- अघोरानंद की अप्सरा ।
- अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
- अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
- अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
- अघोरानंद और छाया की माया ।
- अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
- अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
- अघोरानंद और भैरवम भीषणम ।
- अघोरानंद और बौनों की बस्ती ।
- अघोरानंद और पशुपतिनाथ की बोक्सी ।
- अघोरानंद और दतिया पीठ का चमत्कार ।
- परेतिन की शादी ।